मुद्रक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – १४
प्रकाशक
मगनभाई प्रभुदास देसाई
गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद – १४

पहली वार, प्रति ५०००
दूसरी वार, प्रति ५०००
तीसरी वार, प्रति १००००

डेढ़ रुपया

अक्तूबर, १९५४

निवेदन

हिन्दी वहुत समय तक आंतरप्रांतीय व्यवहारकी भापा रही है। १८ वीं सदी तक वहुतसे अ-हिन्दी भाषाभाषी लोगोंने हिन्दीमें काव्य लिखे। मगर अंग्रेज़ोंके प्रभावके कारण १८ वीं सदीमें हिन्दीका यह स्थान जाता रहा और उसकी प्रतिष्ठा भी कम हो गई। गांधीजीने फिरसे हिन्दीकी पुरानी हैसियतको लोगोंको वताया और उसे देशकी राष्ट्रभाषा वनानेके लिये सर्वग्राह्य वनानेका खूव प्रयत्न किया।

आखिरकार विधान-सभाने गांधीजीके इस प्रयत्नको अपनाते हुए एक वड़े महत्त्वका प्रस्ताव पास किया और देशको इस काममें 'लीड' दी। तय किया कि भारतकी राजभापा होगी तो हिन्दुस्तानी, मगर उसका नाम हिन्दी रहेगा। और लिपि होगी नागरी। और इसको इतना सर्वग्राह्य वनाया कि इसे परिपूर्ण वनानेमें देशकी वड़ी-वड़ी १४ भापाएँ भी अपना योग दे सकें।

यह कार्य तव ही पूरा हो सकता है कि जव अ-हिन्दी भापा-भापी पहलेकी तरह हिन्दीमें लिखना शुरू कर दें। हमने इस संग्रहको इसी दृष्टिसे तैयार किया है। इसमें अ-हिन्दी भापाभापी लेखकोंके लेख और कवियोंकी कवितायें भी ली गई हैं। हम गुजरातके देश-प्रेमी भाई-वहनोंसे निवेदन करना चाहते हैं कि वे हिन्दीमें लिखना शुरु कर दें कि जिसमें 'गुजरात' अपना हिस्सा राजभापाको वनानेमें दे सके।

इस पाठावलीके पाठोंके चुनने और तैयार करनेमें वहुतसे हिन्दी-प्रेमी प्रचारकोंकी मदद मिली है। उन सवका हम आभार मानते

है। यह पाठावली शायद तैयार ही न हो सकती अगर लेखक और कवि अपनी-अपनी कृतियोंको हमें लेनेकी आज्ञा न देते। हम इन सबके बड़े आभारी हैं।

गूजरात विद्यापीठ,
अहमदाबाद
ता० ७–७–१९५२

गिरिराजकिशोर
नानुभाई बारोट

दूसरी बार

यह किताब दूसरी बार छप रही है। इस वक्त विद्यार्थियोंकी सुविधाको देखकर कठिन शब्दार्थमें बहुतसे नये शब्दोंके अर्थ दे दिये गये हैं।

ता० ७–८–१९५३

संपादक

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ
निवेदन		३

गद्य-विभाग

१. मुझसे सब अच्छे	श्री घनश्यामदास बिड़ला	१
२. मौतके मुँहमें	पं० श्रीराम शर्मा	७
३. बापू	पं० जवाहरलाल नेहरू	२१
४. बड़े घरकी बेटी	मुंशी प्रेमचंद	२६
५. तुलसीदासजी	महात्मा गांधी	३९
६. फ़ायदा क्या है?	आचार्य विनोबा भावे	४३
७. सरोजिनी नायडू	श्री नानुभाई बारोट	४८
८. शिवाजीका सच्चा स्वरूप	सेठ गोविंददास	५६
९. मज़हबी रिवाजोंकी परख	श्री किशोरलाल घ० मशरूवाला	६२
१०. वह सीख	श्री प्रभुदास गांधी	६६
११. सत्ययुग और कलियुग	श्री जनक दवे	७०
१२. लाटरीका टिकट	शौक़त थानवी	७४
१३. मज़हब और साइन्स	पं० सुन्दरलाल	९०
१४. जब किसान गाता है	श्री देवेन्द्र सत्यार्थी	९८
१५. चचा छक्कनने सबके लिये केले खरीदे	श्री इम्त्याज़अली ताज	१०८
१६. हिन्दूकुशकी सैर	श्री अख्तरहुसेन रायपुरी	११९

पद्य-विभाग

१. सूर संग्रामको देख भागै नहीं	कबीर	१३७
२. मन न रँगाये, रँगाये जोगी कपरा	"	१३८
३. वृक्षनसे मत ले	सूरदास	१३९
४. निर्बलके बल राम	"	१४०
५. रे मन मूरख जनम गँवायो	"	१४०
६. नहीं ऐसो जनम बारम्बार	मीराबाई	१४१
७. दरसन दीज्यो	"	१४२

८.	नाम-महिमा	नामदेव	१४२
९.	गुरु कृपांजन पायो मेरे भाई	एकनाथ	१४४
१०.	विजय-रथ	तुलसीदास	१४५
११.	केवट-प्रसंग	"	१४६
१२.	दोहे	रहीम	१४८
१३.	श्याम रंगीले साँवरे	ब्रह्मानंद	१४९
१४.	जाकु रंग न लाग्यो रामको	छोटम	१५०
१५.	अगर है शौक़ मिलनेका	मंसूर	१५१
१६.	एक तिनका	अयोध्यासिंह उपाध्याय	१५२
१७.	एक बूंद	" "	१५३
१८.	निशा-निमंत्रण	हरिवंशराय 'बच्चन'	१५४
१९.	आशे !	" "	१५५
२०.	नया शिवाला	इक़बाल	१५६
२१.	सुखमें याद भले कर उसकी	श्रीमन्नारायण अग्रवाल	१५८
२२.	तत्त्वसार तो विरले जाने	" "	१५९
२३.	बंजारा	भाई तनवीर नक़वी	१६०
२४.	दर्दकी दवा क्या है ?	ग़ालिब	१६२
२५.	रे मन आज परीक्षा तेरी	श्री मैथिलीशरण गुप्त	१६३
२६.	चित्रकूट	" "	१६५
२७.	संकेत	डॉ० रामकुमार वर्मा	१६७
२८.	दिये तरे अँधेरा	भाई स्वामी मारहरवी	१६८
२९.	प्रेम-संगीत	श्री भगवतीचरण वर्मा	१७०
३०.	खुला आसमान	श्री 'निराला'	१७२
३१.	क्या गाऊँ ?	" "	१७३
३२.	चीऊँटेसे नसीहत	मौलाना हाली	१७४
३३.	काले बादल	श्री सुमित्रानंदन पंत	१७५
३४.	ग्रामीण	" "	१७७
३५.	विप्लव-गान	श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	१७९
३६.	आरज़ू	श्री आरज़ू लखनवी	१८०
	कठिन शब्दार्थ		१८२

हिन्दी पाठावली

गद्य–विभाग

१

मुझसे सब अच्छे

[श्री घनश्यामदास बिड़ला]

[आप पिलानी, राजस्थानके रहनेवाले हैं। आपने लिखा तो बहुत कम है, मगर जितना भी लिखा है उससे पता चलता है कि आपकी भाषामें अजीब शक्ति और रोचकता है। 'मुझसे सब अच्छे' में मनुष्यके अभिमानका चित्र कैसा सुन्दर और असर करनेवाला है! आप जिस विषयको लेते हैं, उसके हर पहलू पर रोशनी डालते हैं और पाठकोंको उसके समझनेमें भारी मदद देते हैं। 'डायरीके कुछ पन्ने' में आपने बड़े रोचक ढंगसे पाठकोंको बता दिया कि राउण्ड टेबुल कान्फरेन्सके समय देशके सामने क्या समस्या थी और उसका क्या हल था।

आपकी शैली स्वाभाविक, सरल, मगर पुरअसर है। 'बापू' और 'डायरीके कुछ पन्ने' आपकी मशहूर पुस्तकें हैं। आप बड़े उद्योगपति हैं और गांधीजीके असरमें आनेसे हरिजन-प्रवृत्तिमें भी दिलचस्पी रखते हैं।]

मुझे सवेरे टहलनेकी आदत है। प्रातःकालकी शुद्ध हवा मनुष्योंको नया जीवन दे देती है। जब जब मैं घर पर रहता हूँ, सबेरेका भ्रमण एक प्रकारका नियम-सा हो गया है। एक रोज़ सवेरे टहलने निकला तो वायुकी परमार्थ-वृत्ति पर विचार करने लगा।

पश्चिमी हवा चल रही थी। मैंने सोचा, यह वायु कितने परिश्रमके बाद यहाँ पहुँची होगी! कहाँसे चली, कितना उपकार

किया, इसका अन्दाज़ कौन लगावे? भारतका पश्चिमी सागर यहाँसे क़रीव ६०० मील होगा; किन्तु इसके आगे अफ्रीका तक केवल निर्जन समुद्र ही समुद्र है। संभवत: उससे भी पश्चिम और पश्चिमतरके प्रदेशोंसे पहाड़ियों, नदियों, समुद्रों, मनुष्यों व जीव-जन्तुओंको जीवन देती हुई यह वायु यहाँ पहुँची होगी; और अव यहाँके लोगोंको सुख देती हुई अपने कर्तव्य-पालनके लिये शान्तभावसे पूर्व प्रदेशोंकी ओर अग्रसर होगी।

मैंने सोचा, यह हवा इतनी सेवा करती है फिर भी अख़वारोंमें इसकी चर्चा क्यों नहीं होती? हवासे मैंने कहा—"हवा! तुम संसारका इतना उपकार करती हो; किन्तु तुम्हारी सेवाकी खवर मैं अख़वारोंमें तो कहीं नहीं पढ़ता। तुमको चाहिये कि जो थोड़ी-सी वात करो, उसको वढ़ा-चढ़ाके अख़वारोंमें छपा दिया करो।" हवाने कहा—"कौनसा अख़वार अच्छा है?" मैंने कहा—"हिन्दी-अंग्रेज़ीके वहुतसे अख़वार हैं। सभीमें अपनी प्रशंसा छपाया करो।" हवाने पूछा, "क्या सूर्यलोक एवं चन्द्रलोकमें भी तुम्हारे यहाँके अख़वार जाते हैं?" मैंने कहा—"वहाँ तो नहीं जाते।"

हवाने मेरी मूर्खता पर हँस दिया और कहा—"तुम पक्के कूपमंडूक हो, तुम्हारे लिये थोड़ेसे लोग ही व्रह्माण्ड हैं। मैंने तो प्राणीमात्रकी सेवाका व्रत ले रखा है, और मेरा अख़वार है मेरे ईश्वरका हृदय। वहाँ सव ख़वरें अपने आप पहुँचती हैं—भली-वुरी सभी वातें वहाँ छपती रहती हैं। किसी वातका वहाँ पक्षपात नहीं। किसीके कहनेसे वहाँ कोई ख़वर नहीं छपती है। सच्ची ख़वरें वहाँ स्वयं छप जाती हैं। मैं तुम्हारी तरह मूर्ख नहीं कि विज्ञापनवाज़ीके दल-दलमें फँस जाऊँ। नि:स्वार्थ भावसे चुपचाप प्राणीमात्रकी सेवा करना, यही मेरा धर्म है और मेरे स्वामीको भी यही प्रिय है। अच्छा हो तुम भी मेरा अनुकरण करो।"

हवाकी यह स्पष्टोक्ति मुझे बड़ी बुरी लगी। मैं और हवा जैसी जड़ वस्तुका अनुकरण करूँ? मनमें आया कि एक व्याख्यान ही झाड़ दूँ। अखबारोंमें तो उसका अतिरंजित विवरण छप ही जायगा। किन्तु पवनको तो "लगन लगी पद-पावनकी", उसे मेरा व्याख्यान सुननेकी फ़ुरसत कहाँ? वह तो "कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्" गाती हुई शीघ्रतासे चल निकली।

तब मैंने अपना सारा गुस्सा एक ऊँट पर उतार दिया। बात यह हुई कि रास्तेमें एक ऊँट महाशय अपनी थकान उतारनेके लिये हाथ-पाँव पीट-पीटकर धूल उछाल रहे थे। मैंने गर्दसे तंग आकर क्रोधमें ऊँटसे कहा—"तुम बड़े गँवार हो; ज़रा भी तमीज़ नहीं है। पशु ही जो ठहरे। हम लोग जिन रास्तोंसे होकर निकलते हैं, उनमें ग़रीब मनुष्य भी किनारे खड़े होकर झुकके हमें प्रणाम किया करते हैं। हम जब जब टहलने जाते हैं, तब तब हमारे लठैत नौकर रास्तेमें चलनेवालोंका नाकों दम कर देते हैं। तुमने हमें झुककर प्रणाम करना तो दूर रहा, उलटा धूल उछालना शुरू कर दिया; इसीसे मालूम होता है कि तुम गँवार भी हो और धृष्ट भी।"

इस पर ऊँटने अपना व्यायाम तो बंद कर दिया, पर मेरी बात सुनकर खिलखिलाकर हँस पड़ा। बोला—"तुम मूर्ख तो हो ही, किन्तु अभिमानी भी हो। अभी तो तुम पवनको उपदेश देनेकी धृष्टता कर रहे थे। पवन तो आदर्श सेवक है, ईश्वर-भक्त है,—उसने तुम्हें कुछ नहीं कहा; किन्तु मुझे उपदेश देनेकी धृष्टता न करना। बस, यह समझ लो कि मुझसे तुम बहुत गये-बीते हो।" मैंने कहा—"ऊँट, तू पशु होकर मनुष्यको उपदेश देने चला है! मुझे तेरी बुद्धि पर तरस आता है।" ऊँटकी मुखाकृति गंभीर हो उठी, आँखोंमें तेज चमकने लगा; अपने नयनोंको फटकारकर उसने कहा—"क्या केवल मनुष्य-देह मिलनेसे ही मनुष्य अपनेको मनुष्य कहनेका

अधिकारी हो जाता है? और उसे मनुष्य-देह मिल गई, इसी वित्ते पर क्या वह अपनेको हम पशुओंसे ऊँचा समझ सकता है? यदि तुम भी ऐसा मानते हो तो तुम्हारी बुद्धिको शत बार धिक्कार है।"

मैं कुछ ठंडा पड़ गया। मैंने कहा—"भाई ऊँट, उन पापी मनुष्योंकी बात न करो। वे तो नर-राक्षस थे। किन्तु मैं ऐसा नहीं हूँ। मैं तो अपने लिये कह सकता हूँ कि अपनी समझमें मैं तुमसे कहीं अच्छा हूँ।" ऊँट फिर हँस पड़ा। कहने लगा—"अच्छा, ज़रा बता तो दो, तुममें मुझसे कौनसी अच्छी बात है?"

मैं सोचने लगा, क्या बताऊँ? आखिर वनके अलावा मुझमें और कौन-सी अच्छी बात है, जिसका मैं गर्व कर सकूँ? अत्यन्त साहस करके मैंने दबी ज़बानसे कहा—"अच्छा तो देखो, तुम जानते हो, मैं त्यागसे कितना प्रेम करता हूँ? सादगीसे रहता हूँ, खादी पहनता हूँ; यह क्या कुछ कम है?" ऊँटने गर्वके साथ कहा—"इसमें गर्व करनेकी क्या बात है? मुझे देखो, मैं तो कुछ भी नहीं पहनता।" मैंने कहा—"और सुनो, मैं भोजन भी सादा खाता हूँ, मिर्च-मसाले नहीं खाता।" ऊँटने कहा—"अच्छा त्याग किया; मुझे तो देखो कि केवल सूखी पत्तियाँ ही चबाकर रह जाता हूँ।" मैंने कहा—"मैंने गृहस्थाश्रमका भी त्याग कर दिया है।" ऊँटने कहा—"क्यों इतना अभिमान करते हो? मैंने तो गृहस्थाश्रममें प्रवेश ही नहीं किया, सो मैं तो बालब्रह्मचारी हूँ।" मैंने कहा—"मुझमें ईर्षा-द्वेष अधिक नहीं, झूठ बहुत कम बोलता हूँ; सो भी अनजानमें; रोष भी कम आता है।" ऊँटने कहा—"इसमें कौनसी बड़ाईकी बात है? मुझमें न ईर्षा है, न द्वेष, और न क्रोध; झूठ तो कभी जीवनमें बोला ही नहीं।"

मैंने कहा—"मुझमें सेवावृत्ति है।" ऊँटने कहा—"इसका नमूना तो हम रोज़ देखते हैं। कल एक पीला बछड़ा रो रहा था, क्योंकि उसकी माँका दूध नित्य-प्रति तुम पी लेते हो। बछड़ा तृण खाकर जीवन-निर्वाह करता है। उस दिन, सुनते हैं, तुमने एक-घोड़ेको भी दौड़ा कर मार डाला। शहरके तमाम घोड़ोंमें इसी बातकी चर्चा थी। एक विराट सभा हुई थी, उसमें मृतकके प्रति सहानुभूति और तुम्हारे प्रति घृणासूचक प्रस्ताव भी पास किये गये थे। न मालूम इस प्रकार तुमने कितने ऊँट, घोड़ों, और बैलोंको कष्ट दिया है। कितने पशुओंको लँगड़ा किया है। कितनोंको अपनी मोटरके धक्कोंसे गिराया है। अच्छा सेवाका दम भरने चले हो। मुझे देखो, न कपड़े पहनता हूँ, और न जिह्वा-स्वादका नाममात्र भी संबंध है। केवल सूखे तृण खाता हूँ; फिर भी बेंत, कोड़े और ठोकरें खाता हुआ नम्रतापूर्वक तुम लोगोंकी सेवा करता हूँ। इसीको सेवाव्रत कहते हैं। तुम लोगोंसे सेवा कैसे संभव है? पहननेके लिये तुम्हें क़ीमती वस्त्र चाहिये, खानेके लिये सुस्वादु भोजन, सेवाके लिये नौकर, रहनेके लिये महल, टहलनेके लिये अच्छे वाहन या मोटर; सफ़र करते हो तो मनों सामान एवं सुख-सुविधाकी सामग्रियाँ साथमें चलती हैं तुम्हारे लिये, और बोझा ढोना पड़ता है हमको। अकाल पड़ता है तो हम लोग भूखों मरते हैं, पीनेको पानी नहीं मिलता, किन्तु तुम्हारे बग़ीचोंकी फुलवाड़ीको सरसब्ज रखनेमें ही ग्रामके अनेक बैलोंकी शान्ति नष्ट हो जाती है। हम लोग प्रायः ब्रह्मचारी रहते हैं; किन्तु सुनते हैं, तुम्हारा मनुष्य-समाज इस विषयमें बड़ा पतित है। शर्मकी बात है कि इस पर भी तुम अपनेको हमसे श्रेष्ठ समझो।"

ऊँटकी बात मेरे हृदयमें चुभ गई। मुझे ग्लानि होने लगी। अन्तरात्मा कहने लगी—"मूर्ख, तू ऊँटसे भी गया-बीता है।" पासमें खड़े हुए करीरके वृक्षने सिर हिलाकर कहा—"ऊँट सच कहता है।" तब मैंने कहा—"प्रभो! मुझे ऊँट जितना आत्म-बल तो दे दो।"

सहसा आकाशमें बिजली चमकी। मेघ गर्जा। सुननेवालोंने सुना। कहनेवालोंने कहा —

"मो सम कौन कुटिल खल कामी?
जेहि तन दियो ताहि बिसरायो,
ऐसो निमक हरामी।
मो सम कौन कुटिल खल कामी?"

किसीने कहा, कहनेवाला और सुननेवाला दोनों एक हैं। किसीने कहा, यह अन्तर्नाद है। मैंने चिल्लाकर कहा — "मुझसे सब अच्छे हैं।"

प्रश्न —

१. लेखक और ऊँटके बीच हुई बातचीतका वर्णन कीजिये।
२. हवा क्या सेवा करती है?
३. मनुष्य ऊँटसे भी गया-बीता है; यह कैसे?
४. मनुष्यकी ज़रूरतोंको पूरा करनेमें पशुओंको क्या क्या मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं?

२

मौतके मुँहमें

[पंडित श्रीराम शर्मा]

[हिंदीमें शिकार-साहित्यको जन्म देनेका सेहरा श्रीराम शर्माके सिर है। इनकी लेखनीमें ऐसा जादू है कि इनका शिकार-साहित्य पढ़ते-पढ़ते रोंगटे खड़े हो जाते हैं और ऐसा लगता है कि विलकुल शिकारके मोर्चे पर खड़ा कर दिया हो। इनकी 'शिकार', 'प्राणोंका सौदा' आदि शिकारकी पुस्तकें वहुत रोमांचक हैं। आप एक अच्छे कहानी-लेखक भी हैं। जैसे आप शिकारसे कभी पीछे नहीं हटे, इसी तरह आप सत्याग्रह संग्राममें भी सदा डटे रहे।

आजकल आप 'विशाल-भारत' का संपादन कर रहे हैं।]

मेरे शिकारी मित्र पं० लक्ष्मीदत्त वड़े ही ज़िन्दादिल आदमी हैं। शिकारीमें जो गुण चाहिये वे सव उनमें हैं। संकटके समय जव वाघ आक्रमण कर वैठे, साहसके साथ अपने सायीका साथ देना और शिकार-संवंवी विपयके मूलतत्त्वको समझकर काम करना और वीहड़ तथा अगम्य स्थानोंमें पीर, वावर्ची, भिश्ती, खर वनना — ये सव गुण लक्ष्मीदत्तजीमें हैं।

उनमें और मुझमें एक भारी भेद है। उन्हें शिकार खेलने और खाने दोनोंका शौक़ है। मैं शिकार खेलनेको कलाकी दृष्टिसे देखता हूं। कट्टर निरामिपभोजी होनेके कारण मेरा शिकार खेलना गुनाह वेलज़्ज़त है। अन्य व्यसनोंकी भाँति शिकार भी एक व्यसन है; पर यह व्यसन अन्य व्यसनोंकी अपेक्षा कहीं अच्छा है। मेरी तो यह धारणा

है कि विद्यार्थियोंके लिये — विशेषकर उनके लिये, जिनकी धमनियोंमें उष्ण रक्त प्रवाहित हो रहा है और जिनकी जीवन-यात्राका मध्याह्न नहीं हुआ — शिकार खेलना — साहसके पुतले बनना — परमावश्यक है। नवयुवकोंको शस्त्र और शास्त्र दोनोंमें पारंगत होना चाहिये।

* * *

हाँ, तो बाघसे 'भिड़न्त' के उपरांत अगले दिन प्रातःकाल लक्ष्मीदत्तजी आये। मेरी सूरत शकल देखकर — यह निश्चय करके कि मेरे कहीं चोट नहीं है — उन्होंने दूसरे बाघकी बात छेड़ी।

मैंने कहा — भई, रहने भी दो। हम लोग कोई ख़ुदाई फ़ौजदार तो हैं नहीं, जो ईश्वरकी सृष्टिमें हर जगह हस्तक्षेप करते फिरें। कल तो एक बाघ मारा ही है, जिसमें मैं खुद भी शिकार हो गया होता। आखिर ऐसी भी क्या लत!

लक्ष्मी० — हमारी लत क्या है? कहीं महीने दो महीनेमें तो बाहर निकलते हैं। आप तो किताबके कीड़े हैं। क्या बुराई है, जो अवकाशके समय एक दुष्ट आततायीको मारने चलते हैं। रही मारनेकी बात, सो हिंसा-अहिंसाकी बात तो मैं नहीं समझता। मैं तो बाघ मारकर मुर्ग़ी, हिरन और तीतरोंके मारनेका पाप — यदि यह पाप है तो — कम किया करता हूँ। और फिर जो शत्रुको पाले, वह तो मूर्ख है; क्योंकि 'पयःपानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम्।'

मैं — ख़ैर, लम्बी-चौड़ी बातें न बनाओ। स्पष्ट यह कहो कि आज भी शिकारको चलेंगे। शास्त्रकी बातें तो शैतान भी कर सकता है।

लक्ष्मी० — चाहे कुछ भी सही। शैतान नहीं, शैतानका नगड़-दादा बनाइये, पर चलिये। आज इतवार है। कल फिर वही पढ़ानेकी घिस-घिस।

मैं — अच्छी बात है, पर आज तुम्हारी परीक्षा है। यदि बाघ मिला तो तुम्हें ही पहला फ़ायर करना होगा। बहुत दिनोंसे तुमने कोई बाघ नहीं मारा। मुझे ही मारना पड़ता है।

लक्ष्मी ० — अच्छी बात है। आज बाघको इस लोकसे परलोक पठानेका पुण्य मैं ही करूँगा। आप सेनापति बने रहिये। तो मैं जाता हूँ। (जाते हुए) — हम लोग दो बजे जंगलकी ओर चलेंगे।

भोजन किया और कुछ आराम करके हम लोग जंगलकी तरफ़ चल दिये। मेरी ढाई बरसकी लड़की 'कमला' रोने लगी और कहने लगी — "बाबूजी, मैं भी छाथ चलूँगी।"

"मैं बाघ मारने जाता हूँ बिटिया।" — मैंने कहा। "मैं भी तो बाघ मालूँगी" — उसने सिसकते हुए कहा। यह सुनकर हम सब लोग हँसने लगे, पर उसकी समझमें कुछ न आया। मचलती ही रही।

* * *

एक मील तक हमारा मार्ग नदीके किनारे-किनारे था। भागीरथीकी सहायक भिलंगना धनुपाकारमें उछलती-कूदती, अपने सहवासी शैलशिखरों, द्रुमदलों और अलिचुम्बित पुष्पोंको अन्तिम प्रणाम और कदाचित् हमारा तिरस्कार करती हुई अपने प्यारेसे मिलनेके लिये दौड़ी जा रही थी। यों तो प्राकृतिक दृश्य नयनाभिराम था। वनकी एक-एक वस्तु जीवनके लिये एक सबक़ था। पर कितने हैं माईके लाल, जो साधारण घटनाओंसे शिक्षा लें? केवल महान् आत्माएँ ही — जो ब्रह्मकी ज्योति अधिक परिमाणमें लेकर आई हैं — बाजके चिड़ियाको मारने और किसी शवके देखनेसे संसारमें युगान्तर कर देती हैं, और भगवान 'बुद्ध' कहाती हैं।

फलोंका गिरना न्यूटनसे पहले किसने नहीं देखा था? पर आकर्षण-शक्ति (लॉ ऑफ ग्रेविटेशन) का सिद्धान्त उसीको सूझा। कितने हैं ऐसे, जो पीड़ितोंका चीत्कार सुनकर उनकी भलाईके लिये अपना जीवन होम दें? विशेष आत्माओं पर ही विशेष प्रभाव होता है। शेष लोग तो दुर्वासनाओंकी पूर्तिके पातकपुंज हैं।

मानव प्रकृति प्रतिदिन एक ही वस्तु देखते-देखते ऊब जाती है। आगरेवालोंको ताजमहल देखनेका कौतूहल नहीं होता। वृन्दावन-वासियोंको 'कालिन्दी कूल कदम्बकी डारिन' में वह आकर्षण नहीं, जो एक नवागन्तुक यात्रीको होता है। हम लोगोंको मार्गके दृश्यमें कोई विशेष आनन्द नहीं मिल रहा था। वह तो रोजकी चीज़ थी। उससे हम अघा चुके थे। इसलिये समय वितानेके लिये मैंने लक्ष्मीदत्तजीसे किसी पहाड़ी गीतको पहाड़ी लोगोंकी 'टोन' में गानेके लिये आग्रह किया और घाटी शीघ्र ही 'सड़ककी घूमा, सदा नी रहदी जवानीकी घूमा' से गूंज गयी। पहाड़की चोटियों पर गानेकी भी छूत होती है। एक आदमीने आवाज़ लगायी कि बस घास काटनेवाले—जिस प्रकार एक कुत्तेका भूंकना सुनकर और कुत्ते भूंकने लगते हैं—हू-हा करके गाने-रेंकने लगते हैं।

ऐसी ही वातोंमें हम लोग गाँवके पास आ गये। हमारे परिचित बूढ़ेने हमारा स्वागत किया। बूढ़ा और उसकी बुढ़िया दरिद्रता, दीनता और दुःखकी साक्षात् मूर्ति थे। गरीबीका चित्र चित्रित करना साधारण लेखनीका काम नहीं। मेरी लेखनीमें वह ओज कहाँ? उसमें इतनी शक्ति नहीं, जो उनका चित्र खींच सके—रूसके प्रसिद्ध लेखक इवान तुर्गनेवकी प्रतिभा चाहिये। उसके अभावमें ग्रामीणोंकी अधो-गतिका वर्णन करना कठिन है।

बूढ़ा एक छोटी-सी भग्नावशेष कुटियामें रहता है। कुटियाके सामने एक छोटासा वाड़ा है। उसीमें उसके पशु बँधते हैं। दो

छोटे-छोटे बैल, दो गायें—जो बाघ द्वारा मारी गयीं—और एक गायका बच्चा, हल, और थोड़ासा बीज—बस यही उसकी पूंजी है। बर्तनोंमें तवा, पतीली, थाली, तीन गिलास और दो लोटे हैं। कपड़ोंमें—बुढ़िया जो कुछ पहने है—एक जीर्ण-शीर्ण कुर्ता, एक पेवन्ददार पहाड़ी धोती है और गहनोंमें नाकमें सौभाग्यका चिह्न पीतलकी नथ है। बूढ़ा एक लंगोट पहने और हाथमें हुक्का लिये, जिसको उसके दादाने देहरादूनसे मोल लिया था, हमारी खातिरमें लगा था। कभी नमक लाता था और कभी दही। यदि आतिथ्यका तात्पर्य प्रेम, सहृदयता और जो कुछ अपने पास रूखा-सूखा हो उसका खिलाना है, तो बूढ़ेका आतिथ्य उस षड्रस भोजनसे सौ गुना अच्छा था, जो कलहकूप-अट्टालिकाओंमें बड़ी शानके साथ दिया जाता है। सत्कारके सात्त्विक भावसे बूढ़ेकी आँखें चमक रही थीं, और बाघके मरने पर उसे जो प्रसन्नता हुई थी, वह कदाचित् कैसरके पतनसे लायड जॉर्जको भी न हुई हो। बूढ़ेके सामने यदि प्रसिद्ध शिकारी सर सैम्युअल बेकर भी आते, तो वह उनका भी उतना कायल न होता जितना कि हमारा था। जनताके मन पर प्रत्यक्ष बातका जितना प्रभाव पड़ता है, उतना किसी दूरकी सुनी सुनायी चीज़का नहीं।

दही पीकर हम लोग जंगलकी ओर चले। साथमें बूढ़ा और सात-आठ आदमी थे। बाघकी भेंटको एक बकरा भी ले लिया था। लोगोंके हाथोंमें दराँतियाँ थीं। दो-एकने लट्ठ भी ले लिये थे। गाँवसे जंगलकी ओर ढलवाँ उतार था, इसलिये बटिया पर हम लोग एकके पीछे एक होकर चले। एक स्थान पर पहुँचकर यह सोचा कि यदि बाघ आसपास आधे मील पर कहीं होगा, तो बकरेकी आवाज़ सुनकर अवश्य आयगा। बाघको जब बकरा बांधकर मारना

हो, तो वाँधनेका स्थान ऐसा होना चाहिये, जहाँसे आवाज़ दूर तक सुनाई पड़ सके। गहरे गढ़ेमें — जहाँसे वकरेका मिमियाना पहाड़की एक ही ओर तक सुनाई पड़ सके — वकरेका वाँवना ठीक नहीं। साथ ही स्थान चारों ओरसे आठ-आठ, दस-दस गज़ तक खुला होना चाहिये, जिससे वाघ आक्रमण करनेके पहले ही, घात लगाते समय ही, मारा जा सके। प्रायः यह देखनेमें आया है कि लोग वकरेको झाड़ीके पास वाँध देते हैं, जहाँसे एक गज़ चारों ओर कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। फलस्वरूप वाघ आकर वकरेको दवोचकर चम्पत हो जाता है, और शिकारी साहव या तो काठके उल्लूकी तरह वैठे रहते हैं, या अन्धाधुन्ध फायर करते हैं और वाघके स्थानमें वकरेको ही गोली मार देते हैं। वकरेको अितनी मजवूतीसे तीन खूँटोंसे वाँधना चाहिये कि वाघके आक्रमणके धक्केसे रस्सी टूट न जाय। लक्ष्मीदत्तजीने वकरेको इसी भाँति खूव कड़ा वाँधा। वकरा वाँधनेसे पहले हम लोगोंने अपने वैठनेका स्थान वना लिया था। हमारे वैठनेका स्थान वकरेसे वीस-पचीस गज दूर ऊँचे पर था। ऊँचे पर इसलिये जिससे वाघ — परमात्मा न करे — घायल होकर हम लोगों पर धावा कर वैठे, तो समतल भूमिकी अपेक्षा चढ़ाई पर कठिनाईसे चढ़ सके। हम दोनों पहले अपनी जगह पर चुपचाप वैठ गये, जिससे वकरेको यह न मालूम होने पाये कि उसके समीप कोई आदमी है। ऐसा मालूम होनेसे वकरा उसी ओर देखता रहता है और मिमियाना वन्द कर देता है। उसे आदमीका सहारा हो जाता है। सहारेकी आशा मनुष्य और पशु दोनोंको होती है।

जव हम लोग वैठ गये तव गाँववाले हो-हल्ला करते हुए चले गये, जिससे वाघको यह मालूम हो कि किसान लोग जंगलमें थे और सायंकालको नियमानुसार चले गये।

हम दोनों निर्जन स्थानमें चोरोंकी भाँति छिपे —घात लगाये —बाघकी जानके गाहक बैठे थे, और बेचारा बकरा नीचेकी ओर बीस-पचीस गजकी दूरी पर चिल्ला-चिल्लाकर आकाश-पाताल एक कर रहा था। उसे अपनी जानके लाले पड़े थे। बेचारेको इतनी समझ कहाँ कि उसका चिल्लाना बाघका आह्वान करना था।

पूर्णिमा थी, इसलिये प्राची दिशासे रात्रि होते ही शशिदेव अपनी पूर्ण कांतिसे बड़ी सजधजसे निकले। हमें उस समय चन्द्रमाकी चन्द्रिकासे प्रेम न था। हम तो 'काकचेष्टा बकध्यानं' से बाघकी टोहमें थे। बकरेकी में-में और में-में अनन्त रूपसे जारी थी। हम लोग भी अपने स्थानसे —जहाँ हमें कोई देख न सकता था —बाघके आगमनकी प्रतीक्षामें थे। ७, ८, ९ बज गये। बाघको आना होता तो सायंकाल होते ही आ जाता। ऐसे जंगलमें, जहाँ पर सायंकालके समय कोई रहनेका साहस न कर सकता था, यदि बाघ होता तो बकरेकी बोली पर जल्दी ही आ जाता। यों तो सायंकाल होते ही जंगलमें जंगली जानवरोंकी गतिसे एक चहल-पहल थी; पर इस चहल-पहलसे हमें क्या मतलब? प्रतीक्षा करते-करते दस बजने आये, और लक्ष्मीदत्तजीको सिगरेट पीनेकी इच्छा हुई; पर मैंने संकेतसे उन्हें ऐसा न करने दिया, क्योंकि बाघको चौकन्ना करने और भगानेके लिये तनिक-सा सन्देह ही पर्याप्त होता है। बाघका मारना क्या है उसको ठगना है। जो वीरता और होशहवास रखते हुए उसे धोखा दे सकेगा वही उसे मार सकेगा। रही मरने-जीनेकी बात, सो तो बाघके शिकारमें अपना शिकार कभी भी और कैसे भी हो सकता है।

साढ़े ग्यारह बजेके लगभग हमसे चार-पांच फर्लांगकी दूरी पर काकड़ (बार्किंग डियर) बोला। काकड़ प्रायः भयभीत होकर या बाघको देखकर बोलता है। कदाचित् बाघ ही हो। इसलिये

हम अपनी बन्दूकें हाथमें लेकर बैठ गये। एकटक हो आँखें फाड़-फाड़ कर देख रहे थे। एक बज गया, पर बाघ न आया। इससे हम हतोत्साह न हुए। पुराने पापी थे। बाघके स्वभावसे भलीभाँति परिचित थे। हम जानते थे कि अपने भोजन — बकरे — पर बाघ जल्दी भी आ सकता है, और सोच-समझकर, घंटोंमें, देरसे भी। इतनेमें हमसे पचास गज़की दूरी पर एक पत्थर लुढ़का, और फिर कोई आहट न हुई। उससे हमें विश्वास हुआ कि हो न हो बाघ ही है। दूरसे ही बैठकर उसने बकरेको देखा है और बहुत देर तक इसी आशंकामें था कि कहीं कोई खटका न हो। बकरेके साथ कहीं छली प्रपंची मनुष्य न हो। यह विश्वास करके कि कोई भय नहीं है, बाघ आगे बढ़ता प्रतीत हुआ। बकरेने बाघको देखकर मिमियाना बन्द कर दिया, और सिकुड़कर पूँछ हिलाता हुआ कातर दृष्टिसे देखने लगा। संमुख मौतको नंगा नाचता देखकर बकरा बेबस-गुमसुम होकर काँपता हुआ खड़ा हो गया। अभी बाघ खुले मैदानमें न आया था। कमसे कम हम लोगोंने उसे न देखा था; पर बकरेकी दृष्टि उस पर पड़ गयी थी। थोड़ी देरके उपरान्त जंगलके किनारे दो चमकती हुई गोलियाँ-सी दिखाई दीं। वह चौंधिया देनेवाली भयानक ज्योति बाघकी आँखोंकी थी। अजगर और बाघकी आँखोंमें मोहक शक्ति होती है। वह शक्ति बकरेके और हमारे सामने थी। मैंने धीरेसे लक्ष्मीदत्तजीको अपने हाथसे दबाया। उत्तर स्वरूप अुन्होंने भी वही संकेत किया। शिकारके समय बोलना और हिलना-डुलना मूर्खता है। शिकारके संकेत होते हैं। उन्हीं संकेतोंसे — वाणीके संकेतसे नहीं, वरन् हाथ बतानेसे — हम तैयार हो गये। बाघने जब देखा कि झाड़ीसे एक छलाँगमें वह बकरे तक नहीं पहुँच सकता, तब वह धीरे-धीरे बिल्लीकी भाँति घात लगाये हुए आगे बढ़ा और अपने स्नायु और पुट्ठोंको इकट्ठा करके

वज्रकी भाँति हो बैठा। यह आसन घातक था और बकरेके जीवनके कुछ क्षण ही प्रतीत होते थे। पर नहीं। 'धाँय' की प्रलयकारी ध्वनि हुई, और लक्ष्मीदत्तजीने दुनाली बन्दूकसे एकदम दोनों घोड़े दाग दिये। बन्दूकके शब्दका उत्तर बाघने हृदय कँपानेवाले गर्जनसे दिया। बाघके गोली तो लगी थी, पर मर्मस्थान पर नहीं। पेटमें लगी। मैं अपनी रायफल लिये बैठा था। मैं चाहता तो एक गोली बाघके खोपड़े पर मार सकता था, पर उस दिनका सेहरा तो लक्ष्मीदत्तजीके सिर पर था। चोट खाकर बाघ गरजा और छटपटाकर विद्युत्-गतिसे लपककर अन्दाज़से हम लोगोंकी ओर बढ़ा। हमारे होश उड़ गये और समझ लिया कि बस हिंसाके पापोंका प्रायश्चित्त—'सर्वं वै पूर्णं स्वाहा'—हो गया। हांफते हुए बाघको ऊपर तेजीसे चढ़ते देखकर मैंने रायफल दाग दी; पर निशाना चूक गया। रात्रिका समय! रायफलका निशाना और तिस पर दौड़ते हुए बाघ पर! झटसे खाली कारतूस निकालकर फेंका और दूसरा कारतूस नालमें पहुँचाया।

इतनेमें, लक्ष्मीदत्तजी अभी अपनी बन्दूकसे खाली कारतूस निकालकर नये कारतूस लगा ही पाये थे कि बाघने आकर अगले पंजेकी थाप हमारी आड़ पर मारी। सब झाड़, लकड़ी—हमारी सब क़िलेबन्दी टूट गयी। हम बाघके संमुख बैठे थे। मैंने एक फायर और किया और वह जल्दीमें उसकी छातीमें लगनेके बजाय उसकी मेरी ओर वाली अगली टाँगमें तिरछा लगा, जिससे उसकी वह टाँग बिलकुल बेकार हो गयी; पर उफ़! उसने दूसरे पंजेसे वज्र-प्रहार किया। उस समयका स्मरण करके मेरा कलेजा अब भी दहल जाता है। लेखनी मेरी उस समयकी मनोवृत्तिको व्यक्त नहीं कर सकती। उस अचूक प्रहारसे लक्ष्मीदत्तजी लोट-पोट होकर नीचेकी ओर निर्जीव पत्थरकी भाँति लुढ़कने लगे। प्रहारके समय लक्ष्मीदत्तजीने केवल

यही शब्द निकाले — "मास्टरजी, बुरी तरह मरा।" उनकी बन्दूक मेरी ओर आ गिरी। मेरा सिर चकरा गया। आँखोंके सामने अँधेरा छा गया। बाघके भयसे नहीं, अपनी मौतकी आशंकासे भी नहीं, वरन् अपनी वृद्ध माताके एकमात्र सहारा लक्ष्मीदत्तजीके लिये। उनकी पत्नी अपने . . . का समाचार सुनकर कैसे सिर धुनेगी! लक्ष्मीदत्तजीके घरमें तीन प्राणी थे। उनकी अट्ठाइस-तीस वर्षकी स्त्री; पाँच-छः महीनेकी एक बालिका और उनकी पैंसठ वर्षीया माता, जो लक्ष्मीदत्तजीकी केवल दो वर्षकी आयुमें विधवा हो गयी थी। ऐसे कुटुम्ब पर यह विपत्ति — यह वज्राघात और उसका समाचार देने वाला मैं! यह मुझसे कैसे हो सकेगा? किस मुँहसे नगरको लौटूंगा? मैंने यह शर्त क्यों की थी कि पहले फायर लक्ष्मीदत्तजीको करना पड़ेगा? नैतिक दायित्व तो मुझ पर था। होनेको तो वही होता है, जो भगवानकी इच्छा होती है; पर मुझको उसका साधन क्यों बनाया?

पता नहीं, बाघ लक्ष्मीदत्तजीको कहाँ खींच ले गया और उनके शरीरकी क्या दुर्गति की होगी — ये विचार आते ही मैं पागल-सा हो जाता था! अन्धाधुन्ध फायर करना निरर्थक था। कहीं लक्ष्मीदत्तजीमें जीवन शेष हो, तो मेरे बिना निशानेकी गोलीके वे निशान न बन जायँ। यदि उन्हें ढूंढ़ा भी जाय तो कहाँ? पर प्रातःकाल तक प्रतीक्षा भी कैसे की जाय? अच्छा हो, मेरी जीवन-लीला भी समाप्त हो जाय। एक वृद्ध असहाय स्त्रीका शाप और चीत्कार तो न सुनूंगा, एक युवती पत्नीका हृदय दहलानेवाला विलाप तो कानोंमें न पड़ेगा। इस उद्विग्नतामें रायफल वहीं पटक दी और दुनाली बन्दूक — जिसे लक्ष्मीदत्तजीने भरा था — उठाकर बाघ और लक्ष्मीदत्तजीके लुढ़कनेकी ओर उतरा। बन्दूककी नाल खोलकर देखा, तो दोनों नालोंमें ग्राफ भरे हुए थे। कारतूसोंको नालोंमें फिर

रखकर मैं नीचेकी ओर चला। पन्द्रह-बीस गजकी उतराई उतरकर बकरेवाले मैदानमें आना ही चाहता था कि कोई लम्बी-सी चीज़ पड़ी हुई जान पड़ी। खयाल हुआ लक्ष्मीदत्तजीका शव होगा। पर नहीं, वह तो बाघ था।

मैंने समझा राक्षस बाघ लक्ष्मीदत्तजीका काम तमाम करके मरा है। मैं ऐसा सोच ही रहा था कि बाघ एकदम तड़पा और यदि मैं बन्दूककी नाल उसके मुंहमें डालकर और दोनों नालोंसे फायर करके उसके मस्तिष्कको न उड़ा देता, तो वह एक ही चोटमें मेरा भी काम तमाम कर देता। बाघ तो मर गया, पर मुझे तो लक्ष्मीदत्तजीकी खोज करनी थी। बकरे पर इतना क्रोध आ रहा था कि उसको भी खतम कर दूं। किस मुहूर्तमें उसको लिया, जो ऐसी दुर्घटना हुई। खुली जगहके चारों ओर ढूंढ़ा, पर लक्ष्मीदत्तजी न मिले। हारकर और उत्साह-हीन होकर फिर ऊपर बैठनेकी जगह पर चढ़ा, और वहांसे फिर अन्दाज़ लगाकर नीचे उतरा और कुछ ही दूरी पर लक्ष्मीदत्तजीको पड़ा पाया। देखकर पहले तो माथा ठनका। हृदयकी गति बढ़ गई। चित्त कहता था कि कहीं जीवित ही न हों। मनुष्य संदिग्धावस्थामें भँवरमें पड़ी हुई लकड़ीके समान होता है, जो कभी उछलती है और कभी डूबती।

साहस करके मैं उनके सिरके पास बैठ गया और हाथ उठाकर नाड़ी देखी। हैं! यह क्या? नाड़ी तो चल रही थी। गति बहुत मन्द थी। मैंने तो आव गिना न ताव। जेबमें से ब्राण्डीकी शीशी निकालकर लक्ष्मीदत्तजीका मुंह खोलकर गलेमें एक तोलेके लगभग ब्राण्डी उतार दी। मैं न तो मदिराका पियक्कड़ हूँ, और न कभी उसे पीता ही हूँ, पर शिकारमें कुछ औषधियाँ साथ रखता हूँ और उनमें से एक ब्राण्डी भी है। ब्राण्डीके पेटमें जाते ही लक्ष्मीदत्तजीने झटसे आँखें खोल दीं और कराहने लगे। मैंने कहा—"तुमसे अधिक बुरी हालत मेरी रह चुकी है—घायल नहीं हुआ पर मानसिक

घायल रह चुका हूँ। कराहो मत। दियासलाई दो। आग जलाऊँ। जाड़के मारे हड्डियाँ तक गली जाती हैं। तुम्हारे घाव फिर देखूंगा। वाघ पास ही मरा पड़ा है।"

लक्ष्मी०—"ऐं! मरा पड़ा है!!"

मैं—"हाँ, मरा ही पड़ा है। अन्तमें उसे मेरी भी गोली खानी पड़ी।"

* * *

आग जलायी और लक्ष्मीदत्तजीको वहाँ पर वड़ी कठिनाईसे सहारा देकर लाया और उनकी चोटकी देखभाल की। वातें करते करते और पट्टी वाँधते-वूँधते प्रातःकाल हो गया।

जिस समय वाघ हमारे सम्मुख आ गया था और मैंने फायर किया था, लक्ष्मीदत्तजीने फायर करनेका अवसर न पाकर अपनी खुखरीका वार वाघकी छाती पर किया था। मैंने भी उसी समय फायर किया था और लक्ष्मीदत्तजीके वारके कारण ही मेरी गोली ठीक निशाने पर नहीं वैठी थी। फिर वाघने एक थाप लक्ष्मीदत्तजीके मारी। पंजेका पूरा आघात उनकी वन्दूक पर पड़ा था, इसलिये वन्दूक मेरे आगे आ गिरी थी। वाघके पंजेके केवल दो नख उनकी भुजा पर पड़े थे। वह कमीज, स्वेटर, कोट और चेस्टर पहने हुए थे, पर फिर भी वाघके नख कपड़ोंको पार कर गये और उनकी वाँहके पुट्ठोंको कपड़ोंके आवरणसे वाहर निकाल दिया। इस झटकेके मारे लक्ष्मीदत्तजी ऐसे दूर जा गिरे, जैसे कोई खिलाड़ी गेंदको उठाकर फेंक देता है। लक्ष्मीदत्तजीने समझा कि वस अन्त आ गया। उन्हें फेंककर वाघ फिर उनके पास गया और उनकी गर्दन पकड़कर झँझोड़ना चाहता था कि लक्ष्मीदत्तजीने अपनी वची-खुची शक्तिको एकत्र करके एक अंतिम वार अपनी खुखरीसे किया। वाघ चोट खाकर उछला, गिरा और वेहोश हो गया। उधर लक्ष्मीदत्तजी भी अचेत हो गये।

लक्ष्मीदत्तजीके खुरसटें बहुत थीं। उनकी एक उँगली भी उतर गअी थी। आँख और चेहरे पर ऐसे चिह्न हो गये थे, मानो किसीने हंटर मारे हों।

*　　　　*　　　　*

बाँहके घावकी बड़ी चिन्ता थी। बाघके नखकी चोटसे घाव विषैला (सेप्टिक) हो जाता है। हम लोगोंने टिहरी आकर किसीसे यह न कहा कि बाघने लक्ष्मीदत्तजीको घायल किया है। वृद्ध माताके प्रेमजन्य कोपका भाजन कौन बनता? यही कह दिया कि गिरकर चोट आयी है और पत्थर चुभ गया है। वृद्धा माता आँखोंसे लाचार हैं, इसलिये उन पर चाल चल गयी और टिहरीवालोंको — अपने घनिष्ठ मित्रों तकको भी — लक्ष्मीदत्तजीकी रोमांचकारी घटना और हम लोगोंके मौतके मुँहसे जीवित निकल आनेकी बात आज तक नहीं मालूम है। शहरमें तो बस यही खबर हुई कि 'मास्टर साहबने एक और बाघ मारा है'। पर मास्टर साहबके व्यथित हृदयको ये लोग क्या समझें कि उन पर बाघके मारनेके समय क्या बीती थी।

लक्ष्मीदत्तजीने दस-बारह दिनकी छुट्टी ली और धीरे-धीरे वे अच्छे हो गये और शीघ्र ही अपने उदरको जंगली मुर्ग और तीतरकी क़ब्र बनाने लगे।

मैंने परब्रह्मको कोटिशः धन्यवाद दिया और अपने भाग्यको सराहा कि उस दिन मेरे साथीकी जान बच गयी। मुझे अपना खयाल न था। यों मरने-जीनेको तो —

"एक जाता है तो आता है जहांमें दूसरा।
उसकी महफ़िलका कभी खाली मकां होता नहीं॥"

प्रश्न —

१. बाघके शिकारके लिये क्या क्या करना चाहिये? कौन कौनसे साधन उपयोगमें लाने चाहिये?

२. इस पाठका शीर्षक 'मौतके मुंहमें' क्यों रखा गया है?

३. पहाड़ी लोगोंके जीवनका स्वरूप अपने शब्दोंमें बताइये।

४. बाघके और शिकारियोंके बीच जो लड़ाई चली उसका वर्णन कीजिये।

५. लेखकके जीवनमें जैसी घटना हुई, ऐसी किसी और घटनाका आप वर्णन करें।

३

बापू

[पंडित जवाहरलाल नेहरू]

[आपका जन्म सन् १८८९ में इलाहाबादमें हुआ। आपके पुरखे कश्मीरसे हिन्दुस्तान चले आये थे। आप पोतड़ोंके अमीर हैं। बैरिस्टरी पास करके इंग्लैंडसे वापस आये तो देशप्रेमकी लगनने आपको वकालत नहीं करने दी और आपको राजनीतिक क्षेत्रमें फेंक दिया, और आप आज़ादीकी लड़ाईमें गांधीजीके साथ शामिल हो गये। जवानीके बहुत क़ीमती साल आपने जेलमें गुज़ारे। आप कई बार कांग्रेसके प्रमुख रह चुके हैं।

आपको पढ़ने-लिखनेका बहुत शौक़ है। खूब काममें फँसे रहते हुए भी जब कभी समय मिल जाता है, आप लिखने लगते हैं। आप लिखते तो अंग्रेज़ीमें ही हैं, मगर भाषण अक्सर हिन्दीमें ही करते हैं। 'बापू' आपका एक भाषण ही है। 'ग्लिम्प्सेज़ ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री', 'माई स्टोरी', और 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' आपकी बड़ी मशहूर किताबें हैं। इनके हिन्दी अनुवाद छप चुके हैं। इनके अलावा आपके लेखोंके कई संग्रह भी हैं।

आप जगतकी राजनीतिक और सामाजिक समस्याओंके बड़े अभ्यासी हैं। आप जनतामें बड़े प्रिय हैं। गांधीजीके बाद अगर देशको किसी एक आदमीमें विश्वास है तो आपमें ही है। आजकल आप देशके प्रधानमंत्री हैं।]

१९१६ का साल था। कोई ३२ सालसे ऊपरकी वात है, जव मैंने वापूको पहले पहल देखा था; और तवसे तो पूरा एक युग वीत गया है। लाज़मी तौर पर हम वीते हुए ज़मानेकी तरफ़ देखते हैं और वेशुमार यादें ताज़ा होती हैं। हिन्दुस्तानके इतिहासमें यह कितना अनोखा ज़माना रहा है! सारे उतार-चढ़ाव और हार-जीतवाली इस सच्ची कहानीने वीररसके काव्यका अनोखा रूप ले लिया है। हमारी मामूली ज़िदगियोंको भी रोमांचक कल्पनाके प्रकाशने छुआ, क्योंकि हम इस ज़मानेमें जिये, और हिन्दुस्तानके महान नाटकमें कम या ज्यादा हमने अपना पार्ट अदा किया।

यह ज़माना सारी दुनियामें लड़ाइयों, क्रान्तियों और दिल हिलानेवाली घटनाओंका ज़माना रहा है। फिर भी हिन्दुस्तानकी घटनायें उनसे विलकुल दूसरी सतह पर हुई थीं। अगर कोई वापूके वारेमें काफ़ी जाने विना इस ज़मानेका अध्ययन करे, तो उसे ताज्जुव होगा कि हिन्दुस्तानमें यह सव कैसे और क्यों हुआ! इसे समझाना कठिन है। वुद्धिके ठण्डे प्रकाशकी मददसे यह समझना भी कठिन है कि हममें से हरएक मर्द या औरतने जो कुछ किया, वह क्यों किया! कभी कभी यह होता है कि एक व्यक्ति या एक राष्ट्र भी किसी भावना या जोशमें वहकर एक खास ढंगका काम करता है। लेकिन वह जोश और वह भावना थोड़े समय वाद ख़तम हो जाती है और व्यक्ति जल्दी ही कर्म और अकर्मकी अपनी मामूली सतह पर लौट आता है।

इस ज़मानेमें हिन्दुस्तानके वारेमें सिर्फ़ यही ताज्जुवकी वात नहीं थी कि सारे देशने एक ऊँची सतह पर काम किया, वल्कि यह भी थी कि उसने इतने लंवे अरसेमें लगातार कम या ज्यादा उसी सतह पर काम किया। वह सचमुच तारीफ़के लायक़ काम था। इसे तव तक आसानीसे समझाया या समझा नहीं जा सकता, जव तक हम उस अचरजमें डालनेवाले व्यक्तिकी तरफ़ नहीं देखते, जिसने

इस ज़मानेको बनाया है। एक बड़ी भारी मूर्तिकी तरह बापू हिन्दुस्तानके इतिहासकी आधी सदीमें पाँव फैलाकर खड़े हैं। वह बड़ी भारी मूर्ति शरीरकी नहीं, बल्कि मन और आत्माकी है।

हम बापूके लिये शोक करते हैं और अपनेको अनाथ महसूस करते हैं। लेकिन उनके तेजस्वी जीवनको देखते हुए शोक मनानेको है ही क्या? सचमुच दुनियाके इतिहासमें विरले ही मनुष्योंके भागमें यह बदा होगा कि वे अपने ही जीवनमें इतनी बड़ी कामयाबी देख सकें। बापू हमारी कमजोरियों और क्षतियोंके लिये दुःखी थे और हिन्दुस्तानको और ज्यादा ऊँचाई पर न ले जानेका उन्हें अफ़सोस था। उस दुःख और अफ़सोसको हम आसानीसे समझ सकते हैं। फिर भी कौन कह सकता है कि उनका जीवन असफल रहा। जिस चीजको अुन्होंने छुआ, उसे क़ीमती और गुणवाली बना दिया। जो काम उन्होंने किया, उसका काफ़ी अच्छा नतीजा निकला — हालाँकि शायद उतना बड़ा नहीं जितनेकी वे आशा करते थे। हम पर यही छाप पड़ती थी कि वे जो कोई काम हाथमें लेंगे, उसमें सचमुच असफल हो ही नहीं सकते। वे गीताके उपदेशके मुताबिक फलकी इच्छा न रखते हुए स्थितप्रज्ञकी तरह उदासीन रहकर काम करते थे। इसलिये कामका फल उन्हें मिलता ही था।

कठिन कामों, हलचलों, और एकसी प्रवृत्तिवाले सामान्य जीवनसे भिन्न अनेक साहसोंसे भरी हुई उनकी लंबी ज़िन्दगीमें बेसुरा राग शायद ही कभी सुनाई पड़ता था। उनकी सारी विविध प्रवृत्तियोंमें ज्यादा मात्रामें एकरसता आती गई और उनके मुँहसे निकलनेवाला हरएक शब्द और हरएक चेष्टा इसमें ठीक तरहसे जम गई थी, और इस तरह बेजाने ही वे पूरे कलाकार बन गये थे। क्योंकि उन्होंने जीनेकी कला सीखी थी; अगरचे जीवनका जो ढंग उन्होंने अख्तियार किया था, वह दुनियाके ढंगसे बहुत भिन्न था। इससे यह बात साफ़ हो गई

कि सत्य और अच्छाईकी लगन दूसरी चीज़ोंके अलावा, जीवनमें ऐसी कलात्मकता प्रदान करती है।

जैसे जैसे वे बूढ़े होते गये, उनका शरीर उनके भीतरकी शक्तिशाली आत्माका सिर्फ़ एक वाहन जैसा दिखाई पड़ने लगा। उनकी वात सुनते हुए या उनको देखते हुए लोग उनके शरीरको भूल जाते थे, और इसलिये जहाँ वे वैठते थे, वह जगह मंदिर वन जाती थी, और जहाँ वे चलते थे, वह पूजाका स्थान वन जाता था।

उनके अवसानमें भी एक अनोखी भव्यता और कलापूर्णता थी। उनके जैसे व्यक्तिके लिये और उनके जैसी जिन्दगीके लिये हर दृष्टिकोणसे वह एक योग्य अन्त था। सचमुच उस मृत्युसे उनके जीवनका सवक़ ऊँचा उठ गया। मौतके समय वे अपनी शक्तियोंसे भरपूर थे, और प्रार्थनाके वक़्त उनकी मृत्यु हुई, जवकि वेशक वे मरना पसन्द करते। दो फ़िरकोंके वीच एकता क़ायम करनेके लिये वे शहीद हुए। इसके लिये उन्होंने हमेशा काम किया था और ख़ास करके पिछले दो-एक सालसे तो उन्होंने इसके लिये लगातार मेहनत की थी। वे अचानक मर गये, जिस तरह कि सभी लोग मरना चाहेंगे। उनके वारेमें शरीरके घुलने या लम्वे अरसे तक वीमार रहनेकी कोई वात ही पैदा नहीं हुई। ज्यादा उम्रमें इन्सानकी याददाश्तमें जो कमी आ जाती है, वह भी उनमें नहीं आई। तव हम क्यों उनके लिये शोक करें? हमारी यादमें वे उस 'गुरु' की तरह रहेंगे, जिनके डग अन्त तक फुर्तीले रहे, जिनकी मुसकान दूसरोंके ओठों पर मुसकान ला देती थी और जिनकी आँखोंसे हँसी छलकी पड़ती थी। उनकी शारीरिक और मानसिक शक्तियाँ अचूक थीं। अपने जीवन और मृत्यु दोनोंमें उनकी शक्तियाँ अपनी चरम सीमा पर पहुँची हुई थीं। वे हमारे मनमें और जिस युगमें हम रहते हैं, उसके मनमें अपनी ऐसी तसवीर छोड़ गये हैं जो कभी मिट नहीं सकती।

वह तसवीर कभी धुंधली नहीं होगी। मगर उनकी सिद्धि इससे बहुत ज्यादा है। उन्होंने हमारे मन और आत्माके तत्त्वोंमें प्रवेश करके उन्हें बदला है और उनको नये ढंगसे तैयार किया है। गांधी-युगकी पीढ़ीका तो अन्त हो जायगा, मगर गांधीका वह असर बना रहेगा, और हर आनेवाली पीढ़ीको प्रभावित करता रहेगा, क्योंकि वह हिन्दुस्तानकी आत्माका एक अंग बन गया है। जब इस देशमें हम रूहानी तौर पर कंगाल होते जा रहे थे, बापू हमें समृद्ध और बलवान बनानेके लिये हमारे बीचमें आये; और जो ताक़त उन्होंने हमें दी, वह एक दिनकी या एक बरसकी नहीं है; बल्कि उससे हमारी राष्ट्रीय विरासतमें हमेशाके लिये भारी वृद्धि हो गई है।

बापूने हिन्दुस्तानके लिये, दुनियाके लिये और हम गरीबोंके लिये भी बहुत बड़ा काम किया है, और उन्होंने उसे आश्चर्यजनक रीतिसे अच्छा किया है। अब हमारी बारी है कि हम उन्हें या उनकी यादको धोखा न दें, बल्कि अपनी पूरी योग्यताके साथ उनके कामको आगे बढ़ाते रहें और जो प्रतिज्ञायें हमने इतनी बार ली हैं, उन्हें पूरा करें।

प्रश्न —

१. बापू क्या थे? 'गुरु' की तरह वे हमें कैसे याद रहेंगे?
२. बापू जीवन-कलाकार थे। कैसे?
३. 'उनके अवसानमें भी एक अनोखी भव्यता और कलापूर्णता थी', इस कथनको अच्छी तरह समझाइये।
४. बापूके बारेमें आप जो जानते हों, लिखें।
५. इस लेखके लेखक पं० जवाहरलालजीके जीवनके बारेमें आप क्या जानते हैं?

४

बड़े घरकी बेटी

[मुंशी प्रेमचन्द]

[आपका असली नाम धनपतराय था और उपनाम प्रेमचंद। आप उपन्यास-सम्राट् कहलाते हैं। पहले आप उर्दूमें लिखते थे, बादमें आप हिंदी-उर्दूकी मिलीजुली शैलीमें लिखने लगे। आपने अपनी कहानियोंमें और कई उपन्यासोंमें हिन्दुस्तानकी देहाती ज़िंदगीका हूबहू नकशा खींचा है। आपकी कहानियों और उपन्यासोंके विषय जीती जागती सामाजिक समस्यायें हैं। 'हंस' नामक मासिकके आप संपादक थे। मानसरोवर, प्रेमपचीसी, सप्तसरोज, नवनिधि आदि आपके कहानी-संग्रह और सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, ग़बन, गोदान आदि आपके मशहूर उपन्यास हैं। आपकी शैली सरल मगर दिल पर असर करनेवाली है।]

(१)

बेनीमाधवसिंह गौरीपुर गाँवके ज़मींदार और नंबरदार थे। उनके पितामह किसी समय बड़े धन-धान्य-संपन्न थे। गाँवका पक्का तालाब और मन्दिर, जिनकी अब मरम्मत भी मुश्किल थी, उन्हींके कीर्ति-स्तंभ थे। कहते हैं, इस दरवाज़े पर हाथी झूमता था। अब उसकी जगह एक बूढ़ी भैंस थी, जिसके शरीरमें अस्थि-पंजरके सिवा और कुछ शेष न रहा था। पर दूध शायद बहुत देती थी; क्योंकि एक-न-एक आदमी हाँडी लिये उसके सिर पर सवार ही रहता था। बेनीमाधवसिंह अपनी आधीसे अधिक संपत्ति वकीलोंको भेंट कर चुके

थे। उनकी वर्तमान आय एक हज़ार रुपये वार्षिकसे अधिक न थी। ठाकुरसाहबके दो बेटे थे। बड़ेका नाम श्रीकंठसिंह था। उसने बहुत दिनोंके परिश्रम और उद्योगके बाद,बी० ए० की डिग्री प्राप्त की थी। अब एक दफ्तरमें नौकर था। छोटा लड़का लालबिहारीसिंह दोहरे बदनका, सजीला जवान था। भरा हुआ मुखड़ा, चौड़ी छाती। भैंसका दो सेर ताज़ा दूध वह उठकर सवेरे पी जाता था। श्रीकंठसिंहकी दशा उसके बिलकुल विपरीत थी। इन नेत्रप्रिय गुणोंको उन्होंने बी० ए० इन्हीं दो अक्षरों पर न्योछावर कर दिया था। इन दो अक्षरोंने उनके शरीरको निर्बल और चेहरेको कान्तिहीन बना दिया था। इसीसे वैद्यक-ग्रंथों पर उनका विशेष प्रेम था। आयुर्वेदिक औषधियों पर उनका अधिक विश्वास था। शाम-सवेरे उनके कमरेसे प्रायः खरलकी सुरीली कर्णमधुर ध्वनि सुनाई दिया करती थी। लाहोर और कलकत्तेके वैद्योंसे बड़ी लिखा-पढ़ी रहती थी।

श्रीकंठ इस अंग्रेजी डिग्रीके अधिपति होने पर भी अंग्रेज़ी सामाजिक प्रथाओंके विशेष प्रेमी न थे। बल्कि वह बहुधा बड़े ज़ोरसे उनकी निंदा और तिरस्कार किया करते थे। इसीसे गांवमें उनका बड़ा सम्मान था। दशहरेके दिनोंमें वह बड़े उत्साहसे रामलीलामें सम्मिलित होते और स्वयं किसी न किसी पात्रका पार्ट लेते थे। गौरीपुरमें रामलीलाके वही जन्मदाता थे। प्राचीन हिन्दू-सभ्यताका गुणगान उनकी धार्मिकताका प्रधान अंग था। सम्मिलित कुटुम्बप्रथाके तो वह एकमात्र उपासक थे। आजकल स्त्रियोंकी कुटुम्बमें मिल-जुलकर रहनेकी ओर जो अरुचि होती है, उसे वह जाति और देशके लिये बहुत ही हानिकारक समझते थे। यही कारण था कि गांवकी ललनाएँ उनकी निन्दक थीं। कोई कोई तो उन्हें अपना शत्रु समझनेमें भी संकोच न करती थीं। स्वयं उनकी पत्नीका ही इस विषयमें उनसे विरोध था। यह इसलिये नहीं कि उसे अपनी सास, श्वसुर, देवर या जेठ आदिसे घृणा थी, बल्कि उसका विचार था कि यदि बहुत कुछ सहने और

तरह देने पर भी परिवारके साथ निर्वाह न हो सके, तो आये दिनकी कलहसे जीवनको नष्ट करनेकी अपेक्षा यही उत्तम है कि अपनी खिचड़ी अलग पकाई जाय।

आनंदी एक बड़े उच्च कुलकी लड़की थी। उसके बाप एक छोटी-सी रियासतके ताल्लुक़ेदार थे। विशाल भवन, एक हाथी, तीन कुत्ते, बाज़, बहरी, शिकरे, झाड़-फानूस, ऑनरेरी मैजिस्ट्रेटी और ऋण, जो एक प्रतिष्ठित ताल्लुक़ेदारके भोग्य पदार्थ हैं, सभी यहाँ विद्यमान थे। नाम था भूपसिंह। बड़े उदारचित्त और प्रतिभाशाली पुरुष थे। पर दुर्भाग्यसे लड़का एक भी न था। सात लड़कियाँ हुईं और दैवयोगसे सब-की-सब जीवित रहीं। पहली उमंगमें तो उन्होंने तीन ब्याह दिल खोलकर किये; पर जब पंद्रह-बीस हज़ार रुपयोंका कर्ज़ सिर पर हो गया तो आँखें खुलीं। हाथ समेट लिया। आनंदी चौथी लड़की थी। वह अपनी सब बहनोंसे अधिक रूपवती और गुणवती थी। इसीसे ठाकुर भूपसिंह उसे बहुत प्यार करते थे। सुन्दर संतानको कदाचित् उसके माता-पिता भी अधिक चाहते हैं। ठाकुरसाहब बड़े धर्मसंकटमें थे कि इसका ब्याह कहाँ करें। न तो यही चाहते थे कि इसका ऋणका बोझ बढ़े, और न यही स्वीकार था कि उसे अपनेको भाग्यहीन समझना पड़े। एक दिन श्रीकंठ उनके पास किसी चंदेका रुपया माँगने आये। शायद नागरी-प्रचारका चंदा था। भूपसिंह उनके स्वभाव पर रीझ गये और धूमधामसे श्रीकंठसिंहका आनंदीके साथ ब्याह हो गया।

आनंदी अपने नये घरमें आई, तो यहाँका रंग-ढंग कुछ और ही देखा। जिस टीम-टामकी उसे बचपनसे ही आदत पड़ी हुई थी, वह यहाँ नाममात्रको भी न थी। हाथी-घोड़ोंका तो कहना ही क्या, कोई सजी हुई सुन्दर बहली तक न थी। रेशमी स्लीपर साथ लाई थी; पर यहाँ बाग़ कहाँ? मकानमें खिड़कियाँ तक न थीं। न ज़मीन

पर फ़र्श, न दीवार पर तसवीरें। यह एक सीधासादा देहाती गृहस्थका मकान था। किंतु आनंदीने थोड़े ही दिनोंमें अपनेको इस नई अवस्थाके ऐसा अनुकूल बना लिया, मानो उसने विलासके सामान कभी देखे ही न थे।

(२)

एक दिन दोपहरके समय लालबिहारीसिंह दो चिड़ियाँ लिये हुए आया और भावजसे बोला — जल्दीसे पका दो, मुझे भूख लगी है। आनंदी भोजन बनाकर इसीकी राह देख रही थी। अब वह नया व्यंजन बनाने बैठी। हाँडीमें देखा तो घी पाव-भरसे अधिक न था। बड़े घरकी बेटी किफ़ायत क्या जाने! उसने सब घी मांसमें डाल दिया। लालबिहारी खाने बैठा, तो दालमें घी न था। बोला — दालमें घी क्यों नहीं छोड़ा?

आनंदीने कहा — घी सब मांसमें पड़ गया।

लालबिहारी ज़ोरसे बोला — अभी परसों घी आया है, इतनी जल्दी उठ गया!

आनंदीने उत्तर दिया — आज तो कुल पाव-भर रहा होगा। वह सब मैंने मांसमें डाल दिया।

जिस तरह सूखी लकड़ी जल्दीसे जल उठती है, उसी तरह क्षुधासे बावला मनुष्य ज़रा-ज़रा-सी बात पर तिनक जाता है। लालबिहारीको भावजकी यह ढिठाई बहुत बुरी मालूम हुई। तिनक कर बोला — मैकेमें तो चाहे घीकी नदी बहती हो।

स्त्री गालियाँ सह लेती है, मार भी सह लेती है; पर मैकेकी निन्दा उससे नहीं सही जाती। आनंदी मुँह फेरकर बोली — हाथी मरा भी तो नौ लाखका। वहाँ इतना घी नित्य नाई-कहार खा जाते हैं।

लालविहारी जल गया, थाली उठाकर पटक दी, और वोला—जी चाहता है, जीभ पकड़कर खींच लूं।

आनंदीको भी क्रोध आ गया। मुँह लाल हो गया, वोली—वह होते तो इसका मजा चखाते।

अव अपढ़, उजड्ड ठाकुरसे न रहा गया। उसकी स्त्री एक साधारण ज़मींदारकी वेटी थी। जव जी चाहता, उस पर हाथ साफ़ कर लिया करता था। उसने खड़ाऊँ उठाकर आनंदीकी ओर ज़ोरसे फेंकी और वोला—जिसके गुमान पर भूली हुई हो, उसे भी देखूंगा और तुम्हें भी।

आनंदीने हाथसे खड़ाऊँ रोकी; सिर वच गया; पर उँगलीमें वड़ी चोट आई। क्रोधके मारे हवासे हिलते हुए पत्तेकी भाँति काँपती हुई वह अपने कमरेमें आकर खड़ी हो गई।

स्त्रीका वल और साहस, मान और मर्यादा पति तक है। उसे अपने पतिके ही वल और पुरुषत्वका घमंड होता है। आनंदी ख़ूनका घूंट पीकर रह गई।

(३)

श्रीकंठसिंह शनिवारको घर आया करते थे। वृहस्पतिको यह घटना हुई थी। दो दिन तक आनंदी कोपभवनमें रही। न कुछ खाया, न पिया, उनकी वाट देखती रही। अंतमें शनिवारको वह नियमानुकूल संध्या-समय घर आये, और वाहर वैठकर कुछ इधर-उधरकी वातें, कुछ देश-काल-संवंधी समाचार तथा कुछ नये मुक़दमों आदिकी चर्चा करने लगे। यह वार्तालाप दस वजे रात तक होता रहा। गाँवके भद्र पुरुषोंको इन वातोंमें ऐसा रस मिलता था कि खाने-पीनेकी भी सुध न रहती थी। श्रीकंठको पिंड छुड़ाना मुश्किल हो जाता था। ये दो-तीन घण्टे आनंदीने वड़े कष्टसे काटे। किसी तरह भोजनका समय आया। पंचायत

उठी। जब एकांत हुआ, तो लालबिहारीने कहा — भैया, आप ज़रा भाभीको समझा दीजियेगा कि मुंह सँभाल कर बातचीत किया करें, नहीं तो एक दिन अनर्थ हो जायगा।

बेनीमाधवसिंहने बेटेकी ओरसे साक्षी दी — हाँ, बहू-बेटियोंका यह स्वभाव अच्छा नहीं कि मर्दोंके मुँह लगें।

लालबिहारी — वह बड़े घरकी बेटी हैं, तो हम भी कोई कुर्मी-कहार नहीं हैं।

श्रीकंठने चिंतित स्वरसे पूछा — आख़िर बात क्या हुई?

लालबिहारीने कहा — कुछ भी नहीं, यों ही आप-ही-आप उलझ पड़ीं। मैकेके सामने हम लोगोंको तो कुछ समझतीं ही नहीं।

श्रीकंठ खा-पीकर आनंदीके पास गये। वह भरी बैठी थी। यह हज़रत भी कुछ तीखे थे। आनंदीने पूछा, चित्त तो प्रसन्न है?

श्रीकंठ बोले — बहुत प्रसन्न है; तुमने आजकल घरमें यह क्या उपद्रव मचा रक्खा है?

आनंदीकी तेवरियों पर बल पड़ गये, झुंझलाहटके मारे बदनमें ज्वाला-सी दहक उठी। बोली — जिसने तुमसे यह आग लगाई है, उसे पाऊँ तो मुंह झुलस दूं।

श्रीकंठ — इतनी गरम क्यों होती हो, बात तो कहो।

आनंदी — क्या कहूँ, यह मेरे भाग्यका फेर है। नहीं तो एक गँवार छोकरा, जिसको चपरासगीरी करनेका भी शऊर नहीं, मुझे खड़ाऊँसे मार कर यों न अकड़ता।

श्रीकंठ — सब साफ़-साफ़ हाल कहो तो मालूम हो। मुझे तो कुछ पता नहीं।

आनंदी — परसों तुम्हारे लाड़ले भाईने मुझसे मांस पकानेको कहा। घी हांडीमें पाव-भरसे अधिक न था। वह सब मैंने मांसमें

हर्ष हुआ। दोनों पक्षोंकी मधुर वाणियाँ सुननेके लिये उनकी आत्माएँ तलमलाने लगीं। गाँवमें कुछ ऐसे कुटिल मनुष्य भी थे, जो इस कुलकी नीति-पूर्ण गति पर मन-ही-मन जलते थे। वे कहा करते थे —श्रीकंठ अपने बापसे दबता है इसलिये वह दब्बू है। उसने विद्या पढ़ी इसलिये वह किताबोंका कीड़ा है। बेनीमाधवसिंह उसकी सलाहके बिना कोई काम नहीं करते यह उनकी मूर्खता है। इन महानुभावोंकी शुभ कामनाएँ आज पूरी होती दिखाई दीं। कोई हुक्का पीनेके बहाने और कोई लगानकी रसीद दिखाने आकर बैठ गया। बेनीमाधवसिंह पुराने आदमी थे। इन भावोंको ताड़ गये। उन्होंने निश्चय किया कि चाहे कुछ भी क्यों न हो, इन द्रोहियोंको ताली बजानेका अवसर न दूँगा। तुरंत कोमल शब्दोंमें बोले—बेटा, मैं तुमसे बाहर नहीं हूँ। तुम्हारा जो जी चाहे करो, अब तो लड़केसे अपराध हो गया।

इलाहाबादका अनुभवरहित झल्लाया हुआ ग्रेज्युएट इस घातको न समझ सका। उसे डिबेटिंग क्लबमें अपनी बात पर अड़नेकी आदत थी, इन हथकंडोंकी उसे क्या खबर? बापने जिस मतलबसे बात पलटी थी, वह उसकी समझमें न आया। बोला—मैं लालबिहारीके साथ अब इस घरमें नहीं रह सकता।

बेनीमाधव—बेटा, बुद्धिमान लोग मूर्खोंकी बात पर ध्यान नहीं देते। वह बेसमझ लड़का है। उससे जो कुछ भूल हुई, उसे तुम बड़े होकर क्षमा कर दो।

श्रीकंठ—उसकी इस दुष्टताको मैं कदापि नहीं सह सकता। या तो वही घरमें रहेगा या मैं ही। आपको यदि वह अधिक प्यारा है, तो मुझे बिदा कीजिये, मैं अपना भार आप सँभाल लूँगा। यदि मुझे रखना चाहते हैं, तो उससे कहिये, जहाँ चाहे चला जाय। बस, यह मेरा अंतिम निश्चय है।

लालविहारीसिंह दरवाजेकी चौखट पर चुपचाप खड़ा बड़े भाईकी बात सुन रहा था। वह उनका बहुत आदर करता था। उसे कभी इतना साहस नहीं हुआ था कि श्रीकंठके सामने चारपाई पर बैठ जाय, हुक्का पी ले, या पान खा ले। बापका भी वह इतना मान न करता था। श्रीकंठका भी उस पर हार्दिक स्नेह था। अपने होशमें उन्होंने कभी उसे घुड़का तक न था। जब इलाहाबादसे आते, तो उसके लिये कोई न कोई वस्तु अवश्य लाते। मुगदरकी जोड़ी उन्होंने बनवा दी थी। पिछले साल जब उसने अपनेसे ड्योढ़े जवानको नागपंचमीके दिन दंगलमें पछाड़ दिया, तो उन्होंने पुलकित होकर अखाड़ेमें ही जाकर उसे गले लगा लिया था, पाँच रुपयेके पैसे लुटाये थे। ऐसे भाईके मुँहसे आज ऐसी हृदयविदारक बात सुनकर लालविहारीको बड़ी ग्लानि हुई। वह फूट-फूटकर रोने लगा। इसमें संदेह नहीं कि वह अपने किये पर पछता रहा था। भाईके आनेसे एक दिन पहलेसे ही उसकी छाती धड़कती थी कि देखूँ, भैया क्या कहते हैं। मैं उनके सम्मुख कैसे जाऊँगा, उनसे कैसे बोलूँगा, मेरी आँखें उनके सामने कैसे उठेंगी। उसने समझा था कि भैया मुझे बुलाकर समझा देंगे। इस आशाके विपरीत आज उसने उन्हें निर्दयताकी मूर्ति बने हुए पाया। वह मूर्ख था; पर उसका मन कहता था कि भैया मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं। यदि श्रीकंठ उसे अकेलेमें बुलाकर दो-चार कड़ी बातें कह देते, इतना ही नहीं, दो-चार तमाचे भी जमा देते, तो कदाचित् उसे इतना दुःख न होता। पर भाईका यह कहना कि अब मैं इसकी सूरत नहीं देखना चाहता, लालविहारीसे न सहा गया। वह रोता हुआ घरमें आया। कोठरीमें जाकर कपड़े पहने, आँखें पोंछीं, जिससे कोई यह न समझे कि रोता था। तब आनंदीके द्वार पर आकर बोला—भाभी, भैयाने निश्चय किया है कि वह मेरे साथ इस घरमें न रहेंगे। वे अब मेरा मुँह नहीं देखना चाहते।

इसलिये मैं अब जाता हूँ। उन्हें फिर मुँह न दिखाऊँगा। मुझसे जो कुछ अपराध हुआ, उसे क्षमा करना।

यह कहते-कहते लालबिहारीका गला भर आया।

(४)

जिस समय लालबिहारीसिंह सिर झुकाये आनंदीके द्वार पर खड़ा था, उसी समय श्रीकंठसिंह भी आँखें लाल किये बाहरसे आये। भाईको खड़ा देखा तो घृणासे आँखें फेर लीं और कतराकर निकल गये। मानो उसकी परछाँहीसे भी दूर भागते हों।

आनंदीने लालबिहारीकी शिकायत तो की थी, लेकिन अब मनमें पछता रही थी। वह स्वभावसे ही दयावती थी। उसे इसका तनिक भी ध्यान न था कि बात इतनी बढ़ जायगी। वह मनमें अपने पति पर झुंझला रही थी कि यह इतने गरम क्यों होते जाते हैं। उस पर यह भय भी लगा हुआ था कि कहीं मुझसे इलाहाबाद चलनेको कहें, तो कैसे क्या करूँगी। इस बीचमें जब उसने लालबिहारीको दरवाजे पर खड़े यह कहते सुना कि अब मैं जाता हूँ, मुझसे जो कुछ अपराध हुआ उसे क्षमा करना, तो उसका रहा-सहा क्रोध भी पानी हो गया। वह रोने लगी। मनका मैल धोनेके लिये नयन-जलसे उपयुक्त और कोई वस्तु नहीं है।

श्रीकंठको देखकर आनंदीने कहा—लाला बाहर खड़े बहुत रो रहे हैं।

श्रीकंठ—तो मैं क्या करूँ?

आनंदी—भीतर बुला लो। मेरी जीभमें आग लगे! मैंने कहाँसे यह झगड़ा उठाया?

श्रीकंठ—मैं न बुलाऊँगा।

आनंदी — पछताओगे। उन्हें वहुत ग्लानि हो गई है। ऐसा न हो कहीं चल दें।

श्रीकंठ न उठे। इतनेमें लालविहारीने फिर कहा — भाभी, भैयासे मेरा प्रणाम कह दो। वे मेरा मुंह नहीं देखना चाहते, इसलिये मैं भी अपना मुंह नहीं दिखाऊँगा।

लालविहारी इतना कहकर लौट पड़ा, और शीघ्रतासे दरवाजेकी ओर वढ़ा। अंतमें आनंदी कमरेसे निकली और उसका हाथ पकड़ लिया। लालविहारीने पीछे फिरकर देखा, और आँखोंमें आँसू भरे वोला — मुझे जाने दो।

आनंदी — कहाँ जाते हो?

लालविहारी — जहाँ कोई मेरा मुंह न देखे।

आनंदी — मैं न जाने दूंगी।

लालविहारी — मैं तुम लोगोंके साथ रहने योग्य नहीं हूँ।

आनंदी — तुम्हें मेरी सौगंद, अव एक पग भी आगे न वढ़ना।

लालविहारी — जव तक मुझे यह न मालूम हो जाय कि भैयाका मन मेरी तरफ़से साफ़ हो गया, तव तक मैं इस घरमें कदापि न रहूँगा।

आनंदी — मैं ईश्वरकी साक्षी देकर कहती हूँ कि तुम्हारी ओरसे मेरे मनमें तनिक भी मैल नहीं है।

अव श्रीकंठका हृदय भी पिघला। उन्होंने वाहर आकर लालविहारीको गले लगा लिया। दोनों भाई खूव फूट-फूटकर रोये। लालविहारीने सिसकते हुए कहा — भैया, अव कभी मत कहना कि तुम्हारा मुंह न देखूंगा। इसके सिवा आप जो दंड देंगे, वह मैं सहर्ष स्वीकार करूँगा।

श्रीकंठने काँपते हुए स्वरसे कहा — लल्लू इन वातोंको विलकुल भूल जाओ। ईश्वर चाहेगा तो अव फिर ऐसा अवसर न आवेगा।

वेनीमाधवसिंह वाहरसे आ रहे थे। दोनों भाइयोंको गले मिलते देखकर आनंदसे पुलकित हो गये। वोल उठे — वड़े घरकी वेटियाँ ऐसी ही होती हैं। विगड़ता हुआ काम वना लेती हैं।

गाँवमें जिसने यह वृत्तान्त सुना, उसीने इन शव्दोंमें आनंदीकी उदारताको सराहा — "वड़े घरकी वेटियाँ ऐसी ही होती हैं।"

प्रश्न —

१. 'वड़े घरकी वेटी' नामक कहानीमें छोटी कहानीके कौन कौनसे लक्षण मौजूद हैं।

२. आनंदी और श्रीकंठका चरित्रचित्रण कीजिये।

३. प्रेमचंदजीकी कहानी-कलाका वर्णन कीजिये।

५

तुलसीदासजी

[महात्मा गांधी]

[आजकल देशमें कौन ऐसा होगा, जो आपको जानता न हो? देशकी जितनी भी समस्यायें हैं, उन सब पर आपने विचार प्रकट किये हैं। देशके लिये एक भाषाकी ज़रूरतको समझनेवाले आप सबसे पहले आदमी थे। आपने राष्ट्रभाषा प्रचारके लिये जितना काम किया है उतना किसीने नहीं किया।

आप रूढ़ अर्थमें लेखक न थे। जैसे जैसे ज़रूरत पड़ती थी आप अपने विचार 'यंग अिंडिया' और 'नवजीवन' के द्वारा प्रकट करते रहते थे। और 'नवजीवन' के बन्द हो जाने पर 'हरिजन', 'हरिजनबन्धु' और 'हरिजनसेवक' के द्वारा। राष्ट्रभाषाके विकासके लिये आप हिन्दीमें भी लिखते थे। 'तुलसीदास' ऐसा ही एक लेख है। पहले आपने राष्ट्रभाषाको हिन्दी नाम दिया, मगर जब हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनने इसकी व्याख्याको संकुचित कर दिया, तब आपने राष्ट्रभाषाका नाम हिन्दुस्तानी रखा। आपकी राष्ट्रभाषाकी व्याख्या यह है:

'हिन्दुस्तानी वह भाषा है जिसे उत्तर हिन्दुस्तानके शहरों और गाँवोंके हिन्दू, मुसलमान आदि सब लोग बोलते हैं, समझते हैं, और आपसके कारबारमें बरतते हैं और जिसे नागरी और फ़ारसी दोनों लिखावटोंमें लिखा-पढ़ा जाता है तथा जिसके साहित्यिक (अदबी) रूप आज हिन्दी और उर्दूके नामसे पहचाने जाते हैं।']

भिन्न-भिन्न मित्र पूछते हैं—

"रामायणको आप सर्वोत्तम ग्रंथ मानते हैं, परन्तु समझमें नहीं आता क्यों? देखिये, तुलसीदासजीने स्त्री-जातिकी कितनी निन्दा की

है। वालि-वधका कैसा समर्थन किया है। विभीषणके देशद्रोहकी किस क़दर प्रशंसा की है। सीताजी पर घोर अन्याय करनेवाले रामको अवतार बताया है। ऐसे ग्रंथमें आप कौनसा सौंदर्य देख पाते हैं? तुलसीदासजीके काव्य-चातुर्यके लिये तो शायद आप रामायणको सर्वोत्तम ग्रंथ नहीं समझते होंगे? यदि ऐसा ही है, तो कहना पड़ेगा कि आपको काव्य-परीक्षाका कोई अधिकार ही नहीं।"

उपरोक्त सब सवाल एक ही मित्रके नहीं हैं, परन्तु भिन्न-भिन्न मित्रोंने भिन्न-भिन्न समय पर जो कुछ कहा है और लिखा है, उसका यह सार है। यदि ऐसी एक एक टीकाको लेकर देखें, तो सारीकी सारी रामायण दोषमय सिद्ध की जा सकती है। सन्तोष यही है कि इस तरह प्रत्येक ग्रंथ और प्रत्येक मनुष्य दोषमय सिद्ध किया जा सकता है। एक चित्रकारने अपने टीकाकारोंको उत्तर देनेके लिये अपने चित्रको प्रदर्शनीमें रखा और नीचे इस तरह लिखा, 'इस चित्रमें जिसको जिस जगह दोष प्रतीत हो, वह उस जगह अपनी कलमसे चिन्ह कर दे।' परिणाम यह हुआ कि चित्रके अंग-प्रत्यंग दोषपूर्ण बताये गये। मगर वस्तुस्थिति यह थी कि वह चित्र अत्यंत कलायुक्त था। टीकाकारोंने तो वेद, बाइबल, और क़ुरानमें भी बहुतेरे दोष बताये हैं। परन्तु उन ग्रंथोंके भक्त उनमें दोषोंका अनुभव नहीं करते। प्रत्येक ग्रंथकी परीक्षा पूरे ग्रंथके रहस्यको देखकर ही की जानी चाहिये। यह बाह्य परीक्षा है। अधिकांश पाठकों पर ग्रंथविशेषका क्या असर हुआ है, यह देखकर ही ग्रंथकी आन्तरिक परीक्षा की जाती है। किसी भी साधनसे क्यों न देखा जाय, रामायणकी श्रेष्ठता ही सिद्ध होती है। ग्रंथको सर्वोत्तम कहनेका यह अर्थ कदापि नहीं कि उसमें एक भी दोष नहीं है। परन्तु रामचरितमानसके लिये यह दावा अवश्य है कि उससे लाखों मनुष्योंको शान्ति मिली है। जो लोग ईश्वर-विमुख थे, वे ईश्वरके सम्मुख गये हैं, और आज भी जा रहे हैं। मानसका प्रत्येक पृष्ठ भक्तिसे भरपूर है। मानस अनुभव-जन्य ज्ञानका भण्डार है।

यह बात ठीक है कि पापी अपने पापका समर्थन करनेके लिये रामचरितमानसका सहारा लेते हैं। इससे यह सिद्ध नहीं हो सकता कि वे लोग रामचरितमानसमें से अकेले पापका पाठ ही सीखते हैं। मैं स्वीकार करता हूं कि तुलसीदासजीने स्त्रियों पर अनिच्छासे अन्याय किया है। इसमें और ऐसी ही अन्य बातोंमें तुलसीदासजी अपने युगकी प्रचलित मान्यताओंसे परे नहीं जा सके थे। अर्थात् तुलसीदासजी सुधारक नहीं, बल्कि भक्त-शिरोमणि थे। इसमें हम तुलसीदासजीके दोषोंका नहीं, परन्तु उनके युगके दोषोंका दर्शन अवश्य करते हैं।

ऐसी दशामें सुधारक क्या करें? क्या उनको तुलसीदासजीसे कुछ सहायता नहीं मिल सकती? अवश्य मिल सकती है। रामचरित-मानसमें स्त्री-जातिकी काफ़ी निन्दा मिलती है, परन्तु उसी ग्रंथ द्वारा सीताजीके पुनीत चरित्रका भी हमें परिचय मिलता है। विना सीताके राम कैसे? रामका यश सीताजी पर निर्भर है। सीताजीका रामजी पर नहीं। कौशल्या, सुमित्रा आदि भी मानसके पूजनीय पात्र हैं। शबरी और अहल्याकी भक्ति आज भी सराहनीय है। रावण राक्षस था, मगर मंदोदरी सती थी। ऐसे अनेक दृष्टांत इस पवित्र भंडारमें से मिल सकते हैं। मेरे विचारमें इन सब दृष्टांतोंसे यही सिद्ध होता है कि तुलसीदासजी ज्ञानपूर्वक स्त्री-जातिके निन्दक नहीं थे। ज्ञानपूर्वक तो वह स्त्री-जातिके पुजारी ही थे। यह तो स्त्रियोंकी बात हुई। परन्तु बालि-वधादिके बारेमें भी दो मतोंकी गुंजाइश है। विभीषणमें तो मैं कोई दोष नहीं पाता हूँ। विभीषणने अपने भाईके साथ सत्याग्रह किया था। विभीषणका दृष्टांत हमें यह सिखाता है कि अपने देश या अपने शासकके दोषोंके प्रति सहानुभूति रखना या उन्हें छिपाना देशभक्तिके नामको लजाना है। इसके विपरीत देशके दोषोंका विरोध करना सच्ची देशभक्ति है। विभीषणने रामजीकी सहायता करके देशका भला ही किया था। सीताजीके

प्रति रामचन्द्रजीके वरतावमें निर्दयता नहीं थी, उसमें राजधर्म और पति-प्रेमका द्वंद्वयुद्ध था।

जिनके दिलमें इस सम्बन्धकी शंकाएँ शुद्ध भावसे उठें, उन्हें मेरी सलाह है कि वे मेरे या किसी औरके अर्थको यंत्रवत् स्वीकार न करें। जिस विषयमें हृदय शंकित है, उसे छोड़ दें। सत्य, अहिंसादिकी विरोधिनी किसी वस्तुको स्वीकार न करें। रामचन्द्रने छल किया था, इसलिये हम भी छल करें, यह सोचना औंधा पाठ पढ़ना है। यह विश्वास रखकर कि रामादि कभी छल नहीं कर सकते, हम पूर्ण पुरुषका ही ध्यान करें और पूर्ण ग्रंथका ही पठन-पाठन करें। परन्तु 'सर्वारंभा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः' न्यायानुसार सब ग्रंथ दोषपूर्ण हैं, यह समझकर हंसवत् दोषरूपी नीरको निकाल फेंके और गुणरूपी क्षीर ही ग्रहण करें। जिस तरह अपूर्णमें संपूर्णकी प्रतिष्ठा करना, गुण-दोषका प्रथक्करण करना हमेशा व्यक्तियों और युगोंकी परिस्थिति पर निर्भर रहेगा। स्वतंत्र संपूर्णता केवल ईश्वरमें ही है और वह अकथनीय है।

प्रश्न —

१. 'प्रत्येक ग्रंथकी परीक्षा पूरे ग्रंथके रहस्यको देखकर ही की जानी चाहिये।' समझाइये।
२. 'तुलसीदासजी ज्ञानपूर्वक स्त्री-जातिके निंदक नहीं थे। ज्ञानपूर्वक तो वे स्त्री-जातिके पुजारी ही थे।' इसे विस्तारसे समझाइये।
३. किसी ग्रंथके वारेमें दिलमें उठती शंकाओंको दूर करनेके लिये गांधीजीने क्या सलाह दी है?
४. नोंध लिखिये :—
   रामचरितमानस; तुलसीदासजी; विभीषण।
५. तुलसीदासजी सुधारक थे या भक्त-शिरोमणि? मिसालें देकर बताइये।

६

फ़ायदा क्या है ?

[आचार्य विनोबा भावे]

[आप महाराष्ट्रीय संत हैं। कई वर्षों तक साबरमती आश्रममें आप गांधीजीके साथ रहे। देशकी भाषाओंको सीखनेका आपको शौक़ है। आपका संस्कृत और अरबीका अध्ययन गहरा है। सन् १९४० में 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' के समय महात्माजीने आपको पहला सत्याग्रही चुनकर आपकी शक्तिका परिचय देशको कराया।

'सर्वोदय' मासिकमें आप हिन्दीमें लिखते हैं। आपके लेख मनन करनेके क़ाबिल होते हैं। आप बड़े समाज-सुधारक हैं और अहिंसक ढंगसे समाज-सुधारके हामी हैं।

वर्धाके पास पवनारमें आपका आश्रम है। आप लेखक हैं, चिंतक हैं और मौलिक विचारक हैं।]

कहते हैं, रेखागणितकी रचना पहले-पहल यूक्लिडने की। वह ग्रीस (यूनान)का रहनेवाला था। उसके समयमें ग्रीसके सब शिक्षितोंके दिमाग़ राजनीतिसे भर गये थे—या यों कहिये कि उनके दिमाग़ोंमें राजनीतिके पत्थर भरे हुए थे। इस वजहसे रेखागणितके क़द्रदाँ दुर्लभ हो गये थे और यूक्लिड तो रेखागणित पर मुग्ध था। फिर भी जैसे आज चरखे पर मुग्ध एक मानवने बहुतेरे राजनीति-विशारदोंको चक्करमें डाल दिया है, वैसे ही यूक्लिडने भी बहुतेरे राजनीतिज्ञोंको रेखाएँ खींचनेमें लगा दिया था। रोज यूक्लिडके घर पर

रेखागणितके शिक्षार्थियोंका जमघट लगता और वह उन्हें अपना आविष्कार कुशलतापूर्वक समझाता।

बहुतेरे राजनीतिज्ञोंको यूक्लिडकी ओर आकर्षित होते देख एक राजाके मनमें आया, 'हम भी चल देखें, कुछ फ़ायदा होगा।' उसने हफ़्ते भर यूक्लिडके पास रेखागणित सीखा। अंतमें उसने यूक्लिडसे पूछा, 'मुझे आज रेखागणित सीखते सात दिन हो गये, पर यह समझमें न आया कि इससे फ़ायदा क्या है?' यूक्लिडने गंभीरतापूर्वक अपने एक शिष्यसे कहा, 'सुनोजी, इन्हें चार आने रोज़के हिसाबसे सात दिनके पौने दो रुपये दे दो।' फिर राजाकी ओर मुखातिब होकर कहा, 'तुम्हारा इस हफ़्तेका काम पूरा हो गया। कलसे तुम कहीं और काम ढूँढ़ो।' क्या वह राजनीतिकुशल राजा झेंपनेके बजाय पौने दो रुपये पल्ले पड़नेसे खुश हुआ होगा? हम लोगोंकी मनोवृत्ति उस ग्रीक राजाकी-सी बन गई है।

फ़ायदा देखनेकी आदत

हर बातमें फ़ायदा देखनेकी बहुतोंको आदत पड़ गई है। सूत कातनेसे क्या फ़ायदा है, इससे लेकर स्वराज्य हासिल होने तकके फ़ायदेके बारेमें बीसियों सवाल होते हैं। ये फ़ायदावादी लोग अपनी फ़ायदेवाली अक्लको ज़रा और आगे हाँक ले जायँ, तो तत्त्वज्ञानकी ठेठ चोटी पर पहुँच जायेंगे। तत्त्वज्ञानके शिखरसे ये लोग केवल एक ही प्रश्नके पीछे हैं और वह प्रश्न है—"फ़ायदेसे भी क्या फ़ायदा है?" एक लड़का अपने बापसे कहता है, "बाबूजी, गाय-भैंसका फ़ायदा समझमें आता है कि उनसे हमें रोज़ दूध पीनेको मिलता है; लेकिन कहिये तो इन बाघ-बघेरों और साँपोंके होनेसे क्या फ़ायदा है?" बाप जवाब देता है, "समूची सृष्टि मनुष्यके फ़ायदेके लिये ही है, इस बेकारकी ग़लतफ़हमीमें हम न रहें, यही इनका फ़ायदा है।"

कालिदासने एक जगह मनुष्यको 'उत्सव-प्रिय' कहा है। कालिदासका मनुष्य-स्वभावका ज्ञान गहरा था। और इसीसे वह कवि कहलानेके अधिकारी हुए। सभीका अनुभव है कि मनुष्यको उत्सव प्रिय है, लेकिन क्यों प्रिय है? पाठशालाके लड़कोंको रविवारकी छुट्टी क्यों प्यारी लगती है? छः दिन दीवारोंके घेरेमें घिरे रहनेके बाद रविवारको जरा स्वच्छंदतासे साँस ले पाते हैं इस कारण। मनुष्यको उत्सव प्यारा क्यों है, इसका भी उत्तर ऐसा ही है। दुःखोंसे दबा हुआ हृदय उत्सवके कारण हलका हो जाता है। हमारे घर अट्ठारह बिस्वे दारिद्रय रहता है, इसीसे लड़केका ब्याह रचने पर हम जेवनारमें अट्ठारह दूना छत्तीस व्यंजन बनाना नहीं भूलते। सारांश यह है कि मनुष्य उत्सव-प्रिय है, यह उसके जीवनके दुःखमय होनेका सबूत है। वैसे ही आज जो हमारी बुद्धि सिर्फ़ फ़ायदावादी बन गई है, यह हमारे राष्ट्रके महान बौद्धिक दिवालियेपनका सबूत है।

इसका कुपरिणाम

हमेशा फ़ायदेकी शरणमें जानेकी बान पड़ जानेसे हमारे समाजमें साहसका ही अभाव-सा हो रहा है। इसके कारण ब्राह्मणवृत्ति, क्षात्रवृत्ति और वैश्यवृत्ति लुप्त-सी हो रही है। ब्राह्मणके मानी हैं साहसकी साक्षात् प्रतिमा। मृत्युके परले पारकी मौज लेनेके निमित्त जीवनकी आहुति देनेवाला ब्राह्मण कहलायेगा। फ़ायदा कहेगा, "मौतके बादकी बात किसने देखी है? हाथका घड़ा पटककर बादलका भरोसा क्यों करें?" फ़ायदेके कोशमें साहस शब्द मिलना ही संभव नहीं। और मिल भी गया तो उसका अर्थ लिखा होगा 'मूर्खता'! यदि फ़ायदेके कोशसे जीवन-गीताकी संगति बिठाई जाय, तो फलत्यागकी अपेक्षा त्यागका फल क्या है यह प्रश्न पैदा हो जायगा। ऐसी स्थितिमें सच्ची ब्राह्मणवृत्तिके लिये ठौर ही कहाँ रहेगा? "त्याग करना, साहस करना, यह सब ठीक है" फ़ायदावादी कहता है—"पर त्यागके लिये

ही त्याग करनेको कहते हो ?" "नहीं, त्यागके लिये त्याग नहीं कहता — फ़ायदेके लिये त्याग सही।" "पर वह फ़ायदा कब मिलना चाहिये, इसकी कोई मियाद बताइयेगा या नहीं ?" "तुम्हारा कोई क़ायदा है कि फ़ायदा कितने दिनमें मिलना चाहिये ?" वह कहेगा — "त्यागके दो दिन पहले मिल जाय तो अच्छा है।" समर्थ गुरु रामदासने 'लोगोंके लालची स्वभाव' का वर्णन करते हुए कार्यारंभमें देव (ईश्वर) का नाम लेना चाहिये, इस कथनका अर्थ फ़ायदेके कोशके अनुसार किया है — "कार्यारंभी देव, अर्थात् कामके शुरूमें कुछ तो देव (दो)।" सारांश, फल ही देव है और वह काम करनेके पूर्व मिलना चाहिये, इसका नाम है बाक़ायदा तत्त्वज्ञान ! जहाँ (बेचारे) देव (ईश्वर) की यह दशा है वहाँ ब्राह्मणवृत्तिकी बात ही कौन पूछता है ?

परलोकके लिये इस लोकको छोड़नेवाला साहस तो सरासर पागलपन है, इसलिये उसका तो विचार ही नहीं करना है। इससे उतरकर हुई क्षात्रवृत्ति उर्फ़ मिलावटी पागलपन। इहलोकमें बालबच्चे, अड़ोसी-पड़ोसी या देशकी रक्षाके लिये मरनेकी तैयारीका नाम है क्षात्रवृत्ति। पर 'आप मरे तो जग डूबा' यह फ़ायदेका सूत्र लगाकर देखिये, तो इस मिलावटी पागलपनका मतलब समझमें आ जायगा। राष्ट्रकी रक्षा क्यों ? अथवा स्वराज्य क्यों ? मेरे फ़ायदेके लिये। और जब मैं ही चल बसा तो फिर स्वराज्य लेकर क्या होगा ? यह भावना आई कि क्षात्रवृत्तिका साहस विदा हुआ।

बाकी रही वैश्यवृत्ति। पर वैश्यवृत्तिमें भी कुछ कम साहस नहीं चाहिये। अंग्रेज़ोंने दुनियाभरमें अपना रोज़गार फैलाया तो बिना हिम्मतके नहीं फैलाया है। इंग्लैंडमें कपासकी एक डोंडी भी नहीं पैदा होती और आधेसे अधिक हिन्दुस्तानको कपड़ा देनेकी करामात उसने कर दिखाई। कैसे ? इंग्लैण्डके इतिहासमें समुद्री यात्राओंके प्रकरण

भरे पड़े हैं। कभी अमेरिकाकी यात्रा तो कभी हिन्दुस्तानका सफ़र, कभी रूसकी परिक्रमा तो कभी सु-आशा अंतरीपके दर्शन; कभी नील नदीके उद्‌गमकी तलाश है तो कभी उत्तरी ध्रुवके किनारे पहुँचे हैं। यों अनेक संकटभरे साहसोंके बाद ही अंग्रेजोंका व्यापार सिद्ध हुआ है। यह सच है कि यह व्यापार अनेक राष्ट्रोंकी गुलामीका कारण हुआ, इससे आज वह उन्हींकी जड़ काट रहा है। पर जो हो, साहसी स्वभावको तो सराहना ही होगा। हममें इस वैश्यवृत्तिका साहस भी बहुत कुछ नहीं दिखाई देता। कारण फ़ायदा नहीं दीखता।

जब तक तकलीफ़ सहनेकी तैयारी नहीं होती, तब तक फ़ायदा दिखनेका ही नहीं। फ़ायदेकी इमारत नुक़सानकी बूपमें बनी है।

प्रश्न —

१. फ़ायदा ही फ़ायदा देखनेकी आदतसे हमारा कुछ फ़ायदा हुआ है?
२. ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यके क्या मानी हैं?
३. साहसका अभाव क्यों पैदा होता है?

७

सरोजिनी नायडू

[श्री नानुभाई बारोट]

[खेड़ा जिलेके हिंदी-हिन्दुस्तानीके आदि प्रचारकोंमें से आप एक हैं। आप नड़ियादके रहनेवाले हैं। एक वकील होने पर भी आपने वकालत करना पसंद नहीं किया। हिंदी और उर्दूके आप अभ्यासी हैं। आप बड़ी मिलनसार तबीयतके हैं। आजकल आप गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबादमें काम कर रहे हैं।]

हमारे देशका शायद ही कोई पढ़ा-लिखा आदमी ऐसा होगा कि जो सरोजिनी नायडूके नामसे वाकिफ़ न हो। ये पैदा हिन्दुस्तानमें हुईं, मगर इनका संबंध सारे मानव-समाजसे रहा और इन्होंने जीवन-भर मानवताके लिये काम किया। देशको गुलामीकी जंजीरोंमें जकड़ा हुआ देखकर ये व्याकुल हो उठीं, और अपनी सबसे प्रिय वस्तु — कविताको और ऐश-आरामको छोड़ आज़ादीकी लड़ाईमें सैनिक हो गईं और कई बार जेल गईं। थीं तो ये बंगाली मगर इनका जन्म दक्षिणमें १३ फरवरी, सन् १८७९ को हैदराबादमें हुआ।

इनके पुरखे पूर्व बंगालके चट्टोपाध्याय ब्राह्मण थे। ये लोग काव्य-शास्त्रमें पारंगत थे और विद्याके प्रेमी थे। सरोजिनीके पिता अघोरनाथ चट्टोपाध्याय एडिनबरो युनिवर्सिटीसे 'डॉक्टर ऑफ सायन्स' की उपाधि हासिल करके हैदराबादमें बड़े ओहदे पर आ गये। इनकी प्रकांड विद्वत्ता और सज्जनताने हैदराबादके लोगोंके दिल मोह लिये। इनके मकान पर हर वक़्त विद्वानोंकी मंडली लगी रहती थी।

सरोजिनीकी माताजी, वरदासुन्दरीदेवी, स्वभावकी सरल और मायालु थीं। इन्होंने अपने बालकोंको हर तरहकी आज़ादी दे रखी थी। अपनी जवानीमें ये बंगालीमें कविताएँ भी लिखती थीं। इनके बच्चोंको कविता विरसेमें मिली। इनका एक लड़का हरेन चट्टोपाध्याय कवि है और लड़की, सरोजिनी, कवि और देशनेता हुई। बापकी विद्वत्ता और माँकी दरियादिलीका असर बच्चों पर खूब पड़ा।

इनके पिताजीने सरोजिनीको छोटी उम्रमें ही स्कूलमें दाखिल कर दिया। ये नौ सालकी होंगी कि इनके जीवनमें एक अजीब घटना हुई। माँ-बापकी इच्छा थी कि सरोजिनी अंग्रेज़ी खूब पढ़े। मगर ये अंग्रेज़ीसे घबराती थीं और उसके पढ़नेसे जी चुराती थीं। एक बार इन्होंने अपना अंग्रेज़ी सबक़ याद नहीं किया। इस पर बापको जो ग़ुस्सा आया तो लड़कीको एक कोठरीमें बन्द कर दिया। इस प्रसंगकी बाबत लिखते हुए सरोजिनीने लिखा है कि "इस कड़ी सज़ाने मुझे भाषाविद् बना दिया।" तबसे इन्हें अंग्रेज़ीका शौक़ पैदा हो गया और वह इतना बढ़ा कि इनकी गिनती अंग्रेज़ी भाषाके विद्वानोंमें की जाने लगी।

इनके पिताकी ख्वाहिश थी कि ये गणितविद्या या सायन्समें नाम पैदा करें। मगर जो होनी होती है वह होकर ही रहती है। एक रोज़ अलजब्रेके एक सवालसे तंग आकर ग्यारह सालकी कमसिन लड़कीने एक कविता अंग्रेज़ीमें लिख डाली और तबसे गणित और विज्ञान ख़त्म हो गये। अंग्रेज़ीमें यह इनकी पहली कविता थी। दो साल बाद मद्रास युनिवर्सिटीसे मैट्रिक्युलेशन पास कर लिया। मगर इनका दिल परीक्षाओं और उपाधियोंसे घबराता था। ये किसी कालिजमें दाखिल न हुईं। और बड़ी मेहनतसे अंग्रेज़ीका अभ्यास घर पर ही करना शुरू किया। यहाँ तक कि ये बीमार पड़ गईं और डॉक्टरोंके मना करने पर भी अंग्रेज़ी पढ़ती रहीं। कुछ समय बाद इन्होंने दो हज़ार सतरोंका एक ड्रामा और एक लंबा काव्य लिखा।

सोलह सालकी उम्रमें रियासतकी ओरसे वज़ीफ़ा मिलने पर ये विलायत गईं। वहाँ जाकर इन्होंने लंदन और केम्ब्रिजके स्त्रियोंके महाविद्यालयमें बड़ी लगनसे अभ्यास शुरू किया। नतीजा यह हुआ कि ये बीमार पड़ गईं।

विलायतमें इनकी मुलाक़ात अंग्रेज़ी साहित्यके समर्थ आलोचक श्री एडमंड गोस जैसे सज्जनसे हुई। गोस साहबने इनकी कविताएँ पढ़ीं। इनके काव्योंके ऊँचे भाव देखकर वे हैरान रह गये और उन्होंने इस कमउम्र हिन्दी कवयित्रीकी खूब तारीफ़ की। इनके शील और रहन-सहनको देखकर वे बहुत खुश हुए। इनकी प्रतिभा, इनका कल्पनाविहार और शब्द-लालित्य देखकर इनके काव्यों पर गोस साहब मोहित हो गये। लेकिन गोस थे सच्चे आलोचक। सरोजिनीके काव्योंका अंग्रेजी रंगढंग उन्हें अच्छा न लगा और उन्होंने (गोस साहबने) सरोजिनीको हिन्दके लोगोंके जीवन, उनके सुख-दुःख और हिन्दकी शोभा-सुषमाको अपने गीतोंमें गानेकी सलाह दी। सरोजिनीने उनकी बातको माना और तबसे इनके काव्योंमें हिन्दीपन आ गया।

इनकी कवितामें भारी शक्ति है। सन् १९३१ की बात है। महात्मा गांधी बड़े लाट अरविनसे मिलने गये। दोनों विचारमें पड़ गये कि बात कैसे शुरू की जाय। आख़िर महात्माजीने अपनी किताबमेंसे एक कविता अरविनको सुनानी शुरू की। अरविन ग़ौरसे सुनने लगे और दोनोंकी बातचीत शुरू हुई। यह कविता इनकी ही थी। इनके तीन काव्यसंग्रह छपे हैं: (१) दि गोल्डन थ्रेशोल्ड (२) दि बर्ड ऑफ टाइम (३) दि ब्रोकन विंग। गोल्डन थ्रेशोल्डकी आज तक दस आवृत्तियां निकल चुकी हैं। इस काव्य-संग्रहकी प्रस्तावना प्रसिद्ध आलोचक मिस्टर सिमन्सने लिखी है और इनकी कविताकी खूबियोंको जगतके सामने रखा है।

ये सन् १८९८ में विलायतसे वापस लौटीं और इन्होंने डॉ० गोविंद राजुलू नायडूके साथ शादी करनेका फ़ैसला किया। ब्राह्मण

लड़कीका व्याह अब्राह्मणके साथ हो इसका विचार तो उस समय कोई कर ही नहीं सकता था। रिश्तेदारोंने इसका खूब विरोध किया, मगर ये अपने फ़ैसले पर जमी रहीं। यह अपने ढंगका पहला विवाह था। और इस विवाहने दूसरे इस तरहके विवाहोंके लिये रास्ता खोल दिया। समाज-सुधारमें यह इनका पहला क़दम था।

इनके दो बेटे — जयसूर्य और रणधीर — और दो बेटियाँ — पद्मजा और लीलमणि हैं। उनकी परवरिश इन्होंने अपने ढंगसे की और वे सब भारतके कल्याणमें अपना-अपना हिस्सा दे रहे हैं।

हैदराबादमें इनके मकानके दरवाज़े सब तरहके लोगोंके लिये खुले रहे। वहाँ पुराने रीतरिवाजोंके दिलदादा और भारतकी प्राचीन संस्कृतिके संरक्षक भी पधारते थे और पश्चिमकी विद्या और विज्ञानमें ओतप्रोत हुए अंग्रेज़ीदाँ भी आते थे। वहाँ परदानशीन औरतें और ऊँची एड़ीवाले बूट पहननेवाली रमणियाँ भी पहुँचती थीं। सचमुच इनका घर एक सामाजिक मिलन-स्थान-सा बना रहता था।

कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुरने इनके कविताप्रिय जीवनको देश-सेवाका नया चोला पहनाया। रविबाबूने कहा कि जब घर जलता हो तब कविको प्रकृतिके गीत गाते घूमते नहीं रहना चाहिये। डोल लेकर कुएँसे पानी निकालना चाहिये। तबसे इन्होंने काव्यको अलविदा कहा और इनके जीवनने एक नया पल्टा खाया। कविताका झरना बढ़ना बन्द हो गया और देशसेवाकी लगन सर पर सवार हुई।

कविताकी जगह देशसेवाने ली। हिन्दुस्तानके लोगोंका दुःखदर्द मिटाना और उनके आँसू पोंछना इनके जीवनका कार्य बना। ये हैदराबाद छोड़कर बम्बईमें रहने लगीं।

गोपालकृष्ण गोखलेके जीवनका इन पर बहुत असर पड़ा और उन्हींके रास्ते पर चलना इन्होंने भी पसन्द किया। हिन्दुस्तानको अंधकारकी नींदसे जगानेके लिये इन्होंने कश्मीरसे कन्याकुमारी तक

कई वार दौरा किया। अनगिनत सभाओंमें देशकी ज़रूरतोंको लोगोंके सामने रखा। इन्होंने अपनी दिल चीरनेवाली मगर मीठी वानीसे लोगोंको अपनी ओर खींच लिया। इनका कंठ मृदु और कोमल था। जव वोलती थीं तो इनके मुँहसे फूल झड़ते थे और लोग मुग्ध होकर इन्हें सुनते रहते थे। भाषण देनेकी इनकी छटा निराली थी। संसारके मशहूर वक्ताओंमें इनका स्थान था। भाषणमें समयके अनुसार उतार-चढ़ाव, कोमलता और भव्यता, रोष और ग्लानि लोगोंके दिल पर भारी असर करते थे।

हिन्दुस्तानी लोगोंके वारेमें फैली ग़लतफ़हमियोंको दूर करनेके लिये इन्होंने अफ्रीका और अमेरिकाका भ्रमण किया। दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दियों परके अत्याचार सुनकर इनकी आत्मा व्याकुल हो गई। उनके केसको मज़वूत वनानेके लिये इन्होंने सारे देशका भ्रमण किया। और फिर वहाँकी (दक्षिण अफ्रीकाकी) हिन्दी राष्ट्रीय महासभाकी प्रमुख वनकर गईं।

इनकी सेवाओंको देखते हुए देशने सन् १९२५ में इनको कांग्रेसका सभापति चुना। मिसेज़ एनी वेसेंटके वाद ये ही एक ऐसी स्त्री थीं कि जिन्हें देशने यह माननीय पद दिया।

महात्मा गांधीकी तो ये शिष्या, नम्र सेविका और सलाहकार थीं। कांग्रेसने सन् १९३१ में एक राउण्ड टेविल कान्फरेन्समें महात्माजीके साथ इन्हें विलायत भी भेजा। सन् १९४२ के 'हिन्द छोड़ो' आन्दोलनमें महात्माजीके साथ-साथ इनको भी सरकारने आगाखान महलमें वन्द रखा।

तवीअत विगड़ने पर १९४४ में गांधीजी वम्वईमें जुहूमें आराम कर रहे थे। उनसे मिलने वहुत लोग आया करते थे और उन्हें आराम नसीव नहीं होता था। इन्होंने महात्माजीसे कहा कि आपको कोई पहरेदार चाहिये। महात्माजीने हँसीमें कहा, "अगर तुम्हारे जैसी कोई समझदार मिल जाय तो वहुत अच्छा है।" ये फौरन्

उनकी पहरेदार बन गईं। गांधीजीकी कुटियाके बाहर कुर्सी डाले बैठी रहतीं और किसी भी बड़े या छोटे, अपने या परायेको उनके पास न जाने देतीं। बड़ी चुस्ती-मुस्तैदीके साथ इन्होंने यह काम किया। मिलनेवालों पर इनकी मीठी ज़बानका बड़ा असर पड़ता और वे बिना मिले ही लौट जाते।

देशके नौजवान इनको बहुत मानते थे। नौजवानोंकी बातें सुननेका और उनकी रहनुमाई करनेका एक भी मौक़ा ये हाथसे जाने नहीं देती थीं। नौजवानोंके लिये इनका संदेश था कि "मातृभूमिकी सेवा करो।"

हिन्दी स्त्री-जातिके वास्ते इनके दिलमें बहुत हमदर्दी थी। स्त्रियोंकी तरक्की हो और समाजमें उनकी इज्ज़त बढ़े इसके लिये इन्होंने बहुत कोशिश की। परदे और बाल-विवाहको सामाजिक उन्नतिमें ये भारी रुकावट समझती थीं। पुरुषोंसे स्त्रियोंके लिये वे समान हक़ नहीं चाहती थीं, बल्कि यह चाहती थीं कि स्त्री पुरुषके साथ कंधेसे कंधा मिलाकर जीवनक्षेत्रमें खड़ी रहे। स्त्रियोंसे ये कहती थीं कि 'तुम सभाकी परी न बनो, बल्कि ख़ातुनेख़ाना हो।' हिंदके पुरुषोंसे इनका कहना सर्वथा सही था कि "हिन्दुस्तानके पुरुषोंकी निस्बत हिन्दुस्तानकी स्त्रियोंमें एकता अधिक है।" हिन्दी महिला परिषद्की आप दो दफ़ा प्रमुख चुनी गईं।

हिन्दू-मुस्लिम एका हो यह ये तहेदिलसे चाहती थीं। मुसलमानोंने इन पर कभी अविश्वास नहीं किया। मुसलमान रियासतमें ये पली थीं। ये उर्दू खूब जानती थीं। इनके कई मुसलमान मित्र थे। मौलाना शौकतअलीने एक बार कहा था कि "क़ौमी दंगोंके समय मुसलमान सरोजिनीदेवी पर ही पूरा भरोसा रखते हैं।" इन्हें जात-पाँतका भेद छू तक नहीं गया था।

ये बड़ी हँसोड़ और विनोदप्रिय थीं। अप्रैल १९३० की एक बात है। नमक-सत्याग्रहके दिन थे। प्रख्यात दाँडीके किनारे

महात्माजीने नमकके क़ानूनका सविनय भंग किया। सरकारने महात्माजीको पकड़ लिया। अपने पीछे महात्माजीने लड़ाईकी पतवार सरोजिनीके हाथोंमें सौंपी। सरोजिनीने धारासणाकी नमककी क्यारियों पर सत्याग्रहियोंके साथ धावा बोला। पुलिसने सबको घेर लिया। खूब ज़ोरकी धूप पड़ रही थी। सबके सब प्यासके मारे हैरान परेशान थे। पुलिस न तो किसीको वहाँसे कहीं जाने देती थी, न खुद ही कहीं जाती थी। इस पर सरोजिनीको विनोद सूझा और बोलीं, "अगर आप चाहेंगे तो हम यहाँ क़यामतके दिन तक बैठे रहेंगे।" इस तरहके विनोद पर पुलिस भी हँसती नहीं तो क्या करती?

राउंड टेबिल कान्फरेन्समें शरीक होने गांधीजी लंदन जा रहे थे। जहाज़ पर बहुतसे आदमी उन्हें विदा करने आये थे। इस शुभ अवसर पर उनके माथे पर कुंकुमका टीका लगाया गया था। यह देख सरोजिनीको दिल्लगी सूझी। वे बोलीं, "महात्माजी, आप तो दूल्हा जैसे दीखते हैं।" गांधीजी भी कुछ कम न थे। वे भी इतने ही विनोदप्रिय थे। फौरन् बोल उठे, 'और आप . . .।' इस पर इतना क़हक़हा पड़ा कि हँसते हँसते सबोंका पेट दुखने लगा।

ये दिलकी बड़ी उदार थीं। एक बार बम्बईके विद्यार्थी बापूके पास उनको विद्यार्थियोंकी सभामें बुलानेके लिये आये। बापूने भाषण देना मंजूर तो किया, मगर हरिजन फंडके वास्ते दो हज़ारकी थैली माँगी। शर्त बड़ी कड़ी थी। बेचारे लड़कोंके पास दो हज़ार तो क्या फूटी कौड़ी भी नहीं थी। विद्यार्थी सोचमें पड़ गये। सरोजिनीदेवी पास बैठी थीं। इन्होंने विद्यार्थियोंसे कहा, 'अरे! तुम इसके पास क्यों गये? यह तो बनिया है। खैर! तुमको भाषण सुनना है न? यह ठहरा बनिया, मैं थोड़े ही बनिया हूँ, मैं तो ब्राह्मण हूँ। मैं देती हूँ, लेती नहीं।' और लड़कोंको बापूके भाषणके लिये दो हज़ार रुपये दे दिये।

इनको सब लोग अपना समझते थे। जन्मसे ब्राह्मण थीं, शादीसे अब्राह्मण। कुटुम्बके नाते बंगाली थीं और लालन-पालनके हिसाबसे मद्रासी। बंबईमें रहती थीं इसलिये बम्बईवाले इन्हें अपना समझते थे। मुसलमानी रियासतमें रहनेके कारण मुसलमान इन्हें अपना समझते और ईसाई धर्मके प्रति प्रेम होनेसे ईसाई इन्हें अपना मानते थे। इनमें पूर्व और पश्चिमका अजब मिश्रण था। इनकी वाणीमें अद्भुत मोहिनी थी। दर्दभरी अपीलसे ये लोगोंके दिल पर कब्ज़ा कर लेती थीं। ग़रीब या अमीर, बूढ़े या जवान, अनपढ़ या पढ़े-लिखे, हिन्दू या मुसलमान, इनके घर पर एक सरीखा आदर पाते थे। ये पूरी राष्ट्रीय थीं। इनके दिलमें सबके लिये ममता थी।

इनकी लोकप्रियता, अद्भुत कार्यशक्ति, कुशलता और दक्षताको देखकर देशके आज़ाद होने पर इन्हें उत्तर प्रदेशका गवर्नर बनाया गया। ये आखिरी दम तक इस भारी ज़िम्मेवारीको बड़ी कुशलतासे पूरा करती रहीं। अपनी कार्यपद्धतिकी वजहसे इन्होंने सबके दिलोंको मोह लिया। एक योगिनकी भाँति कार्य करते करते लखनऊमें सत्तर सालकी आयु पाकर २ फरवरी १९४९ को ये अपना सारा कार्य-भार वर्तमानको सौंपकर भूतकालमें विलीन हो गईं।

प्रश्न —

१. सरोजिनीने अपनी कविताका रंगढंग क्यों और कैसे बदल दिया?

२. कवयित्री सरोजिनी देशभक्त सरोजिनी कैसे बनीं?

३. सरोजिनी भारतके नवयुवकोंके लिये क्या सन्देश छोड़ गई हैं?

४. सरोजिनीके हँसोड़पनके और दृष्टान्त दीजिये।

५. समाजमें स्त्रियोंके स्थानके बारेमें सरोजिनीका क्या मत था?

६. सरोजिनीकी विद्यार्थी अवस्थाके बारेमें अधिक जानकारी प्राप्त करें।

शिवाजीका सच्चा स्वरूप

[सेठ गोविन्ददास]

[आप हिन्दीके एक नामी लेखक हैं। आपके नाटक बहुत ऊँची कोटिके होते हैं। आपके नाटकोंमें भाषा और भावका अच्छा मेल होता है। आप देशभक्त हैं और आज़ादीके आन्दोलनोंमें आप हमेशा शामिल रहे हैं।]

पात्र

शिवाजी — प्रसिद्ध मराठा वीर
मोरोपंत पिंगले — पेशवा
आवाजी सोनदेव — शिवाजीका एक सेनापति
स्थान — राजगढ़ दुर्गका एक दालान
समय — सन् १६४८ ई० की संध्या।

[दाहिनी ओर दालानका कुछ हिस्सा दिखायी देता है। दालानकी छत पत्थरके खंभों पर है। उसके पीछेकी दीवाल भी पत्थरकी ही है। दालानके पीछेकी ओर दाहिनी तरफ़, दूर पर गढ़की सफ़ील और कुछ बुर्जें दिख पड़ती हैं। बाईं तरफ़ सह्याद्रि-पर्वत-मालाकी शिखरावली दृष्टिगोचर होती है। कुछ शिखरोंकी ओटमें सूर्य अस्त हो रहा है, जिसके प्रकाशसे सारा दृश्य आलोकित है। दालानके सामने क़िलेका खुला मैदान है। मैदानमें एक ऊँचे स्तंभ पर भगवा रंगका मराठा झंडा फहर रहा है। दालानमें जाजम बिछी है, उस पर कीनखावकी गद्दी पर मसनदके सहारे शिवाजी वीरासनसे किसी विचारमें मग्न हैं। उनके स्वरूप और वेशभूषाके

संवंधमें कुछ भी लिखना इसलिये निरर्थक है कि एक भी भारतीय ऐसा नहीं जो उससे परिचित न हो। दालानके वाहर शस्त्रोंसे सुसज्जित दो मावली शरीर-रक्षक खड़े हुए हैं। वाईं ओरसे मोरोपंत पिंगलेका प्रवेश। मोरोपंत अवेड़ अवस्थाका, गेहुँए वर्णका, ऊँचा-पूरा व्यक्ति है। वेशभूषा शिवाजीसे मिलती-जुलती है; केवल सिरकी पगड़ीमें अन्तर है। मोरोपंतकी पगड़ी शिवाजीकी पगड़ीके सदृश मुगल ढंगकी न होकर मराठी तरजकी है। उसके मस्तक पर त्रिपुण्ड भी है।]

मोरोपंत — (अभिवादन कर) श्रीमन्त सरकार! सेनापति आवाजी सोनदेव कल्याण प्रान्तको जीत, वहाँका सारा खज़ाना लूटकर आ गये हैं।

शिवाजी — (चौंककर) अच्छा! (मोरोपंतकी ओर देखकर) वैठो पेशवा, वड़ा शुभ संवाद लाये। आवाजी सोनदेव कहाँ?

मोरोपंत — (वीरासनसे वैठकर) श्रीमन्तकी सेवामें अभी उपस्थित हो रहे हैं।

[कुछ देर निस्तव्धता। शिवाजी और मोरोपंत दोनों उत्सुकतासे वाईं ओर देखते हैं। कुछ ही देरमें आवाजी सोनदेव वाईं ओरसे आता हुआ दिखायी देता है। उसके पीछे हम्मालोंका एक वड़ा भारी झुंड है। हर हम्मालके सिर पर एक हारा (वड़ा भारी टोकना) है। हम्मालोंके झुण्डके पीछे एक पालकी है। पालकी वन्द है। आवाजी सोनदेव भी अवेड़ अवस्थाका ऊँचा-पूरा मनुष्य है। वेष-भूषा ोरोपंतके सदृश है। आवाजी सोनदेव दालानमें आकर शिवाजीका अभिवादन करता है। हम्मालोंका झुंड और पालकी दालानके वाहर रहते हैं।]

शिवाजी — वैठो, आवाजी, कल्याण-विजय पर तुम्हें वधाई है।

आवाजी सोनदेव — (वैठते हुए) वधाई है श्रीमन्त सरकारको।

शिवाजी — कहो, पैदलमें मावलियोंने अधिक वीरता दिखाई या हेटकरियोंने ?

आवाजी सोनदेव — दोनोंने ही, श्रीमन्त सरकार !

शिवाजी — और घुड़सवारोंमें वारगिरोंने या शिलेदारोंने ?

आवाजी सोनदेव — इनमें भी दोनोंने ही, श्रीमन्त !

शिवाजी — सेनाके अधिपति कैसे रहे ?

आवाजी सोनदेव — पैदलके अधिपति — नायक, हवालदार, जुमालदार और एक-हज़ारी तथा घोड़सवारोंके अधिपति — हवालदार, जुमालदार और सुभेदार, सभीका काम प्रशंसनीय रहा, श्रीमन्त सरकार!

शिवाजी — (हम्मालोंकी ओर देखकर मुस्कराते हुए) कल्याणका खज़ाना भी लूट लाये; बहुत माल मिला ?

आवाजी सोनदेव — हाँ, श्रीमन्त, सारा खज़ाना लूट लिया गया और इतना माल मिला कि जितना अब तककी किसी लूटमें भी न मिला था। चाँदी, सोना, जवाहरात, न जाने क्या क्या मिला। मैं तो समझता हूँ, श्रीमन्त, केवल दक्षिणकी ही नहीं उत्तरकी भी विजय इस संपदासे हो सकेगी।

शिवाजी — (हम्मालोंके पीछे पालकी देखकर) और उस मेणामें क्या है ?

आवाजी सोनदेव — (मुस्कराते हुए) उस मेणा . . . उस मेणामें, श्रीमन्त, इस विजयका सबसे बड़ा तोहफ़ा है।

शिवाजी — (उत्सुकतासे आवाजी सोनदेवकी ओर देखते हुए) अर्थात् ?

आवाजी सोनदेव — श्रीमन्त, कल्याणके सुभेदार अहमदकी पुत्र-वधूके सौंदर्यका वृत्त कौन नहीं जानता ? उसे भी श्रीमन्तकी सेवाके लिये बन्दी करके लाया हूँ।

[शिवाजीकी सारी प्रसन्नता एकाएक लुप्त हो जाती है। उनकी भृकुटी चढ़ जाती है और नीचेका होठ ऊपरके दाँतोंके नीचे आ जाता है। आवाजी सोनदेव शिवाजीकी परिवर्तित मुद्रा देखकर घवड़ा-सा जाता है। मोरोपंत एकटक शिवाजीकी ओर देखता है। कुछ देर निस्तव्वता रहती है।]

शिवाजी—(भर्राये हुए स्वरमें) मेणाको तत्काल इस पड़वीमें लाओ।

[आवाजी सोनदेव जल्दीसे दालानके वाहर जाता है। शिवाजी एकटक पालकीकी ओर देखते हैं; मोरोपंत शिवाजीकी तरफ़। कुछ ही क्षणोंमें पालकी दालानमें आती है। ज्यों ही पालकी दालानमें रखी जाती है, त्यों ही शिवाजी जल्दीसे पालकीके निकट पहुँचते हैं। मोरोपंत शिवाजीके पीछे पीछे जाता है।]

शिवाजी—(आवाजी सोनदेवसे) खोल दो मेणा, आवाजी।

[आवाजी सोनदेव पालकीके दरवाजे खोलता है। दरवाजा खुलते ही अहमदकी पुत्र-वधू उसमें से निकलकर चुपचाप एक ओर सिकुड़कर खड़ी हो जाती है। वह परम सुन्दरी युवती है। वेष-भूषा मुगल स्त्रियोंके सदृश।]

शिवाजी—(अहमदकी पुत्र-वधूसे) माँ, शिवा अपने सिपहसालारकी इस नामाक़ूल हरकत पर आपसे मुआफ़ी चाहता है। आह! कैसी अजीवो-ग़रीव ख़ूवसूरती है आपकी। आपको देखकर मेरे दिलमें एक . . . सिर्फ़ एक वात उठ रही है—कहीं मेरी माँमें आपकी-सी ख़ूवसूरती होती, तो मैं भी वदसूरत न होकर एक ख़ूवसूरत शख़्स होता। माँ, आपकी ख़ूवसूरतीको मैं एक . . . सिर्फ़ एक काममें ला सकता हूँ—उसका हिन्दू-विधिसे पूजन करूँ; उसकी इस्लामी-तरीक़ेसे इवादत करूँ। आप ज़रा भी परेशान न हों। माँ, आपको आराम, इज़्ज़त, हिफ़ाज़त, और ख़वरदारीके साथ आपके

शौहरके पास पहुँचा दिया जायगा; विना देरीके, फ़ौरन। (आवाजी सोनदेवकी ओर घूमकर) आवाजी, तुमने ऐसा काम किया है, जो कदाचित् क्षमा नहीं किया जा सकता। शिवाको जानते हुए, निकटसे जानते हुए, तुम्हारा साहस ऐसा घृणित कार्य करनेके लिये कैसे हुआ? शिवाने आज पर्यंत किसी मसजिदकी दीवालमें वाल वरावर दरार भी न आने दी। शिवाको यदि कहीं क़ुरानकी एक पुस्तक मिली तो उसने उसे सिर पर चढ़ा, उसके एक पन्नेको भी किसी प्रकारकी क्षति पहुँचाये विना, मौलवी साहवकी सेवामें भेज दिया। हिन्दू होते हुए भी शिवाके लिये इस्लाम धर्म पूज्य है। इस्लामके पवित्र स्थान, उसके पवित्र ग्रन्थ, सम्मानकी वस्तुएँ हैं। शिवा मुसलमान और हिन्दू प्रजामें कोई भेद नहीं समझता। अरे! उसकी सेनामें मुस्लिम सैनिक तक हैं। वह देशमें हिन्दू-राज्य नहीं, सच्चे स्वराज्यकी स्थापना चाहता है। आततायियोंसे सत्ताका अपहरण कर उदार-चेताओंके हाथमें अधिकार देना चाहता है। फिर पर-स्त्री—अरे! पर-स्त्री तो हरएकके लिये माताके समान है। जो अधिकार-प्राप्त जन हैं, जो सरदार हैं, या राजा, उन्हें. . . उन्हें तो इस संवंधमें विवेक, सवसे अधिक विवेक रखना आवश्यक है। (कुछ रुककर) आवाजी, क्या तुम मेरी परीक्षा लेना चाहते थे? इसलिये तो तुमने यह कृति नहीं की? शिवा ये लड़ाई-झगड़े, ये लूटपाट क्या व्यक्तिगत सुखोंके लिये कर रहा है? क्या स्वयं चैन उड़ाना उसका उद्देश्य है? तव . . . तव तो ये रक्तपात, ये लूटमार घृणित, अत्यन्त घृणित कृतियाँ हैं। शिवामें यदि शील नहीं, तो उसके सेनापतियों, सरदारोंको शीलका स्पर्श तक नहीं हो सकता। फिर तो हममें और इन्द्रिय-लोलुप लुटेरों तथा डाकुओंमें कोई अन्तर ही नहीं रह जाता। अरे, तव तो हमारे जीवनसे हमारी मृत्यु, हमारी विजयसे हमारी पराजय, कहीं श्रेयस्कर है। (मोरोपंतसे) आह!

पेशवा, यह . . . यह मेरे . . . मेरे एक सेनापतिने . . . मेरे एक सेनापतिने क्या . . . क्या कर डाला? लज्जासे मेरा सिर आज पृथ्वीमें नहीं, पातालमें घुसा जाता है। इस पापका न जाने मुझे कैसा . . . कैसा प्रायश्चित्त करना पड़ेगा? (कुछ रुककर) पेशवा, इस समय तो मैं केवल एक घोषणा करता हूँ — भविष्यमें अगर कोई ऐसा कार्य करेगा तो उसका सिर उसी समय धड़से जुदा कर दिया जायगा।

शिवाजीका सिर नीचे झुक जाता है। अहमदकी पुत्र-वधू कनखियोंसे शिवाजीकी ओर देखती है। उसकी आँखोंमें आँसू छलछला आते हैं। मोरोपंत शिवाजीकी तरफ़ देखता है और आवाजी सोनदेव घबड़ाहटभरी दृष्टिसे मोरोपंतकी ओर।]

यवनिका

(समाप्त)

प्रश्न —

१. अहमदकी पुत्र-वधूको देखकर शिवाजीको दुःख क्यों हुआ?

२. शिवाजीका चरित्र-चित्रण कीजिये।

३. शिवाजीने आवाजी सोनदेवसे अपने बारेमें और ख़ुद उनके बारेमें क्या कहा?

६

मज़हबी रिवाजोंकी परख

[श्री किशोरलाल घ० मशरूवाला]

[गांधी-विचारधाराको आपने खूब सोच समझकर अपनाया था। आप बड़े चिंतक, तत्त्वज्ञ, और धार्मिक पुरुष थे। महात्मा गांधीके सम्पर्कमें आने पर आप वकालत छोड़कर देशसेवाके कामोंमें लग गये। आप गुजराती और हिन्दीके समर्थ लेखक थे। गांधीजीके बाद आप आख़िरी दम तक 'हरिजन' पत्रोंका सम्पादनकार्य वर्षों करते रहे।]

एक ज़माना था जब कि साधारण आदमी अपने सब मज़हबी रस्म-रिवाजोंके बारेमें अपने धर्म-गुरु, पण्डित, मौलवी आदिकी राय मान लेता था अथवा पुश्तोंसे चली आयी रूढ़ियोंको स्वीकार कर लेता था। उनकी सचाई, ग़ैर-सचाई या भलाई-बुराईका खुद विचार करनेकी हिम्मत नहीं करता था। अगरचे यह स्थिति एक सत्यशोधकके लिये कभी मुनासिब नहीं समझी जा सकती; फिर भी, उस ज़मानेके साधारण व्यवहारोंमें उसकी बदौलत कोई ख़ास ख़राबी पैदा नहीं होती थी। क्योंकि न तो धर्म समझनेवाले मौलवी-पंडितोंकी नीयत ही अक्सर ख़राब होती थी और न उनकी बात माननेवाले साधारण लोगोंकी ही। उन्हें अपने धर्मकी रूढ़ियां श्रद्धासे पालन करने-करानेकी ही फ़िक्र होती थी। उसके बहाने किसी दूसरे मज़हबके लोगोंसे टण्टेके मौक़े पैदा करना अथवा दूसरे मज़हबके लोगोंका मुक़ाबला करनेके लिये अपनी जमातको संगठित करना, वग़ैरा खुराफ़ाती विचार उनके

दिलमें नहीं होते थे। इसी वजहसे यह साधारण अनुभव था कि अपने धार्मिक व्रतों या उत्सवोंमें वे दूसरे धर्मोंके लोगोंकी सहायता भी पा सकते थे और दूसरोंके उत्सवोंमें मदद दे सकते थे।

अब ज़माना बदलता जा रहा है। अब मज़हबी रिवाज मनानेके पीछे ईश्वरके नामसे एक व्रत या उत्सव पालन करने या एक अच्छा काम पूरा करने पर ज़ोर नहींके बराबर होता है। अब तो पुराने रिवाजोंके बहाने अपने क़ौमी संगठन क़ायम करने और दूसरी क़ौमोंसे झगड़ा मोल लेनेके लिये इन मौक़ोंका उपयोग होता है। इस मंशासे नयी नयी रूढ़ियाँ क़ायम करनेकी प्रवृत्ति भी बढ़ती जा रही है।

जब धार्मिक रूढ़ियोंका आम तौर पर इस तरह बुरा उपयोग किया जा रहा हो, तब हरएक अच्छे आदमीका यह फ़र्ज़ हो जाता है कि वह किसी भी धार्मिक माने गये रस्म-रिवाजका ख़ुद पालन करने या उसके पालनमें सहयोग देनेके पहले उसकी सचाई और भलाईका अपनी बुद्धिसे विचार करे, और सिर्फ़ मौलवियों, पंडितों और विद्वानों पर ही भरोसा न रखे।

यहाँ पाठक पूछ सकते हैं, 'क्या साधारण आदमीमें भी गहरी मज़हबी बातोंकी सत्यता-असत्यता या भलाई-बुराई परखनेकी लियाक़त हो सकती है? विद्वानोंकी राय या पुरखोंके ज़मानेसे चली आयी बातोंको ग़लत समझनेकी हिम्मत क्या वह कर सकता है?'

यही तो मैं कहना चाहता हूँ। इतनी हिम्मत हरएक समझदार मनुष्यको अपने आपमें लानी चाहिये। हरएक रिवाज और उसके पालनके तरीक़ेकी दो तरहसे परख की जाय, तो इस मामलेमें ख़ुद निर्णय करनेकी शक्ति हरएक समझदार आदमीमें आ भी सकती है।

धर्मकी सबसे पहली परख है उसकी समदृष्टि। यह धर्मकी असली जड़, धर्मकी आत्मा, कही जा सकती है। धर्म वह है जो

ईश्वरके सिरजे हुए सभी जीवोंके साथ रहना, चलना और मेल-जोल करना सिखाता है। जो उनमें विरोध या दुराव पैदा करता है, वह अधर्म है। पानी हमारी प्यास बुझानेके बदले अगर पीते ही हमारी जान ले ले, तो हम उसे पानी नहीं कहेंगे, बल्कि ज़हर कहेंगे। जो चीज़ शक्कर कहलाती हो, लेकिन मुँहको मीठा करनेके बदले कड़ुआ कर देती हो, उसे भला शक्कर कौन मानेगा? वह और चाहे जो हो, शक्कर किसी हालतमें नहीं हो सकती।

यही बात हरएक धार्मिक मान्यता और आचारके लिये लागू होती है। अगर वह इन्सानोंमें मेल-जोल कराता है, सबको समान समझना सिखाता है, तो वह धर्म है। अगर वह एकको ऊँचा और दूसरेको नीचा देखना तथा एककी इज्जत और दूसरेकी हतक करना सिखाता है, तो वह दुन्यवी आचार, रूढ़ि या मान्यता है, धर्म नहीं है; चाहे उसका ज़िक्र धर्मकी किताबोंमें भले ही किया गया हो, या शकलमें वह धर्मसे मिलता-जुलता मालूम होता हो।

इसके अलावा धर्मकी किसी बातको माननेसे अगर यह गुमान पैदा होता हो कि उसे पालनेके कारण मैं पालन न करनेवालोंसे ऊँचा हूँ, या ईश्वरका ज्यादा अच्छा और सच्चा सेवक हूँ और जो उसका पालन नहीं करते वे सब पापी हैं, तो उस बातको माननेवाला — चाहे वह रूढ़ि अपनेमें ठीक क्यों न हो — धर्मका पालन नहीं करता; बल्कि अपने अहंकार — खुदीको ही पोषता है। अगर ऐसे भावसे उस मान्यताका प्रचार किया जाय, तो उसके ज़रिये धर्मका प्रचार नहीं होता, अधर्मको ही बढ़ावा मिलता है।

धर्मकी दूसरी परख कवि इक़बालकी नीचे लिखी पंक्तिमें बिलकुल ठीक बताई गई है —

'मज़हब नहीं सिखाता आपसमें वैर करना'। चाहे प्रार्थना, पूजा, जुलूस, बाजे, मंदिर आदि हों अथवा नमाज़, रोज़ा, ईद, मुहर्रम,

मसजिद या गिरजाघर वग़ैरा हों; जिस क्षण हम यह महसूस करने लगें कि उनमें शामिल होनेमें हमारे अपने अथवा वहां इकट्ठा हुए बहुतसे लोगोंके दिलोंमें ईश्वरकी उपासना नहीं है, बल्कि अपना दुन्यवी और क़ौमी मकसद पूरा करनेकी या किसी दूसरे सम्प्रदायके लोगोंसे झगड़ा ठाननेकी दृष्टि है, उसी क्षण समझदार आदमीको यह मान लेना चाहिये कि इस बातमें ईश्वर, धर्म, सचाई या भलाई नहीं रही है; वह केवल एक ढकोसला, पाप और बुराई है। न तो उस स्थानमें कोई पवित्रता रह गई है, न वहां होनेवाली विधिमें। उसका एक पुरानी और पाक चीज़से मिलाया जाना हमें नाहक धोखेमें डालता है। जिस दूधमें सांपने मुंह डालकर ज़हर उगल दिया हो, उस दूधकी तरह ये चीज़ें भी फेंक देने लायक़ ही हैं। बेहतर है कि नेक आदमी न तो मंदिरमें जाय और न मसजिदमें, न दशहरा मनाये और न ईद, बनिस्बत इसके कि इनके ज़रिये वह इन्सानसे वैर करना सीखे।

हरएक आदमी चाहे वह कितना ही कम पढ़ा-लिखा क्यों न हो, इन कसौटियोंसे खुद परख सकता है कि किस धार्मिक रीति-रिवाजमें कितना धर्म बाकी रह गया है और कितना अधर्म उसकी तहमें पैठ गया है। जिस रस्म या रिवाजको अधर्मने खराब कर दिया हो, उसे छोड़ देना हरएक भले आदमीका फ़र्ज़ हो जाता है।

सचाई और भलाईके चाहनेवाले आदमीको एक बात खूब याद रखनी चाहिये। कोई भी पाप या अधर्म बग़ैर किसी सच्चे व्यक्ति या नेक बातका सहारा लिये पनप ही नहीं सकता। भला आदमी अक्सर सोचने लगता है कि 'ये लोग बुरे काम तो करते हैं, लेकिन साथ-साथ कुछ ऐसी बातें भी करते हैं, जो दरअसल अच्छी हैं। उस अच्छी बातमें मैं उनका साथ क्यों न दूं?'

यही बात खतरनाक होती है, क्योंकि इससे आम लोगोंका यह खयाल हो जाता है कि जब इसमें अच्छे अच्छे आदमी भी शरीक हैं, तो यह सारी-की-सारी बात अच्छी ही होगी। जिस तरह कोई

बेल बगलके पेड़के सहारे ऊपर चढ़ती है, उसी तरह धर्म और अधर्म नेक आदमियोंके सहारे बढ़ते हैं। इसलिये हरएक सज्जनका फ़र्ज़ है कि सहारा देनेसे पहले यह देख ले कि वह एक विषैली लताको आश्रय दे रहा है या अमृत-बेलको।

प्रश्न —

१. पहले मज़हबी रस्म-रिवाजोंमें क्या शक्ति थी?
२. धार्मिक रूढ़ियोंका पालन करनेमें समझदार आदमीका क्या फ़र्ज़ है?
३. धर्मकी परख कैसे की जाय?

१०

वह सीख

[श्री प्रभुदास गांधी]

[आप गांधी-कुटुम्बके हैं। कह सकते हैं कि आपकी परवरिश गांधीजीने ही की। उनके संदेशको आपने समझा है। आप एक पुराने रचनात्मक कार्यकर्ता हैं। जीवनका एक खासा हिस्सा आपने उत्तरप्रदेशमें खादी-काममें बिताया है।

आप गुजरातीके अच्छे लेखक हैं और आपको हिन्दीमें भी लिखनेका मुहावरा है। आपकी कलममें आत्मानुभूतिका बल है। आपके बारेमें काकासाहबने ठीक ही कहा है, "क़ुदरतके वर्णनमें प्रभुदास जितना सिद्धहस्त है, उतना ही मनोविश्लेपणमें भी वह सफल है। . . . उसकी वर्णनशक्तिका सामर्थ्य अगर हम देखें तो यक़ीन होता है कि यह प्रभुदास कोई मामूली साहित्यकार नहीं है।"

आजकल आप पोरबंदरके कीर्तिमंदिरमें काम कर रहे हैं।]

"मैं चाहता हूँ कि ऐसी पढ़ाई और नामकी परीक्षाओंसे तू बचा ही रहे," गहरी धीमी आवाज़में पूज्य बापूजीने मुझसे कहा।

ई० स० १९१८ का प्रारंभ था। सरदी खासी थी। यदि मेरा स्मरण सही है, तो पूज्य बापूजी चंपारनसे कुछ दिनोंके लिये आये थे और लौटकर चंपारन ही जा रहे थे। अहमदाबाद स्टेशन पहुँचनेके लिये कोचरब-आश्रमसे भद्र तक डेढ़ मील पैदल जाना पड़ता था। कुछ बोझ तो उन्होंने स्वयं उठाया और थोड़ासा मुझे देकर भद्र तक साथ चलनेके लिये मुझसे कहा। था तो बड़ा सुखद कार्य पर नंगे पैर चलनेमें सड़कके कंकड़ कहीं-कहीं चुभते थे। बापूजीको कष्ट अधिक होता था और चलते चलतें उन्हें बीच-बीचमें लम्बी-लम्बी डगें भी डालनी पड़ती थीं। फिर भी जी कड़ा करके वे तेज़ीसे बढ़े जा रहे थे। साबरमती नदी आयी और हम पुलको भी पार कर गये, फिर भी बापूजीकी एकाग्रता न टूटी। वे मौन ही रहे, मुझसे एक शब्द भी न बोले। शायद किसी गहरे चिन्तनमें डूबे हुए थे। लेकिन मुझसे अब और चुप न रहा गया। भद्र क़रीब-क़रीब आ गया था। मैंने सोचा, फिर ऐसा मौक़ा ढूंढ़नेसे भी नहीं मिलेगा। मैंने अपने दिलकी व्याकुलता उनके सामने टूटे-फूटे शब्दोंमें रख ही दी:

"सोलह वर्षसे अधिक उम्र हो जाने पर भी दरजे तीन तक की भी मेरी पढ़ाई नहीं हुई। आयुमें मुझसे कम 'अ' मैट्रिक पास हो गया और अब बंबईमें सौ रुपया माहवार कमा भी रहा है। यों रुपये कमानेकी चाह मुझे नहीं है, पर जहाँ जाता हूँ लोग नीची निगाहसे मुझे देखते हैं। उस दिन खुद मेरे मामाने ही मुझे काफ़ी झिड़क दिया। कहने लगे, 'कैसे बुद्धू बने फिरते हो। कुछ पढ़ो, कुछ कपड़ोंकी सजधज सीखो; गँवार ही बने रहे, तो दुनियामें क़दम-क़दम पर ठुकराये जाओगे। कुछ आया समझमें?' रियासतमें मामा एक बड़े पद पर हैं, इसलिये उनका कहना बर्दाश्त किया जा सकता

है। पर घरमें दादीजी भी बीच-बीचमें ताना कस देती हैं, 'तू स्कूलमें जानेका नाम तक नहीं लेता। अच्छा है, अभी तो बापू बापू करता है, पर जनमभर वे पेट नहीं भरते रहेंगे। जरा आँख खोलकर देख तो सही, तुझसे छोटे-छोटे बच्चोंने कितने सारे दरजे पढ़ डाले और तू वही दो कौड़ीका बना फिरता है!' बापूजी मेरी बात चुपचाप सुनते जा रहे थे। यह देखकर मेरी हिम्मत और भी बढ़ी और मैंने कहा:

"मेरी यह कुछ ज़िद नहीं है कि मैं मैट्रिक्युलेट ही बन जाऊँ। आपको पसन्द नहीं है और आश्रमके बच्चोंको आप इस परिपाटीसे बचाना चाहते हैं, तो मैट्रिक पास होनेकी बात मैं छोड़ दूंगा। लेकिन कुछ पढ़ाई तो ठीकसे होनी ही चाहिये। अगर अपने पास रखकर आप न पढ़ा सकें, तो और कुछ प्रबंध करा दीजिये। पर बड़ा होने पर लोग मुझे भोंदू कहने लगें और जिस समाजमें जाऊँ वहाँ अपना मुँह दिखाना भी मुश्किल हो जाय, ऐसी दुर्दशासे बचनेके लिये कुछ-न-कुछ तो करना ही चाहिये।"

मेरे मनकी इस व्यथाको शान्त करते हुए पूज्य बापूजीने इस लेखके आरंभमें दिया हुआ उद्‌गार निकाला और कहा:

"मेरा बस चले तो मैं दूसरोंको भी इस निस्सार पढ़ाईकी घातक बाढ़में बहनेसे रोक दूं। मुझे तो उसमें कुछ भी उन्नति नहीं दीखती। मैट्रिक ही क्या, तू बी० ए० भी हो जायगा, तब भी मैं तेरी परख उन परीक्षाओंके आधार पर नहीं करूँगा। छोटे-बड़े हरएक व्यक्तिकी क़ीमत मैं तो उसके चरित्रके आधार पर ही आँकूंगा। लोग चाहे कुछ भी कहें-सुनें, उसकी तनिक भी परवाह नहीं करनी चाहिये। मैं तो तुझे सयाना ही कहूँगा, यदि चरित्र-गठनकी तालीम तूने पा ली। जगतभरकी चतुराइयाँ प्राप्त कर लेनेसे यह हज़ार

गुना अच्छा होगा कि तू भोंदू ही बना रहे, पर सच्चरित्र, सुशील और प्रामाणिक बन जाय। स्कूलोंकी या घरेलू किताबी पढ़ाईके पीछे उम्र बिता देना बेकार ही साबित होगा। मेरी इस बातको गाँठमें बाँध ले। आश्रम-जीवनको पूरी कोशिशसे अपना ले। बिना आलस्यके सुबहसे शाम तककी दिनचर्यामें जुटा रह। थोड़ी सी मामूली तालीम फुरसत मिलने पर पढ़े-लिखे आश्रमवासी जो दे सकें उसीसे संतोष कर ले। और अपनी सारी शक्ति अपनेको प्रामाणिक बनानेमें ही खर्च कर। यही मेरी सीख है। अन्तमें जाकर समाजमें भी तुझे अच्छा खासा स्थान मिल ही जायगा। लज्जित होनेकी कोई ज़रूरत नहीं है। तू देखेगा कि सचाई और प्रामाणिकताको अपनेमें विकसित करते रहने पर तू जहाँ जायगा वहाँ बड़ी इज्ज़तसे लोग तुझे देखेंगे। आज तो हमारा समाज इतना अधिक गिरा हुआ है कि प्रामाणिक आदमी ढूंढ़नेसे भी नहीं मिलते। जो प्रामाणिक साबित होगा उसकी माँग देशके कोने-कोनेसे आयेगी। परीक्षायें पांस करनेवाला लड़का भले ही मारा-मारा फिरे, परंतु प्रामाणिकता और ईमानदारीको अपनानेवाला कहीं भी नहीं ठुकराया जा सकता।"

बापूजीने यह ऐसे भावोंके साथ, ऐसे वात्सल्यके साथ कहा कि मेरे दिलकी सारी व्याकुलता काफ़ूर हो गई। भद्रके घंटाघरके नीचे जब बापूजी ताँगे पर सवार हुए और मुझे आशीर्वाद देकर विदा हुए, तो मैंने अपने बराबर सुखी और प्रसन्न किसीको नहीं पाया।

लौटनेमें कोचरब तकका डेढ़ मीलका रास्ता तय करते समय मन इस बात पर व्याकुल हो उठा कि किस तरह अपनेको सावधान बनाऊँ और किस तरह ऐसी सुशीलता, सच्चारित्र्य और प्रामाणिकता प्राप्त करूँ, जिससे कि बापूजीको संतोष मिले!

आज बीस बरस बीत गये, मुझे ऐसा एक भी दिन याद नहीं पड़ता जब परीक्षायें पास न करनेका मुझे कुछ पछतावा हुआ हो। यदि पछताता हूँ तो चरित्र-गठनकी कमज़ोरी पर।

प्रश्न —

१. बापूकी सिखावन क्या थी?
२. बापूके बारेमें आप और क्या जानते हैं?

११

सत्ययुग और कलियुग

[श्री जनक दवे]

[जबसे राष्ट्रभाषाके प्रचारका काम गांधीजीने गुजरातमें शुरू किया, तबसे आपने इस काममें अपना पूरा सहयोग दिया है। आप सूरतके रहनेवाले हैं। आप एक खामोश देशभक्त और सेवक हैं। सत्याग्रह आन्दोलनोंमें हमेशा आप शामिल रहे।

आप गुजराती, संस्कृत और अंग्रेज़ीके विद्वान् हैं। हिन्दी-हिन्दुस्तानीके साहित्यका और उसके इतिहासका आपका अभ्यास गहरा है। आजकल आप नवसारी हाईस्कूल (नवसारी) में हैं।]

हमारा सामाजिक जीवन यज्ञकी भावना पर ही टिक सकता है। अगर कोई व्यक्ति रॉबिन्सन क्रूसोकी नाईं संसारसे दूर-सुदूर एकान्तमें जीवन बिताता हो, तो वह जितना परिश्रम करेगा उसका फल स्वयं ही पा सकेगा। पर जब हम समाज रचकर सामूहिक जीवन जीने लगते हैं, तो कभी भी अपने सारे परिश्रमका फल खुद नहीं भोग सकते। कभी हमें ज्यादा मिलता है तो कभी कम।

इतना ही नहीं, बल्कि जिस प्रकार जड़ सृष्टिमें दो पदार्थ सम्बद्ध होकर अपनी अपनी गति पर चलते हैं, तो घर्षणके कारण परिश्रमका एक अंश निष्फल जाता है, उसी तरह मानव सृष्टिमें भी संघर्षके कारण फलकी दृष्टिसे हमारे व्यक्तिगत प्रयत्नका पूरा लाभ हमें नहीं मिलता — उसका भी एक अंश निष्फल जाता है। व्यक्तिकी दृष्टिसे कुछ परिश्रम निष्फल जाने पर भी समाजकी व्यवस्थाके लिये वह निष्फल परिश्रम आवश्यक है। इस निष्फल परिश्रमको खुशीसे स्वीकार कर लेनेका नाम ही यज्ञ है।

मेरी दृष्टिसे सत्ययुग उस युगका नाम है जिसमें सभी अर्थात् अधिकतर लोग इस प्रकारके कुछ फलत्यागकी आवश्यकताको स्वीकार करते हैं और सहर्ष उसकी भेंट समाजके चरणों पर रख देते हैं। जब सभी ऐसे समाजोपयोगी परिश्रमके बोझको बाँट लेते हैं, तब किसी एक व्यक्ति या वर्गके ऊपर हदसे ज्यादा भार नहीं पड़ता और जीवन सुख और बिना उद्वेगके व्यतीत होता है। इसके कारण संघर्षका प्रमाण भी कम हो जाता है, जिससे निष्फल परिश्रमकी आवश्यकता भी उतनी कम रहती है।

और परमार्थकी दृष्टिसे तो कोई परिश्रम निष्फल जा ही नहीं सकता। उसका फल हमें सामूहिक जीवनमें प्राप्त होता है और सौगुना बनकर प्राप्त होता है। इससे सत्ययुगमें समाज समृद्ध बना रहता है।

सत्ययुगके नेताका प्रथम कर्तव्य यह देखना है कि व्यक्ति या वर्गोंके विभिन्न मंतव्योंके कारण जो संघर्ष पैदा होता है वह कम हो, बढ़े नहीं। इसलिये अपना वजन वह हमेशा दलितों और पीड़ितोंके पक्षमें ही डाला करता है। वह नेता बनना चाहता है तो समाजकी रक्षाके लिये, अधिकार प्राप्त करना चाहता है तो निष्फल श्रमके बोझका न्यायी बँटवारा करनेके लिये। और जब वह बँटवारा

करता है तो अधिकाधिक बोझ अपने कंधों पर रख लेता है और उसमें गौरव मानता है। आम लोग भी उसको विश्वासकी दृष्टिसे देखते हैं, अपने हाथों ही उसके सर पर मुकुट रख देते हैं और वह मुकुट पहनकर भी सेवक ही बना रहता है। परस्पर विश्वासकी ऐसी दुनियाका नाम सत्ययुग है।

कलियुगमें लोगोंका आचरण बिलकुल इसके विरुद्ध रहता है। अधिकांश नेताओंको अपनी जिम्मेवारीका कोई खयाल तक नहीं होता। वे अगुआ बनना चाहते हैं तो सामाजिक बोझसे बचने और दूसरे लोगोंकी पीठ पर सवार होनेके लिये। वे अधिकार प्राप्त करना चाहते हैं तो निजी स्वार्थ साधनेके लिये और दूसरों पर हुक्म चलानेके लिये। वे सामाजिक जिम्मेवारीका उपदेश तो देते फिरते हैं, पर उनकी दृष्टिसे जिम्मेवारी सब औरोंकी है और अधिकार सब उनके। आगे चलकर वे अपने स्थानके नाते अपने खास अधिकारोंका दावा करते हैं। परिणाम यह होता है कि अशक्त और मूर्ख और कुछ साधु प्रकृतिके लोगोंको छोड़कर सभी नेता बननेकी स्पर्धामें पड़ जाते हैं। अधिकार सबको चाहिये, जिम्मेवारी कोई उठाना नहीं चाहता। सामाजिक बोझको हरएक टालता रहता है। इससे वह बढ़ता रहता है और आखिरकार अशक्तोंके सर पर ही आ पड़ता है। कोई साधु-संत या कोई सहृदयी उसमें भाग लेता है, तो सत्ताधारियोंको वह दुश्मन-सा लगता है और अंतमें उसे क्रूस पर बलि चढ़ना पड़ता है।

कलियुगमें शक्तिशाली लोग सत्ताके स्थान पर क़ब्ज़ा तो कर लेते हैं, पर लोगोंके दिलमें उनका कोई स्थान नहीं रहता। लोग उनको अविश्वासकी नज़रोंसे देखते हैं, और वे लोगोंको तिरस्कारकी दृष्टिसे। परस्पर अविश्वासके कारण सब अपने कामका बदला तोल तोलकर पाना चाहते हैं। व्यक्तियोंकी खींचातानीमें से दलबन्दी पैदा होती है। और बादमें सहकारके स्थान पर स्पर्धाकी, जिम्मेवारीके

स्थान पर अधिकारकी भावनाकी, और मेलके वजाय फूटकी नौवत वजने लगती है।

इससे दलवन्दी, वर्गभेद और संघर्षके नारे लगने लगते हैं। लोकसंग्रहका नामोनिशाँ मिट जाता है और जीवनका चरम सिद्धांत संघर्ष ही मान लिया जाता है। इससे प्रत्यक्ष कलजुग पैदा होता है। यह संघर्ष कभी कभी इतना वढ़ जाता है कि उसमें से क्लेश और यातनाओंकी और उसके साथ साथ विद्रोहकी एक ऐसी अग्नि प्रकट होती है कि जो समाजमें भारी अशांति पैदा कर देती है और सामाजिक जीवनकी नींवको भयमें डाल देती है।

हमारे ऋषि-मुनियोंने समाजको चार वर्णोंमें वाँटा है — ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। हरएक वर्णके जो कर्तव्य वताये हैं, उनके आधार पर हम इन चार वर्णोंकी इस प्रकार व्याख्या कर सकते हैं —

(१) जो (व्यक्ति या व्यक्ति-समूह) समाजसे कमसे कम लेकर उसको ज्यादासे ज्यादा देता है, वह ब्राह्मण है। वह जो लेता है वह भी समाजसेवाके लिअे अपनी शक्ति कायम रखनेको। वह खाता है तो भी यज्ञकी भावनासे। दधीचि और महात्मा गांधी जैसे महात्मा ही सच्चे अर्थमें ब्राह्मण हैं। (२) जो समाजसे लेता भी वहुत है और उसे वापस भी वहुत करता है वह क्षत्रिय है। वह दिग्विजय करके धनदौलत प्राप्त करता है, और वादमें विश्वजित यज्ञ करके अपनी सारी दौलतको ग़रीवों, ब्राह्मणों और याचकोंमें वाँट देता है। युधिष्ठिर, रघु, सम्राट हर्ष वग़ैरह राजा लोग सच्चे क्षत्रिय थे। वे सुख भी भोगते थे और कष्ट भी उठाते थे। (३) जो वैश्य है वह समाजसे हो सके इतना लेता है, सुखोपभोग करता है और जो वचता है उसे जमा किये रखता है; पर जव छोटे वड़े सामाजिक संकट उपस्थित होते हैं, तो जी खोलके अपनी पूँजी समाजके चरणोंमें धर देता है, और निजी वैभवका त्याग करके समाजके दुःखमें सम-

भागी बनता है। (४) जिनको सामाजिक जिम्मेवारीका कोई भान ही नहीं है, जो अपने निजी संकुचित जीवनमें ही दिन काटते हैं, वे शूद्र हैं। एक पाँचवाँ वर्ण भी बनता है, जो समाजके संकटोंसे भी अपना स्वार्थ साधना चाहता है। वह अनार्य है। जब समाजमें ब्राह्मण-वृत्ति अधिक रहती है और उसका आधिपत्य रहता है (दूसरे सभी वर्णवाले उनके वचनको शास्त्राज्ञा समझते हैं), तब सत्ययुगका दौर-दौरा रहता है। उससे उल्टा जब समाजमें शूद्र और अनार्य-वृत्तिका जोर बढ़ता है तो कलियुग प्रतीत होने लगता है।

प्रश्न —

१. यज्ञकी व्याख्या कीजिये।
२. सत्ययुग और कलियुग किसे कहते हैं?
३. चार वर्णोंके क्या क्या कर्तव्य हैं?

१२

लाटरीका टिकट

[शौक़त थानवी]

[आप नाटक अच्छे लिखते हैं। आपके नाटक बहुत लोकप्रिय हैं। रेडियोवाले अक्सर आपके नाटकोंका उपयोग करते हैं। आप मनुष्य-स्वभावके अच्छे अभ्यासी हैं। हास्यप्रद शैली पर आपका बहुत अधिकार है। आपकी भाषा सरल है, मगर चलती हुई और मुहावरेदार।]

(मुंशीजीकी बीवी चूल्हा फूंक रही है। मुंशीजी आते हैं।)

बीवी — मूई गीली लकड़ियाँ उठाकर दे दीं, जैसे खैरातमें ही तो दी हैं।

(बीबी चूल्हा फूंकती है, दरवाज़ा खुलता है, मुंशीजी आते हैं।)

मुंशीजी — अरे भई कहाँ गईं — लाहोल विला कूह! वही हाँडी-चूल्हा! छोड़ो भी इसे। मैं पूछता हूँ, कोई तार तो नहीं आया?

बीबी — तार? कैसा तार?

मुंशीजी — यानी मालूम भी है आज ७ तारीख़ है? आज ही तो तार आयेगा उस लाटरीका।

बीबी — तोबा है; मैं तो समझी कि सचमुच किसीका तार आनेवाला है। और मैं पूछती हूँ अबके यह लकड़ियाँ कहाँसे उठा लाये थे?

मुंशीजी — अजी जहन्नममें डालो इन लकड़ियोंको और छोड़ो इस चूल्हा-हाँडीको।।

बीबी — ऐ वाह! चले वहाँसे छोड़ो चूल्हा-हाँडीको और खानेके वक़्त मैं क्या दूंगी — अपना कलेजा?

मुंशीजी — होटलसे आ जायगा। तुम मेरी बात तो सुनो। कुछ ज़रूरी मशविरे करने थे और तुम हो कि समझती ही नहीं हो।

बीबी — (फूंकनी फेंकते हुए) कहो क्या कहते हो?

मुंशीजी — वह टिकट भी रख लिया है सँभालके? पहले तो मुझे निकालकर दे दो, फिर दो घड़ी बैठकर मुझसे बातें कर लो।

बीबी — टिकट निकाल देती हूँ, मगर हाँडीमें देर हो जायगी और नसीम इस्कूलसे आकर मेरा सर खायेगा।

मुंशीजी — जाओ, जाओ तुम टिकट निकालो।

(दरवाज़े पर दस्तक होती है)

मुंशीजी — कौन है भाई?

सलीम — मैं हूँ सलीम।

मुंशीजी — तो आओ न, तुमसे छुपता कौन है?

सलीम — आदाब अर्ज़।

मुंशीजी — जीते रहो। कहो, ख़ैरियत है? दुल्हन और बच्चे सब अच्छे हैं?

सलीम — जी हाँ सब अच्छे हैं। उनको नज़ला है, बड़ा बच्चा बुख़ारमें मुबतला है और छोटेके चेचक निकल आई है।

मुंशीजी — (बात काटकर) ख़ैर, ख़ैर! बहरहाल ख़ैरियत है। रास्तेमें तारघरका कोई आदमी तो लाल बाइसिकल पर नज़र नहीं आया?

सलीम — जी नहीं तो। क्यों ख़ैरियत तो है?

मुंशीजी — हाँ, एक तारका इन्तज़ार है। यहाँ यह तुमने ज़र्द बाग़के चौराहेके क़रीब लाल रंगकी दो-मंज़िला कोठी देखी है— जिसके सामने ज़रा बाग़ वग़ैरह लगा हुआ है? मेरा मतलब यह कि चमन।

सलीम — जी हाँ, वह कोठी जो आजकल बिक रही है?

मुंशीजी — हाँ, हाँ, वही। कैसी है वह? क्या राय है तुम्हारी अगर मैं उसको ले लूँ?

सलीम — आप?

मुंशीजी — हाँ, और क्या? मेरा ख़याल है ले लूँ, पड़ी रहेगी।

(बीबी आती है)

सलीम — आदाब अर्ज़ भाभी!

बीबी — जीते रहो। अच्छे तो हो? (मुंशीजीसे) लो यह टिकट सँभालो।

मुंशीजी — हाँ यह यहीं है। तो मियाँ सलीम, वैसे तो बुरी नहीं है वह। उसके चालीस हज़ार माँगते हैं और ख़याल है कि पैंतीस तक दे देंगे?

बीबी — क्या चीज़?

मुंशीजी — भई आज एक कोठी देखी है। अच्छी खासी है। बजाय इसके कि जमीन खरीदी जाय, फिर उस पर इमारत बने, चमन लगाया जाय और इस क़िसमके बहुतसे दर्द सर मोल लिये जायँ, मेरे ख़यालमें तो अगर यह कोठी मिल जाय तो सबसे अच्छा। अभी नयी है। शायद दस बरसकी हो।

बीबी — तो कौन ले रहा है वह कोठी?

मुंशीजी — फिर वही। अरे साहब मेरा ही इरादा है और कौन लेता। और मियाँ सलीम मोटर रखनेकी भी जगह है। शागिर्द पेशा भी है — हवादार — आलीशान।

बीबी — (बात काटकर) मुझे यह शेखचल्लियोंकी-सी बातें अच्छी नहीं लगतीं।

मुंशीजी — शेखचल्लियोंकी-सी बातें? तुम तो हो बेवक़ूफ़। जब अुस कोठीमें जाकर बैठोगी रानी साहब बनकर तो उस वक़्त पूछूंगा मिजाजशरीफ़।

सलीम — आख़िर मालूम तो हो कि क़िस्सा क्या है, यानी क्या आप वाक़ई खरीद रहे हैं कोठी?

मुंशीजी — हाँ भाई, ख़याल तो है मेरा। आज एक हफ़्तेसे इसी चक्करमें था। पहले तो एक नक़शा बनवाया। वह किधर गया नक़शा? मैंने कहा सुनती हो? लाहौल बिला कूह! वह फिर चूल्हेके पास पहुँचीं।

बीबी — ए! हाँडी चली जा रही थी। आख़िर मैं क्या करूँ — तुम्हारी ऊटपटाँग सुनकर — न किसी बातका सर न पैर।

मुंशीजी — अच्छा तुम न सुनो मगर मेरा बस्ता तो दे दो जिसमें नक़शा वग़ैरह रखा है।

सलीम — तो क्या नक़शा आपको पसन्द नहीं आया? मगर बात यह है कि . . .

मुंशीजी — (बात काटकर) नक़शा तो अच्छा है, मगर भई मैं जरा जल्दबाज़ वाक़ई हुआ हूँ। यह कोठी तैयार खड़ी है और नक़शेवाली कोठी बनवानेके लिये इन्तज़ारकी ज़रूरत है। मियाँ — "कौन जानता है तेरी जुल्फ़के सर होने तक?"

बीबी — (आते हुए) लो सँभालो यह बस्ता।

मुंशीजी — इधर आओ, खिसक आओ मियाँ सलीम। किधर गया मेरा चश्मा। तोबा तोबा! यह लोहेकी कमानके चश्मे भी कितने ज़लील होते हैं? एक शरीफ़ आदमीके पास कमसे कम एक दरजन चश्मे तो होने चाहियें — सब अलग अलग वज़ाके और सब सोनेकी कमानीके — हाँ, यह रहा चश्मा। देखो मियाँ सलीम! यह नक़शा है। वैसे तो अपनी मर्ज़ीके मुताबिक़ इसमें सब चीज़ें आरामकी हैं, मगर वह लाल कोठीवाली बात कहाँ? फिर वह तैयार भी है?

बीबी — सलीम, ज़रा इनसे पहले यह पूछो कि रुपये कहाँ हैं?

मुंशीजी — फिर वही! अरे साहब, रुपयेकी क्या बात है यहाँ? मगर मैं पूछता हूँ कि अगर इस वक़्त एकदमसे छप्पर फट पड़े तो आखिर क्या होगा। हम तो अपने इन्तज़ामसे रहें।

सलीम — आख़िर यह मुइम्मा क्या है? मैं तो खुद हैरान हूँ।

मुंशीजी — तुम इनको कहने दो। हाँ, तो इस नक़शेमें मैंने एक हौज़ भी रखवाया था, जिसमें फव्वारा होता और रंगीन मछलियाँ इसमें डलवा देता। यह बात लाल कोठीमें नहीं है मगर हौज़ बनानेकी जगह ज़रूर है, लिहाज़ा कोई बात नहीं। हौज़ हर वक़्त बन सकता है।

बीबी — अच्छा, तुम खयाली पुलाव पकाते जाओ, मगर मैं तो हाँडी देखूँ।

मुंशीजी — जाओ मेरा क्या है। मगर बादमें तुम ही कहोगी, कि किसी सलाह-मशविरेमें शरीक नहीं किया। मैं तो यह कहता था कि तुम भी चलकर कोठी देख लेतीं। मगर ख़ैर, अब कल-परसों तक मोटरमें चल कर देख लेना।

बीवी — मोटर पर नहीं, हवाई जहाज़ पर।

मुंशीजी — क्या? यानी तुम हर वक़्त ग़लत समझती हो। आख़िर मैं क्या घास खा गया हूँ, जो मोटर कंपनियोंकी फ़ेहरिस्तें बटोरता फिरता हूँ? मियाँ सलीम, मेरे नज़दीक तो मोटरकी ख़ूबी यह है कि तेल कम खर्च होकर उसका हर पुर्ज़ा आसानीसे मिल सके। मगर मैंने यह तय किया है कि मैं एक छोटीसी गाड़ी रखूंगा रोज़मर्राके लिये और एक ज़रा क़ीमती और बड़ी भी होना चाहिये।

सलीम — यानी यह सचमुचके सड़कों पर चलनेवाले मोटर?

मुंशीजी — भई अजीब अहमक हो तुम भी, और नहीं तो क्या कूकदार बच्चोंका खिलौना?

बीवी — ए, तो वह क्या जानें? तुम भी तो पहेलियाँ बुझाते हो।

मुंशीजी — सुनो मियाँ सलीम! मैंने बहुतसे मोटरोंके मुताल्लिक तहक़ीक़ात की है और जो पसंद किये हैं उनकी तस्वीर दिखाता हूँ तुम्हें। इस फ़ेहरिस्तमें ही (फ़ेहरिस्त खोलकर) यह देखो यह तो है छोटा मोटर।

सलीम — बड़ा ख़ूबसूरत है।

मुंशीजी — फिर तेल भी बहुत कम खर्च होता है और ऐसा छोटा भी नहीं। बस, मुनासिब है। इसकी गद्दियाँ ऐसी लचकदार होती हैं कि — तुम शायद कभी मोटर पर नहीं बैठे — बस यह समझ लो कि उमदा क़िस्मका सोफ़ा।

बीवी — ए! और क्या, वे काहेको बैठे होंगे?

मुंशीजी — हाँ, खैर। और इसमें एक खूवी यह है कि शीशे चढ़ाकर कुफ़्ल वन्द कर दो तो कोई खोल नहीं सकता। वहरहाल मुनासिव है। इसकी क़ीमत साढ़े.....खैर, कमीशन काटकर कोई तीन हज़ारके क़रीव होगी।

बीवी — और तुम्हारे पास तीन हज़ार रखे हुए हैं। पहले तकाज़ा करनेवालोंके मुँह तो वन्द करो। चले हैं वहाँसे हवामें क़िले वनाने। घरमें नहीं दाने अम्माँ चली भुनाने।

मुंशीजी — अरे साहव तो क्या मैं ले आया हूँ मोटर। मैं तो एक वात कहता हूँ कि अगर लेना ही पड़ जाय तो मैं विलकुल कोरा तो न निकलूँ। क्या मैं जानता नहीं हूँ कि इस वक़्त मैं मोटर क्या छकड़ा भी नहीं ले सकता? मगर खुदाकी देन ही तो है और जो खरीदना ही पड़े मोटर तो—

सलीम — तो फिर यही मोटर लीजियेगा?

मुंशीजी — भई वह जो छप्पर फाड़कर देता है। पार साल तक कल्लूको कौन नहीं जानता कि साईं था, मगर अव सेठ कल्लूमल वना हुआ है। क्या हम भी इससे गये गुज़रे हुए हैं?

सलीम — मगर मेरी अक़ल हैरान है कि आज यहाँ यह वातें कैसी हो रही हैं? आखिर क़िस्सा क्या है? कुछ मालूम भी तो हो।

वीवी — तुम्हारे भैया कहीं डाका डालनेवाले हैं शायद।

मुंशीजी — फिर वही? अरे साहव, मैं पूछता हूँ कि क्या यह नामुमकिन है और क्या हो नहीं सकता कि कल्लूसाईंकी तरह मेरी हालत भी वदल जाए? आखिर उसके कौनसा सुरखावका पर लगा हुआ है?

सलीम — मगर आज आपको यह खयाल कैसे आया? वैठे विठाये आखिर ये वड़े आदमियोंकी-सी वड़ी वातें विला वजह तो हो नहीं सकतीं।

मुंशीजी — भई, वात यह है कि अवकी मैंने भी लाटरीका टिकट लिया है।

सलीम — लाटरीका टिकट? (क़हक़हा लगाता है)

मुंशीजी — यानी तुम भी हँस रहे हो? खुदा करे अभी थोड़ी देरमें मुझको तुम दोनों देवर भावज पर हँसना पड़े। यानी मेरी समझमें नहीं आता कि आखिर इसमें हँसने और मज़ाक़ करनेकी कौनसी वात है। लाखों आदमी हरसाल लाटरीका टिकट खरीदते हैं और कोई साल ऐसा भी नहीं जाता जव किसी न किसीके नाम इनाम न निकले। फिर मैंने कौनसी हिमाक़त की है, जिस पर आप लोगोंकी हँसी रुकती ही नहीं?

सलीम — भाई साहव, हँसनेकी वजह यह है कि यह सव कुछ हवाई मनसूवे हैं गोया।

मुंशीजी — मियाँ, दुनिया उम्मीद पर क़ायम है। तुम चले हो वहाँसे हवाई मनसूवे लेकर और जो इसी वहानेसे मेरी क़िस्मतमें दौलत लिखी हो तो?

वीवी — तो यह कौन कहता है? मगर तुम तो इस तरहकी वातें कर रहे हो कि जैसे दौलत मिल ही तो गई है।

मुंशीजी — किस तरहकी वातें? यानी अगर मैं कुछ मालूमात हासिल कर रहा हूँ, ताकि ज़रूरतके वक़्त विलकुल कोरा ही सावित न होऊँ और टापता न फिरूँ, तो यह भी गोया मेरी हिमाक़त और आप लोगोंके हँसनेकी वात है क्यों?

सलीम — भाई साहव, खुदा करे अवके आप ही को इनाम मिल जाय। मगर लाटरीके इनामकी उम्मीद पर इस तरह इन्तज़ाम करते हुए मैंने आप ही को देखा है।

मुंशीजी — इन्तज़ाम! तो मैंने आखिर कौनसा इन्तज़ाम किया है? यही न कि कोठी अपनी नज़रमें है और मोटरके लिये फ़ैसला

कर लिया है, ताकि ऐन वक़्त पर कमसे कम यह तो न हो कि कोठीकी जगह जल्दीमें ज़मीन ख़रीद ली जाय और मोटरकी जगह पानी छिड़कनेकी गाड़ी। आप हैं साहबज़ादे। इसको इन्तज़ाम नहीं, दूरंदेशी कहते हैं। मेरे ज़िहनमें इनाम पानेके बादकी तमाम इस्कीम मौजूद है, ताकि उस वक़्त कुछ सोचना न पड़े।

सलीम—तो यह कहिये कि आप इसके अलावा भी बहुत कुछ सोच चुके हैं।

मुंशीजी—नहीं, ख़ैर सोच-वोच तो मैं कुछ नहीं चुका हूँ। मगर हाँ, यह है कि अगर इस वक़्त एकदमसे लखपति बन जाऊँ, तो मुझको लखपति बननेकी तालीम किसीसे हासिल न करनी पड़ेगी। मसलन्, मैं जानता हूँ कि एक लखपतिके लड़केको म्युनिसिपैलिटीके मकतबमें नहीं, बल्कि उस अंग्रेज़ी स्कूलमें पढ़ना चाहिये, जहाँ एक बच्चेकी पढ़ाईका ख़र्च सौ रुपया महीना होता है।

सलीम—सौ रुपया महीना ?

मुंशीजी—जी हाँ, सौ रुपया महीना। तुम्हें याद है कि जब अब्बा जान मरहूमकी तनख़्वाह पचास रुपया महीना हो गई थी, तो उनको ख़ानदानमें सबसे बड़ा आदमी समझा जाता था। मगर दरअसल बड़ा आदमी तो अब मैं हूँगा। पचास रुपया महीनेके सिर्फ़ बावरची नौकर रखूँगा।

सलीम—मेरी तनख़्वाहसे ज़्यादाके तो बावरची ही हुए।

मुंशीजी—और क्या मेरी तनख़्वाहसे ज़्यादाके नहीं ? मगर तुम ही बताओ कि एक लखपतिके यहाँ अब पचास रुपयेसे भी कमके बावरची क्या अच्छे मालूम होंगे ? मैंने तय कर लिया है कि बावरचीख़ानेका ख़र्च अगर किफ़ायतसे चलाया गया तो पाँच सौ से बढ़ने न पायेगा।

सलीम—यानी पाँच सौ रुपये महीना?

मुंशीजी—और नहीं तो क्या पाँच सौ रुपये साल? भई बड़े बेवक़ूफ़ हो! ज़रा यह तो ग़ौर करो कि आये दिन मेरे यहाँ बड़े बड़े राजा और नवाब मेहमान हुआ करेंगे; कभी अंग्रेज अफ़सरोंकी दावत होगी, तो कभी हिन्दुस्तानी रईसोंकी। फिर घरवाले भी दाल-रोटी खानेसे रहे। नौकर-चाकर, मामायें, मुग़लानियाँ वग़ैरह मिलाकर कुछ नहीं तो कोई तीस चालीस आदमी तो घर ही के हो गये। वल्कि मेरा ख़याल है कि मुझको पाँच सौ से ज्यादाकी मंजूरी देनी पड़ेगी। क्या ख़याल है तुम्हारा?

सलीम—मेरी रायमें भाभीको भी बुला लीजिये। फिर हिसाब लगे।

मुंशीजी—वह समझ रही हैं मज़ाक़। गोया यह जो कुछ हो रहा है सब दिल्लगीबाज़ी है। मगर मैं कहता हूँ मियाँ सलीम कि जिन लोगोंको लाटरीके इनाम मिलते हैं वह भी आखिर इन्सान ही होते हैं, कोई चौपाये तो होते नहीं। फिर मेरा दिल गवाही दे रहा है कि इनाम जरूर मिलेगा।

सलीम—खुदा करे इनाम मिल जाय, सब ही के दिन फिर जायें।

मुंशीजी—(बात काटकर) दिन फिर जायें? यक़ीन जानो कि मैं तो तुम्हारी तरफ़से इस्तीफ़ा भी लिख चुका हूँ। यह देखो बस्तेमें (बस्ता टटोलता है) मेरा और तुम्हारा इस्तीफ़ा लिख रखा है। देखो यह रहा।

सलीम—आपका इस्तीफ़ा तो ठीक है मगर मेरा?

मुंशीजी—(बात काटकर) क्या ख़ूब! यानी अब दुनियाको मुझ पर हँसवाओगे भी कि लखपतिका भाई चालीस रुपल्लीकी नौकरी करता फिरता है म्युनिसिपैलिटीमें? तुम जायदादका काम देखना। मैंने दो गाँव और एक बाग़ पहलेसे तजवीज कर

रखा है। इसके अलावा और जायदाद भी तो आख़िर ख़रीदी जायगी। रुपये महज़ उड़ाना तो है नहीं।

सलीम — तो भाभीको बुला लीजिये न? उनको तो शायद किसी वातकी खबर भी नहीं है।

मुंशीजी — (आवाज़ देकर) अरे साहब, मैंने कहा सुनती हो?

बीवी — हाँ हाँ, सुन रही हूँ। नसीमको खाना खिला रही थी। (क़रीब आकर) कहो क्या कहते हो? वही मूई जेटें उड़ रही होंगी।

मुंशीजी — देखा मियाँ सलीम तुमने? इसीलिये नहीं बुलाता था।

सलीम — भाभी बैठ जाइये ना! भाईजानने तो दो गाँव और एक बाग़ भी तजवीज़ कर रखा है और हम दोनोंके इस्तीफ़े तैयार हैं।

बीवी — तो फिर इनके पास तार आ चुका होगा। यह बन रहे हैं।

मुंशीजी — तार आ चुका होता तो मैं यहाँ इस कवाड़खानेमें इस तरह बैठा होता? लाहौल बिला कूह! हर चीज़ अजीव है इस घरकी! यह घड़ोंची मुलाहज़ा हो। मालूम होता है कि पुरानी वज़ाका हल रखा हुआ है। यह चारपाइयाँ हैं जिन पर हम लोग सोते हैं। मैं तो अपने बागके मालीके लिये भी इस क़िस्मकी चारपाइयाँ मुनासिब नहीं समझता। यह देखिये मियाँ सलीम! यह बेगम साहबाके कपड़े। मालूम होता है जैसे घूसन।

बीवी — ए, खूब याद दिलाया। वह घूसन मूई मेरे नाकमें दम किये हुए है। कह गई है कि जब तक पिछले महीनेका हिसाब पूरा नहीं हो जायगा अब एक क़तरा भी दूधका न दूंगी।

मुंशीजी — शिश, मैं तो अब उससे दूध ले ही नहीं सकता। गन्दी, घिनौनी, बीमार गायोंका दूध देकर और उसमें पानी मिला-मिलाकर सेहतें खराब कर दीं। अब दूध, मक्खन और बालाई वग़ैरह किसी अंग्रेज़ी डेरीसे आया करेगा। दाम ज़रूर ज्यादा जायेंगे मगर चीज़ भी तो अच्छी होगी।

बीबी—खैर, वह तो बादकी बात है। पहले इसका हिसाब तो चुकाओ। और इसी पर क्या है? बनिया अलग आदमी पर आदमी भेज रहा है। मकानदारको जब देखिये मकान खाली करनेकी धमकी लिये हुए दरवाज़े पर खड़ा हुआ है। तुम तो रहते हो दिनभर घरके बाहर और नयुनों चने चबाने पड़ते हैं मुझको।

मुंशीजी—(ज़रा हँस कर) यही सब तकाज़ा करनेवाले कल इस बात पर फ़ख्र करेंगे कि एक लखपति भी उनका मक़रोज़ रह चुका है।

बीबी—तो अब तुम ही उनको आकर समझाना। वे आकर रोज़ मेरा दिमाग़ खाली करते हैं। कल कह रहे थे कि . . .

(दरवाज़ा खटखटानेकी आवाज़)

मुंशीजी—(बुलंद आवाज़से,) कौन साहब हैं?

ठेकेदार—मैं ठेकेदार।

बीबी—वही है मकानदार। अच्छा हुआ कि तुम्हारे सामने आ गये।

मुंशीजी—अच्छा तो तुम हट जाओ, ज़रा मैं उनको यहीं बुला लूं।

ठेकेदार—(अंदर आते हुए) आदाब अर्ज़ है मुंशीजी! आप तो ईदका चाँद हो गये। जब आके पूछा, ग़ायब—जब पूछा, ग़ायब। आखिर यह मामला क्या है? दो महीनोंसे हम ग़रीबोंको भी नहीं पूछा। यह तीसरा महीना चल रहा है।

मुंशीजी—जी हाँ, जी हाँ। वह बात यह थी कि मैं ज़रा मसरूफ़ ज़्यादा था। इन दिनों—खैर—तो आपका दो महीनेका किराया बाकी है न?

ठेकेदार—हाँ साहब, दो महीनेका किराया हो चुका है। हालांकि आपने खुद यह कहा था कि अबसे अगर एक महीनेका भी किराया चढ़े तो आप मकान खाली करा सकते हैं। मगर फिर

भी आपको कुछ ख़याल न रहा। आज मैंने कहा कि इस वक़्त हाज़िरी दूँ।

मुंशीजी — ख़ैर, किराया तो दिया ही जायगा। मगर ठेकेदार साहब मैं यह पूछता हूँ कि आप इस मकानको इलाहिदा ही क्यों नहीं कर देते?

ठेकेदार — जी, क्या मतलब आपका?

मुंशीजी — मेरा मतलब यह है कि अगर आपको मुनासिब दाम कुछ मुनाफ़ेके साथ मिल जायँ तो आप यह मकान बेच ही क्यों न डालें?

ठेकेदार — आप मुनाफ़ा लिये फिर रहे हैं। मैं तो यहाँ तक बता रहा हूँ कि कोई असली दाम दे दे, तो मैं आज इस झगड़ेसे नजात हासिल कर लूँ। मगर कौन मिलता है मकानका ख़रीदार? वह भी इस मुहल्लेमें। जिसको यह मकान लेना होगा वह इतनी ही रकम लगाकर किसी शरीफ़ोंके मुहल्लेमें क़ायदेका मकान बनवायेगा।

मुंशीजी — फिर भी अगर आपको ख़रीदार मैं दूँ, तो आप किन दामोंमें इस मकानको अलग कर देंगे? मगर ज़रा वाजबी ही बताइयेगा।

ठेकेदार — अरे यह तो घर घोड़ी नख़ास मोल हुआ। आप ख़रीदारको लाइये। वह मुझसे बातचीत करे। कुछ मैं कहूँ, कुछ वह कहे। इसके बाद देखा जायगा। इस वक़्त तो सिर्फ़ बक़ाया किरायेका ज़िक्र कीजिये।

मुंशीजी — ओहो! वह तो एक अलग चीज है। मैं तो यह कह रहा था कि . . . अच्छा। साफ़ साफ़ सुन ही न लीजिये कि मैं इस मकानको अगर ख़रीद लूँ तो . . .

ठेकेदार — (बात काटकर) आप ख़ुद?

मुंशीजी — जी हाँ! मेरा इरादा है कि इस मकानको ले ही लूं। पड़ा रहेगा।

ठेकेदार — मगर क्या वाक़ई यानी क्या सचमुच आपका यह इरादा हो रहा है?

मुंशीजी — जी हाँ, वाक़ई मैं यह सोच रहा हूँ कि नक़द रुपये रखनेसे जायदादका रखना हर हालतमें बेहतर है।

ठेकेदार — है तो ज़रूर बेहतर, मगर —

मुंशीजी — हाँ, हाँ, बताइये क्या इसमें कोई नुक़सान भी है? आप मुझे साफ़ साफ़ बतला दीजिये।

ठेकेदार — जी, नुक़सानकी बात नहीं, बल्कि सवाल यह है कि

मुंशीजी — (बात काटकर) हाँ, हाँ, फरमाइये।

सलीम — ठेकेदार साहबको ग़ालिबन् कुछ ताज्जुब है।

ठेकेदार — जी हाँ, ताज्जुबकी बात तो ज़रूर है कि यह सवाल एक-दम आपके ज़िहनमें क्यों कर आया?

मुंशीजी — बेशक ताज्जुब होना चाहिये। मगर खैर। अभी आप इस सिलसिलेमें बातचीत कर लीजिये। या यूं कीजिये कि सुबह मेरे पास इस मकानके काग़ज़ात लेकर आइये और मामला तय हो जाय।

ठेकेदार — बहुत बेहतर है। तो मैं अब इजाज़त चाहता हूँ।

मुंशीजी — भूलियेगा नहीं और बक़ाया किराया —

ठेकेदार — (बात काटकर) खैर किरायेकी कौनसी बात है? आदाब अर्ज़।

(जाता है)

बीबी — ए, मैं कहती हूँ कि तुम ग़ज़ब ही तो कर रहे हो। आखिर तुम्हें सूझा क्या है?

मुंशीजी — क्या मतलब है? क्या ग़ज़ब किया मैंने?

वीवी—वह ठेकेदार भी कहता होगा कि इनके घरमें रुपया भरा पड़ा है और दो दो महीने वेकारको किराया चढ़ाते हैं।

मुंशीजी—हाँ, हाँ, तो कौनसी वात हुई? खुदा करे उसका यही समझना ठीक हो।

वीवी—तो जव खुदा वह वक़्त दिखाता उसी वक़्त ऐसी वातें कर लेते। तुम तो जैसे वादल देखकर घड़े तोड़ रहे हो।

मुंशीजी — खैर तुम तो न कुछ समझो, न सोचो। अगर उसको यह मालूम हो जाता कि मैं लखपति हूँ तो इस मकानकी क़ीमत वढ़ा देता। मुझे मकानकी ज़रूरत नहीं है मगर इतने दिन इस मकानमें रहे हैं, कुछ मुहव्वत-सी हो गई है। इसको तुड़वाकर छोटीसी कोठी वनवा दूंगा और नाम रखूंगा 'नसीम मंज़िल'—नन्हेंके नाम पर। क्योंकि वह अव टकेके मुंशीका लड़का नहीं वल्कि एक लखपतिका लड़का होगा और नाम होगा साहवज़ादा नसीमुद्दीन खान इब्न खानवहादुर मुहम्मद अज़ीमुद्दीन खान।

वीवी—लो और सुनो, खानवहादुर भी हो गये।

मुंशीजी—क्यों? खानवहादुर होनेको क्या हुआ? एक लखपति न जाने क्या क्या वन जाता है? तुम देखती तो रहो अभी, अजी यह छोटे छोटे खानवहादुरी वग़ैरहके ख़िताव तो मियाँ सलीम तक को चुटकी वजाते दिलवा दूंगा। तुम समझती क्या हो? अव भी क्या कोई मैं वही मुंशी अज़ीम हूँ—अरायज़ नवीस कहींका, एक वकीलका मुहर्रिर? अव तो वकील साहव खुद मेरे कानूनी मशीरोंमें नौकर होंगे और क्या?

वीवी—भई अल्ला ऐसी वढ़ वढ़कर वातें कर रहे हैं और जो—

(कुंडी खड़खड़ानेकी आवाज़, तारवाला आवाज़ देता है)

तारवाला—तार ले जाइये।

मुंशीजी — (गड़बड़ाकर) तार — सुनती हो तार — मियाँ सलीम तार! (दौड़कर बाहर जाता है)

सलीम — यह तो वाक़ई तार है – तार – यानी – वाक़ई तार।

बीबी — वाह री तेरी शान। तूने दिन पलट दिये।

मुंशीजी — (दौड़ते हुए जाते हैं) भई एक रुपया है? — मगर तुम्हारे पास कहाँ? — मियाँ सलीम एक रुपया हो तो तार-वालेको दे दो।

बीबी — ए, देखो तो कितना इनाम निकला? बिस्मिल्ला कह कर खोलना तार। वाह री तेरी शान!

मुंशीजी — भई, तुम्हारे हाथ मुबारक हैं तुम ही खोलो। मेरे तो हाथ इस वक़्त काँप रहे हैं। दस्तखत करनेकी जगह लिख गया था घबराके लखपति।

सलीम — क्या कहा? लखपति लिख गये थे। तो भाईसाहब ग़लत ही क्या लिखा था?

मुंशीजी — अरे भई, तू इसे खोलना जल्दी।

बीबी — ए, तो तुम खुद ही क्यों नहीं खोलते?

मुंशीजी — नहीं, तुम खोलो बिस्मिल्ला करके। मुझे तो इस वक़्त कुछ अख़तलाज-सा हो रहा है।

बीबी — लो, पढ़ो।

मुंशीजी — लेना सलीम मियाँ! देखो, रक़म कितनी है? किधर गया मेरा चश्मा?

सलीम — अरे!

मुंशीजी — क्यों? क्यों? क्या बात है?

सलीम — महम्मद भाईका तार है, कल शाम भाभीजानने इन्तक़ाल फरमाया।

मुंशीजी — (भर्राई हुई आवाज़में) ग़ौरसे पढ़ो सलीम।

बीबी — हाय ! मेरी रज़्जूके मरनेका तार है !

(रोती है)

सलीम — भाभीजान ! सबर कीजिये।

मुंशीजी — लोगोंमें अपने दिलको कैसे समझाऊँ ? अरे मुझे पकड़ो !

(गिर पड़ता है)

प्रश्न —

१. मुंशीजीने क्या क्या मनसूबे बाँधे थे ?
२. मुंशीजीने मकानके मालिकको किस प्रकार विदा किया ?
३. मुंशीजीका चरित्र-चित्रण कीजिये।
४. इस नाटकमें कटाक्ष किस चीज़ पर है ?
५. सलीम बड़ा मसखरा था, यह साबित कीजिये।

१३

मज़हब और साइन्स

[पं० सुन्दरलाल]

['भारतमें अंग्रेज़ी राज्य' ने आपको सारे हिन्दी जगतमें मशहूर कर दिया। आप धनमऊ ज़िला मैनपुरीके रहनेवाले हैं। आप उर्दू और हिन्दीके पंडित हैं। आपमें सादगी इतनी है कि आपको देखकर शायद ही कोई पंडित समझ सके। देशके लिये मिली-जुली सरल भाषाके आप बड़े हिमायती हैं। इस सरल भाषाको बनाने और इसके प्रचारके लिये आप 'नया हिन्द' मासिक नागरी और उर्दू दोनों लिपियोंमें निकाल रहे हैं। आपकी बानीमें ज़ोर है और वह लोगोंके दिल पर ख़ूब असर करती है। आप एकता और मिली-जुली संस्कृतिके बड़े

हामी हैं। भारत सरकारकी ओरसे शुभेच्छा मिशनके अगुवाकी हैसियतसे आप सन् १९५१ में चीन भी हो आये हैं।]

एशियावालोंके विचार धर्म — मज़हब — की तरफ़ ज्यादा होते हैं और आजकलके यूरोपवालोंके साइन्स — विज्ञान — की तरफ़। दुनियाके सब बड़े-बड़े मज़हब, जिनके नामलेवा मौजूद हैं और लगभग वे सब भी, जिनके नामलेवा नहीं रहे, एशिया ही में पैदा हुए। एशियावालोंकी सारी ज़िन्दगी पर मज़हब छाया रहता है। हिन्दू, मुसलमान, यहूदी, पारसी, बौद्ध, कन्फ्यूशियस और रोमन कैथोलिक ईसाइयोंके भी रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार सब पर धर्मकी छाप रहती है। हर मज़हबवाला यही चाहता है कि मेरा मज़हब ज़िन्दगीके हर काममें मुझे रास्ता दिखावे — मैं क्या खाऊँ-पिऊँ, क्या पहरूँ, कैसे रहूँ-सहूँ; क्योंकि एक न एक दिन इन सब कामोंके लिये मुझसे पूछताछ की जावेगी। हर मज़हब अपने देश और कालके मुताबिक़ इस फ़र्ज़को पूरा करनेकी कोशिश भी करता है। धीरे-धीरे हर मज़हबमें कुछ लोग पैदा हो जाते हैं, जो इन्हीं बातोंमें बालकी खाल निकालने लगते हैं, छोटी-छोटी बातों पर बेजा ज़ोर देने लगते हैं। उनका मज़हब ठस, कट्टर और बेजान होने लगता है। उसका लचीलापन जाता रहता है। वह ज़रूरतके मुताबिक़ अपने रीत-रिवाजोंको भी नहीं बदल सकता। वह निकम्मी, ग़ैरज़रूरी चीज़ोंसे चिपट जाता है; ज़रूरी और कामकी चीज़ोंको भूल जाता है। यहाँ तक कि जो रास्ता नेकी और भलाईका रास्ता था, वही बुराई और बरबादीका रास्ता बन जाता है; क्योंकि बहुत करके इन्हीं ग़ैर-ज़रूरी चीज़ोंमें मज़हब मज़हबमें फ़र्क़ और लड़ाई-झगड़े होते हैं।

एक बात और है। सब मज़हब मानते हैं और ठीक मानते हैं कि आदमीका नाता किसी ऐसी बड़ी शक्तिके साथ जुड़ा हुआ है, जो हमारे हाथ, आँख, कानकी पहुँचसे बाहर है। हमारी दुनियाकी

ज़िन्दगी बड़े दरजे तक उस शक्तिके अधीन है। वह शक्ति इस ज़िन्दगीके बाद भी अपना काम करती रहती है, चाहे उसे हम ईश्वर या ख़ुदा कहें, या आत्मा या चैतन्य। इसीलिये मज़हबके माननेवालोंकी निगाह दूसरी दुनियाकी तरफ़ जाती रहती है। पर कभी कभी यह चीज़ इतनी बढ़ जाती है कि बीमारी बन जाती है और दूसरी दुनियाकी बेजा फ़िक्रमें हम अपनी यह दुनिया भी बिगाड़ लेते हैं। होता यह है कि हम अपनी कमसमझी, काहिली या कमज़ोरीकी वजहसे दूसरी दुनियाकी आड़ लेकर इस दुनियाके फ़र्ज़ोंको छोड़ देते हैं।

यह तो रही एशियावालोंकी हालत। अब ज़रा यूरोपवालोंको लीजिये। थोड़े दिनों पहले तक यूरोपके सोचनेवाले अगुआ उन चीज़ोंकी तरफ़से बेपरवाह होते जाते थे, जो हमारे हाथ, कान, आँख, नाककी पहुँचसे बाहर हैं। वे समझते थे कि उन्हें ऐसी किसी चीज़से वास्ता ही नहीं। तरह तरहकी साइन्सोंके अन्दर भी बहुतसी ऐसी चीज़ें हैं, जो सिर्फ़ ख़याली हैं और जिनके बिना इन साइन्सोंका काम नहीं चल सकता। ये साइन्सें हमें बार बार बताती रहती हैं कि हाथ, कान, आँख, नाककी पहुँचके अन्दरकी चीज़ों और इनकी पहुँचसे बाहरकी चीज़ों दोनोंमें गहरा और अटूट नाता है। फिर भी पिछली सदीके आख़िर तक यूरोपवालोंका ध्यान इस बातकी तरफ़ बहुत कम था। वे दूसरी दुनियासे बेपरवाह होकर इसी दुनियाको सब कुछ और आख़िरी चीज़ समझ बैठे। पर उनका दिल और दिमाग़ इस दुनियामें इतना फँसा कि वे हमसे भी ज़्यादा बुरे रोगके शिकार हो गये। उसी रोगका नतीजा है कि दो भयंकर महायुद्ध हो चुके और उनसे ज़्यादा भयंकर तीसरे युद्धका डर लगा हुआ है।

हमें अब देखना है कि तरह-तरहके मज़हबी विचारोंमें कोई एकता है या नहीं, ऐसे ही यह कि साइन्स साइन्समें कोई एकता

है या नहीं, और फिर यह कि मज़हब और साइन्समें कोई मेल है या नहीं। इसके लिये हमें मज़हब मज़हबका मुक़ाबला करना होगा, साइन्स साइन्सका मुक़ाबला करना होगा और साइन्स मज़हबका मुक़ाबला करना होगा।

कुछ लोगोंको साइन्सकी बुनियादी एकता तो दिखाई देती है, पर अलग अलग मज़हबोंमें फ़र्क़ और झगड़े ही नज़र आते हैं। कुछ और लोग हैं जिन्हें नई नई साइन्सोंके रोज़के नये नये उसूलों, डॉक्टरोंकी नई नई दवाओं और नई नई खोजोंके नये नये नतीजोंमें ऐसा दिखाई देता है कि साइन्सोंमें कोई बुनियादी एकता है ही नहीं। सच्ची बात यह है कि जैसे मज़हबोंमें तंगनज़री और कट्टरता होती है, वैसे ही साइन्सोंमें भी होती है। जैसे मज़हबोंमें अन्धी मान्यतायें होती हैं, वैसे ही साइन्सोंमें भी होती हैं। सल्तनतों और कूटनीतिकी बाँदी बनकर, साइन्सने मज़हबसे कहीं ज़्यादा मार-काट की है। पर ये सब झगड़े न सच्ची साइन्सके हैं और न सच्चे धर्मके। ये झगड़े हैं हमारे अन्दरके शैतान, हमारी ख़ुदी, हमारे स्वार्थ और हमारे अहंकारके। हम अपने छोटे, झूठे और चन्दरोज़ा फ़ायदेके लिये साइन्स और मज़हब दोनोंसे ग़लत काम लेते और दोनोंको बदनाम करते हैं।

हर आदमीके अन्दर जो कुछ होता है, वही वह बाहर देखना चाहता है, और जो वह चाहता है, वही वह देख लेता है। जो एकता रखना चाहते हैं, उन्हें एकता दिखाई देती है; और जो झगड़े देखना चाहते हैं, उन्हें झगड़े दिखाई देते हैं। जो सच्चाईको ठीक ठीक समझना चाहते हैं, वे दोनोंको समझ लेते हैं। सच्चाई बहुत करके दो निगाहोंके बीचमें होती है। सच यह है कि दुनियाकी सब चीज़ोंमें बुनियादी बातोंमें एकता है और ऊपरी बातोंमें फ़र्क़। जड़ एक और डाल-पत्ते अलग अलग। यही बात साइन्सकी है और यही मज़हबकी। सच्चाई एक और उसके कहने, सुनने और

उसके समझनेके ढंग अलग अलग। ईश्वर-अल्लाह् एक और उसकी पूजा-वन्दगीके तरीक़े अलग अलग। आदमी बरावर और उनकी तवीयतें अलग अलग; कोई दो चेहरे एकसे नहीं होते। कोई दो दिमाग़ एक तरह नहीं चलते। दुनिया नाम ही रंगारंगी और वहुरूपका है। फिर भी एक दरजे तक सव आदमी एक-से दिखाई देते हैं और एक तरह सोचते हैं। सवमें एक-सी कमजोरियाँ, एक-सी उमंगें और एक-सी भलाइयाँ हैं। यह न होता तो हम एक दूसरेको न समझ पाते और न मिलकर रह सकते। यह एकता ही सारी इन्सानी सभ्यता और तहज़ीवकी जड़ है। इस तहज़ीवको ज़िन्दा रखने और वढ़ानेके लिये सव मज़हवोंकी वुनियादी एकता, और मज़हव और साइन्सकी एकताको देखना, समझना, और सामने लाना ज़रूरी है। इस एकताको दरशाना और चमकाना दुनियाका भला चाहनेवाले विद्वानोंका काम है। इसीसे रीति-रिवाज और तवीयतोंके फ़र्क़ भी इसी एकताके रंगमें रंगे दिखाई देंगे और हमें दुःख पहुँचानेकी जगह दुनियामें सुख और सुन्दरता वढ़ावेंगे। यूरोपके अन्दरसे आपसी लड़ाइयों और एशियासे, खासकर हिन्दुस्तानसे, मज़हवके नाम पर होनेवाले लड़ाई-दंगोंके मिटानेका यही तरीक़ा है। इसीसे दोनों जगह जनताकी ग़ुलामी, वरवादी और लूट मिट सकती है, और प्रेम, शान्ति और सच्ची खुशहालीका राज्य हो सकता है।

दुनियासे मज़हवको मिटानेकी कोशिश ऐसी ही है कि जैसी रोगको दूर करनेके लिये शरीरको काट डालनेकी कोशिश। जव तक दुनियामें दुःख और मौत है, तव तक लोगोंको मज़हवकी ज़रूरत है, और उससे उन्हें तसल्ली भी मिलेगी। ऐसे ही जव तक लोगोंको यह वताया जाता रहेगा कि वुनियादी वातोंमें भी सव मज़हव एक दूसरेके खिलाफ़ हैं, तव तक लोग अपने अलग अलग मज़हवोंके नाम पर लड़ते रहेंगे। दूसरी तरफ़ अगर उन्हें वताया जावेगा कि

वुनियादी वातोंमें सव मज़हव एक हैं, तव लोगोंके दिल एक दूसरेके नज़दीक आवेंगे और वे सवको अपना भाई समझकर एक दूसरेसे प्रेम करना सीखेंगे।

इसी तरह जव लोगोंको मज़हव और साइन्सकी एकता दरशाई जावेगी और उस एकताका दौर आवेगा, तव वह नया ज़माना शुरू होगा जिसे वैज्ञानिक धर्म, साइन्टिफिक मज़हव, या मज़हवी साइन्सका ज़माना कह सकेंगे। उसमें मज़हव निकम्मे रीति-रिवाजों और ग़लत मानताओंसे आज़ाद होगा, और साइन्स इस दुनियाको दूसरी दुनियाके साथ जोड़ते हुए हमें अपनी आत्माको समझने और ईश्वर-अल्लाह तक पहुँचनमें मदद देगी। तव ही हरएकको सवके भलेमें अपना भला दिखाई देगा और सव सवके भलेमें लगेंगे।

सव वड़े वड़े साइन्सवाले अव यह समझने और कहने लगे हैं कि साइन्सें अलग अलग नहीं हैं, वल्कि सव साइन्सें एक ही साइन्स हैं। साइन्स और मज़हव भी एक ही सच्चाईके दो रुख़ हैं। एक ही हक़ीक़त है, जिसकी रोशनीमें हम अपनेको समझ सकते हैं, और इस दुनिया और दूसरी दुनिया दोनोंका रास्ता हँसीखुशी तय कर सकते हैं।

दुनियामें जव जव कोई नया मज़हव आया है, तव वह इसलिये आया है कि उससे पहलेके मज़हव निकम्मे रीत-रिवाजों और झूठी मानताओंसे इतने ढँक गये थे कि उनकी असली शुरूकी शकल पहचानी तक नहीं जा सकती थीं। किसी महान आत्माने अपने तप, अपने अन्दरकी रूहानी आगसे उसी पुराने सनातन मज़हवके ऊपरके मैलको जलाकर उसे फिरसे चमकाया, उसमें नई जान डाली और उसे नये सिरेसे दुनियाके सामने रखा। ढाँचा वदल गया, चीज़ वही थी। शव्द वदले, पर माने वही थे। अव इस ज़मानेमें जिस दीन-धर्मकी ज़रूरत है, वह भी कोई नया दीन न होगा। वह भी

वही पुराना सवका साइन्टिफिक, इन्सानी धर्म होगा जिसके लिये ज़रूरत है सब मज़हबों और सब साइन्सोंके सोचनेवालोंके मिलकर उन बुनियादी सच्चाइयोंको चमकानेकी, जो सब मज़हबों और सब साइन्सोंकी जड़ और जान है। यह काम शुरू हो चुका है। उसे बढ़ाना और फैलाना है।

आखिरमें इस बातको दिखानेके लिये कि साइन्स और मज़हब एक दूसरेके कितने नज़दीक आते जा रहे हैं, हम दुनियाके कुछ बड़े बड़े साइन्सवालोंके बयान नीचे देते हैं।

सर ओलीवर लाजने सन् १९३० में कहा था—"हम एक ऐसी रूहानी दुनियामें रह रहे हैं, जो इस मिट्टी-पानीकी दुनिया पर क़ाबू पाये हुए हैं। वह रूहानी दुनिया ही सच्ची दुनिया है। उसकी ज़बरदस्त ताक़तोंको हमने अभी कुछ समझना शुरू किया है।"

ग्रेट ब्रिटेनकी रायल सोसायटीके सेक्रेटरी सर जेम्स जीन्सने लिखा है—"पहले हम जड़ माद्देको असली चीज़ और मन या आत्माको उससे पैदा हो जानेवाली चीज़ समझते थे। अब मालूम होता है कि बात उल्टी है। अब हमें ऐसा लगने लगा है कि मन या आत्मा ही जड़ जगतको पैदा करता है और चलाता है। मेरा मतलब हमारी अलग अलग आत्माओंसे नहीं है, बल्कि उस बड़ी सब जगह मौजूद आत्मासे है, जिसके विचार-ज़र्रोंसे हमारी अलग अलग आत्मायें बनी हैं।"

हरबर्ट स्पेन्सरने सन् १९०० में कहा था:

"जिस चीज़को मैं 'हमारे ज़ाननेकी पहुँचसे परे' (अननोएबल) कहता हूँ, वह किसी तरह मज़हबको नहीं काटती, बल्कि उसे ताक़त पहुँचाती है।"

सब बड़े बड़े मज़हबवाले कह गये हैं कि 'यह हमारे जाननेकी पहुँचसे परे' चीज़ ही आत्मा है।

'दी ग्रेट डिज़ाइन' (१९३४) नामकी किताबमें चौदह बड़े बड़े साइन्सवालोंने अपनी सबकी यह मिली हुई राय ज़ाहिर की है कि :

"यह दुनिया बेजान मशीन नहीं है। यह इत्तफ़ाक़से यूँ ही पैदा नहीं हो गई है। मिट्टी-पानीके इस परदेके पीछे एक दिमाग़, एक जान, एक चेतन शक्ति काम कर रही है, चाहे उसे हम कुछ भी नाम क्यों न दें।"

इस सदीका सबसे बड़ा साइन्सका पंडित एलबर्ट आइन्स्टाइन लिखता है :

"मैं ख़ुदाको मानता हूँ। इस दुनियाकी तरतीबमें और सृष्टिके मेल और सुरीलेपनमें ख़ुदा साफ़ ज़ाहिर हो रहा है। मैं मानता हूँ कि सारी क़ुदरतमें चेतनता काम कर रही है।"

सर आर्थर एस० एडिंग्टनने लिखा है :

"यह पुराना खयाल कि ख़ुदा नहीं है, अब जाता रहा। मज़हबका नाता रूह और अन्दरकी दुनियासे है। इसलिये मज़हबको डिगाया नहीं जा सकता।"

बड़े बड़े साइन्सवाले अब मानते हैं कि दरख़्तों, पौधों और छोटेसे छोटे कीड़ोंसे लेकर इन्सान तक सबमें रूह ही का ज़हूर है। लन्दन, बौन, लेडिन, लीपज़िग और दूसरी बहुतसी यूरोप और अमेरिकाकी युनिवर्सिटियोंमें रूहानी चीज़ोंकी खोजके लिये ख़ास महकमे खुलते जा रहे हैं, जहाँ पुराने मिस्रकी मज़हबी किताबोंसे लेकर हिन्दुस्तानके योग या सूफ़ियोंके सलूक तककी तालीम दी जाती है।

जब साइन्स और मज़हबके बीचकी दीवालें टूटेंगी, तो मज़हब मज़हबके बीचकी दीवालें भी टूटे बिना नहीं रह सकतीं। तभी मुल्क मुल्क और क़ौम क़ौमके बीचकी दीवालें भी टूटेंगी। तभी सब क़ौमों, सब मुल्कों और सब इन्सानोंके दिल मिलेंगे।

प्रश्न —

१. एशियामें मज़हवका असली काम क्या है? वादमें उसमें खरावियाँ कैसे घुसती हैं?
२. यूरोपमें मज़हवकी हालत क्या रही है?
३. सव मज़हवोंमें वुनियादी एकता है, कैसे? मज़हव और साइन्समें एकता कैसे है?
४. दुनियामें नया मज़हव क्यों आता है?
५. दुनियाके वड़े साइन्सवालोंका मज़हवके वारेमें क्या कहना है?

१४

जब किसान गाता है

[श्री देवेन्द्र सत्यार्थी]

[आपने भारतकी भाषाओंके लोकगीतोंका संग्रह देशमें घूम घूमकर किया और एक खानावदोशके रूपमें आपने लोगोंके कंठसे लोकगीत सुने और उनको अपने ढंगसे जनताके सामने रखा। आपने गीतोंका अनुवाद वड़ी वफ़ादारीसे किया है, न एक शब्द ज्यादा, न एक कम। सचमुच यह भारी मेहनतका और जन-उपयोगी काम है। आपने अिस वड़े क़ीमती कामसे देशकी वोलियोंमें इधर उधर विखरे हुए, मगर वड़े सुन्दर और वहुमूल्य मोतियोंको एक जगह इकट्ठा कर दिया है और यह काम इतिहासकार और मनुष्य-समाजके अभ्यासियोंको उनके काममें वड़ी भारी मदद देगा। आपकी ज़वान वड़ी मीठी, रोचक और सुरीली है।

महात्मा गांधीने आपके वारेमें कहा है, "पचाससे अधिक भाषाओंके कोई तीन लाख लोकगीत संग्रह कर डालना कोई

छोटा काम नहीं। तुम्हारे बीस वर्ष इसी काममें खर्च हो गये। आनेवाली पीढ़ियाँ कवि-हृदय रखनेवाले लेखकका स्मरण करेंगी, जिसने धरतीके गीत अपनी झोलीमें भरकर साहित्यके सम्मुख रख दिये। . . . सचमुच लोकगीतोंमें धरती गाती है, पहाड़ गाते हैं, नदियाँ गाती हैं, फ़सलें गाती हैं, उत्सव और मेले, ऋतुएँ और परम्पराएँ—सभी गाती हैं।"

धरती गाती है, धीरे बहो गंगा, गाए जा हिन्दुस्तान, चट्टानसे पूछ लो, आदि इनके लोकगीतोंके कुछ संग्रह हैं।]

(धरतीका लाल अपने जीवन-संघर्षकी गाथा अपने पीढ़ी दर पीढ़ी चले आनेवाले गीतोंमें बड़े मज़ेसे सुनाता है। और जब भी वह कोई पुराना गीत छेड़ता है, उसे नये युगका सम्पर्क प्राप्त हुए बिना नहीं रहता। यही लोकगीतकी शक्तिका रहस्य है।)

मरुभूमिकी शून्यताको चीरता हुआ राजस्थानी लोकगीत जब अँधियारी रातके पथिक, किसी ऊँटवालेके ओठों पर थिरक उठता है, तो यों लगता है कि यह तो अत्यन्त आवश्यक वस्तु है। ऊँटवालेके गीतमें हल चलाते हुए किसानके गीतसे अलग स्वर सुनाई देंगे। चाँदनी रातका वह गीत जो बैलगाड़ीके पहियोंकी रीं-रींके साथ ताल मिलाकर गाड़ीवानके कण्ठसे मुखरित हो उठता है, उसके स्वर अपने स्थान पर उपयुक्त प्रतीत होते हैं। यों लगता है कि यह गाड़ीवान पाँच हज़ार वर्ष पहलेके मोहेंजोदड़ोसे वे ही गीत गाता हुआ चला आ रहा है। इस कथनसे चौंकनेकी तो आवश्यकता नहीं, क्योंकि जो लोग मोहेंजोदड़ोकी खुदाईसे प्राप्त उस युगकी खिलौना गाड़ी देख चुके हैं, वे भलीभाँति जानते हैं कि राजस्थानी गाड़ी एकदम मोहेंजोदड़ोकी बैलगाड़ीके नमूनेकी है। फिर यह भी स्वीकार करना होगा कि मोहेंजोदड़ोका गाड़ीवान भी अवश्य कुछ न कुछ गाता होगा।

राजस्थानी गाड़ीवानके गीतके स्वर भी तो कुछ कम पुराने नहीं। इसी तरह गड़रियेका गीत अलग महत्त्व रखता है, उसकी भेड़ें उसके गीतके स्वरोंके साथ-साथ घास पर मुँह चलाती हैं। ज़रा कुएँके पास चलिये। यहाँ देखिये किस प्रकार कुएँसे 'वारा' ऊपर आनेकी ख़ुशीमें 'वारिया' अपने मधुर गान द्वारा 'कोलिया' से अनुरोध करता है कि वह बैलोंको दौड़ा ले चले, और उधर 'कोलिया' बैलोंके पीछे बैठे-बैठे न केवल उन्हें दौड़ाये लिये चलता है बल्कि उसके ओठों पर अलग किसी पुराने गीतके स्वर यों उमड़ आते हैं, जैसे आकाश पर वर्षाके मेघ घिर आते हैं। पनिहारियोंका गीत अलग विशेषता रखता है। चरखा कातते समय गाँवकी स्त्रीके कण्ठसे दूसरी ही स्वर-लहरी प्रवाहित होने लगती है। गाँव-गाँव घूमनेवाले ढाढ़ी अपनी सारंगी पर जो गीत गाते हैं, वे भी राजस्थानी लोकगीतकी विजय-पताका फहराते हैं। तानपूरे या इकतारे पर किसी न किसी गीतके स्वर छेड़नेवाले जोगी अथवा किसी अन्य घुमक्कड़ गायकका दर्शन भी राजस्थानी जीवनकी विशेषता है। विवाहके गीत, शिशुके जन्म पर गाये जानेवाले 'हालरे', लोरियाँ, भाई-बहनके स्नेहके गीत, सावनके झूलेके गीत—सभी राजस्थानी लोकगीतकी विशालता और बहुमुखी प्रतिभाके प्रतीक हैं।

सूर्यकी कड़ी धूपमें हल चलाते समय किसान कोई न कोई ऐसी तान अवश्य छेड़ देता है, जिसके द्वारा वह अपने जीवनकी कहानी सुनाता है, साथ ही वह धूपकी प्रखरताको भूलनेका यत्न भी करता है। उस समय जैसे स्वयं धरती अपने इस पुत्रको सान्त्वना देती है और उसके एक-एक बोल पर अपनी छाप लगा देती है।

राजस्थानमें कृषिके साधन बहुत सीमित हैं। पर किसानको अनथक परिश्रमकी धुन लगी रहती है। जैसे वह स्वयं प्रकृतिसे यह पाठ पढ़ चुका हो कि नवान्नके लिये भरसक प्रयत्न करे।

राजस्थानी किसानसे बात कीजिये। ज़रा यह भी जाननेका यत्न कीजिये कि उसकी बड़ी बड़ी आवश्यकताएँ क्या क्या हैं। शायद आपके प्रश्नोंके उत्तरमें वह झट कह उठेगा—

नुई मूंजरी खाट न चूवे टापरी,
भैंसड़ल्यां दो चार क दूझै बाखरी,
बाजर हन्दा रोट दहींमें ओलणा,
इतरा दे करतार फेर नहीं बोलणा।

—'नई मूंजकी खाट हो, झोंपड़ी टपकती न रहे,
दो चार भैंसे हों, दूसरे उनके लिये कोठा हो,
बाजरेका रोट दहींमें डुबोकर खानेके लिये हो।
बस करतार! इतना दे दे तो फिर मुंहसे कुछ नहीं बोलना!'

एक प्रार्थना-गीतमें राजस्थानी किसान इसी भावको और भी स्पष्ट करते हुए कहता है—

म्हांरा राम रघुनाथ!
इतना वर तो म्हांने दीज्यो,
नित उठ जोड़ूं हाथ।
आथुणो तो खेत दीज्यो, बिचमें दीज्यो नाड़ी,
घरवालीने छोरो दीज्यो भैंस ल्यावे पाड़ी।
दोय तो म्हांने छाली दीज्यो दोय दीज्यो लरड़ी,
काली भूरी दोनूं दीज्यो एक वणांला बरड़ी।
म्हारां राम रघुनाथ! इतना वर तो म्हांने दीज्यो
नित उठ जोड़ूं हाथ।

एक तो म्हांने हलियो दीज्यो, हाल दीज्यो ठाड़ी,
दोय तो म्हांने बैला दीज्यो, बिचमें दीज्यो गाड़ी।
बाजरी री रोटी दीज्यो ऊपर सक्कर घी,

दोय तो उपरां ते दीज्यो घणूं पड़ैलो सी।
म्हांरा राम रघुनाथ! इतना वर तो म्हांने दीज्यो।
नित उठ जोडूं हाथ।

—'ओ हमारे राम रघुनाथ, मुझे इतना वर देना,
मैं नित आँख खुलते ही हाथ जोड़ता हूँ।
पश्चिममें खेत देना, खेतके बीच तलैया हो।
घरवालीको छोरा देना, भैंस भी पड़िया लाये
दो बकरियाँ हों, दो भेड़ें—
काली और भूरी, जिनकी ऊनसे 'बरड़ी'* बुनी जायगी।
ओ हमारे राम रघुनाथ, मुझे इतना वर देना,
मैं नित आँख खुलते ही हाथ जोड़ता हूँ
एक हल देना, जिसके साथ मोटी फाल लगी रहे
दो बैल देना, जिनके बीच गाड़ी चल रही हो
बाजरेकी रोटी देना जिस पर शक्कर और घी हो।
ओढ़नेको देना दो गुदड़े—खूब जाड़ा पड़ेगा!'

इस प्रकार किसान अपनी मोटी-मोटी आवश्यकताओंका बखान करता है।

पर शायद किसानको यह समझते देर नहीं लगती कि केवल प्रार्थनासे काम नहीं चल सकता। उसे अपने परिश्रम पर भरोसा करना पड़ता है। जब परिश्रम फल देता है और घरमें किसी वस्तुका अभाव नहीं रह जाता, तो उसके कण्ठसे आनन्द और उल्लासका गान मुखरित हो उठता है, जिसमें किसान अपने भगवान पर व्यंग कसनेसे भी नहीं चूकता—

बनवारी हो लाल, कोन्यां थारे सारे!
गिरधारी हो लाल, कोन्यां थारे सारे!

* काली और सफ़ेद ऊनसे बुनी हुई कमली।

ऐं महल-मालिया थारे
थारी बराबरी म्हें करां
स कोई टूटा टापरी म्हारे!

—'हे वनवारी, हममें से कोई तुम्हारे आसरे नहीं।
हे गिरधारी, हममें से कोई तुम्हारे आसरे नहीं।
तुम्हारे महल अटारियाँ हैं,
तुम्हारी बराबरी मैं करता हूँ,
हमारे यहाँ भी टूटी झोंपड़ी है।'

आगे चलकर किसान कहता है—तुम्हारे यहाँ कामधेनु है, हमारी भी भैंसे हैं। तुम्हारे यहाँ हाथी-घोड़े हैं, हमारे भी ऊँट हैं और ऊँटनियाँ हैं। तुम्हारे पास भाला-बरछी है, हमारे पास जई-गंडासी है। तुम्हारे पास सागर है, हमारी भी तलैया है। तुम्हारे पास तोशक तकिये हैं, हमारी फटी गुदड़ी ही अच्छी है हमारे लिये। तुम्हारे पास रानी है, हमारी भी तो जाटनी है।

कृषि-गीतोंमें वर्षाकी चर्चा न हो, यह तो असंभव है। वर्षाके मेघको संबोधन करते हुए राजस्थानी किसान यों बात करता है, जैसे वह अपने किसी चिर-परिचित मित्रको अपने जीवनकी गाथा सुना रहा हो—

नित बरसो मेहा बागड़में,
मोठ बाजरी बागड़ निपजै,
गेहूँड़ा निपजै खादड़में,
नित बरसो मेहा बागड़में

—'हे मेघ बागड़ प्रदेशमें नित बरसो,
मोठ बाजरा बागड़में पैदा होता है
गेहूँ होता है खादड़में
हे मेघ, बागड़ प्रदेशमें नित बरसो।'

इस प्रकार गीतकी अगली कड़ियोंमें किसान यह बतानेका यत्न करता है कि बागड़ और खादड़की और क्या-क्या विशेषताएँ हैं। बागड़में ऊँट अच्छे होते हैं, खादड़में बैल। बागड़में भेड़ बकरियाँ अच्छी होती हैं और खादड़में भैंसें।

एक और राजस्थानी गीत 'हाली' नामसे प्रसिद्ध है। इसमें एक कन्या यह शिकायत करती है कि उसे 'हाली' अर्थात् हलवाहेसे क्यों व्याहा गया—

काली तो पीली एक मा मेरी बादली,
बरसन लाग्यो मेह
मेरे बाबाजीने कहियो ए
हालीने बेटी क्यूं दई !
आठ बलदां को ए मा मेरी नीरणी,
आठ हाल्याँकी छांक
मेरे बाबाजीने कहियो ए,
हालीने बेटी क्यूं दई !

—'हे माँ, कोई काली पीली बदली है।
मेंह बरसने लगा।
मेरे बाबाजीसे कहना
हलवाहेको बेटी क्यों दी ?
हे माँ, आठ आठ बैलोंको चारा डालना पड़ता है,
आठ आठ हलवाहोंकी छाक बनानी और ले जानी पड़ती है।
मेरे बाबाजीसे कहना
हलवाहेको बेटी क्यों दी ?'

बेटी फिर कहती है—माँ, मेरी दोनों देवरानी और जेठानी आपसमें लड़ती हैं। बताओ मेरे सिर पर छाक कौन उठावे ?

माँ उत्तर देती है—

> गजको तो काढ़ो ए लाड़ो मेरी घूंघटो
> मचक उठाओ झाझी छाक
> मेरे वावाजीनें कहियो ए
> हालीनें वेटी क्यूं दई?

—'हे लाड़ली वेटी, गजभरका घूंघट निकालो
झटका देकर भारी छाक उठा लो!
मेरे वावाजीसे कहना
हलवाहेको वेटी क्यों दी?'

वेटी कहती है—मैं खेत खेत फिर आई। मुझे अपना खेत कहीं नहीं मिला।

माँ कहती है—हे वेटी, टीवेकी आड़में टीवड़ी है। वस उसीके नीचे तेरे किसानका खेत है।

यह गीत वहुत लम्वा है और अिसमें किसान-जीवनकी अनेक महत्त्वपूर्ण रेखाएँ मिलती हैं।

एक और स्यल पर किसान कुलवधू कहती है—सास वहू खेतको चली। हाथमें लेली गंडासी। हमने झोपड़ी वनाई। सासने पूले काटे, मैंने काटे पचासों सरकण्डे। मेरे पतिने छाई तिरणी, देवरने गूँथा पाल। हमने झोंपड़ी वनाई। सास-वहूने मिलकर गारा वनाया। सारा पाल लीप डाला। हमने झोंपड़ी वनाई। यह झोंपड़ी हमारा महल है, यही झोंपड़ी हमारी अटारी। हमने झोंपड़ी वनाई।

किसानकी आवश्यकताएँ अविक नहीं होतीं। सन्तोप उसके जीवनका आदर्श रहा है।

एक गीतमें एक किसान स्त्री कहती है—

ऊंचीसी मेड़ी ओ राजा लाल किवाड़ी,
जें चढ़ बैठ्यो खोड़ो मिरगलो!
थे तो मारो नगरीका राजा,
खड़ी ऐ पुकारै ओ जाझी जाटनी।

—'हे राजा, ऊँची मेड़ी है, लाल किवाड़ लगे हैं
इस पर लँगड़ा हिरण चढ़ बैठा है
हे नगरीके राजा, इस हिरनको मारो
जाझी जाटनी खड़ी पुकार रही है।'

राजा कहता है—

काई थारो खायो, ए जाझी जाटणी,
के थारो बिगाड़ियो ए
क्यों ए मरवावो ए खोड़ो मिरगलो?

—'तेरा क्या खाया उसने, ओ जाझी जाटनी?
तेरा क्या बिगाड़ा?
लँगड़े हिरनको क्यों मरवाती हो?'

स्त्री कहती है—

ढेर तो खायो ओ नगरीके राजा,
खेत बिगाड़ियो खोड़े मिरगला।

—'अन्नका ढेर जो खा डाला, ओ नगरीके राजा,
खेत बिगाड़ डाला लँगड़े हिरनने।'

इस प्रकार कृषि-गीतोंमें किसानोंने अपनी कठिनाईकी चर्चा करनेकी बात भी भुलाई नहीं है।

किसी-किसी गीतमें खिचड़ीकी प्रशंसामें किसान कहता है—

म्हारो मीठो लागै खीचड़ो,
म्हारो चोखो लागै खीचड़ो।

इस गीतमें किसान स्त्रीने सिरेसे लेकर अन्त तक खिचड़ी बनानेकी पूरी कहानी सुना डाली है।

कहीं कहीं ऊँटकी बड़ी सुन्दर चर्चा मिलती है, क्योंकि किसानके जीवनमें बैलोंके साथ साथ ऊँटोंका भी कुछ कम महत्त्व नहीं।

खेतीसे फुरसतके दिनोंमें किसान ऊँट लादनेका भी काम कर सकता है। किसान स्त्रीको शायद यह पसंद नहीं। वह कहती है—

मत ऊंट बिसाहो, दोरो छै, मारूजी,
ठंडी ठंडी पिछवा चाले,
ऊपर बरसे मेह।
सारे बदनमें छूटे कंपकंपी,
भीजै सारी देह,
मारूजी, सुनसान जंगलमें रात अंधेरी थारो चालणो।

—'हे मारूजी, ऊँट मत बिसाहो। ऊँटोंका लादना कितना कठिन है
ठंडी पछवाँ चलती है,
ऊपरसे मेंह बरसता है,
सारे शरीरमें कंपकंपी छूटती है,
सारी देह भींग जाती है।
हे मारूजी, सुनसान रास्तों पर चलना कितना कठिन है।'

जब ये शब्द संगीतके पंखों पर उड़ते हैं, तब तो लोकगीतका जादू सिर पर चढ़कर बोलता है।

लोकगीतका वास्तविक आनन्द तो उसके मूल रूपमें है।

किसानके जीवनमें जो कठिनाइयाँ हैं, उन्हें मधुर बनानेका श्रेय सबसे अधिक लोकगीतको है, जिसके स्वरोंमें हम किसान-जीवनको एक जानी-पहचानी पगडंडी पर चलते देखते हैं।

स्पष्ट है कि भविष्यमें जब राजस्थानी किसान जीवनकी प्रगति और विज्ञानकी सहायतासे नई समृद्धिको प्राप्त होगा, तो राजस्थानी कृषि-गीतोंकी रूपरेखा भी बदलेगी — अवश्य बदलेगी।

प्रश्न —

१. राजस्थानी लोकगीतकी विशालता और बहुमुखी प्रतिभा किनके गीतोंमें नज़र आती है?
२. लोकगीतोंकी शक्तिका और उनके जादूका वर्णन कीजिये।
३. किसानोंकी क्या क्या ज़रूरतें हैं। उनकी कठिनाइयाँ क्या हैं?
४. किसान-कन्या अपनी माँसे क्या शिकायत करती है? माँ उसे क्या जवाब देती है?
५. दो तीन गुजराती लोकगीतोंका वर्णन हिन्दी भाषामें कीजिये।
६. 'लोकगीतोंमें लोगोंके सुख-दुःखमय जीवनकी रूपरेखा मिलती है।' यह कथन अच्छी तरहसे समझाइये।

१५

चचा छक्कनने सबके लिये केले ख़रीदे

[श्री इम्त्याज़अली ताज]

[आप कुछ अरसे तक 'कहकशा' मासिकके सम्पादक रहे। आप ऊँचे दरजेके कहानी और नाटक लेखक हैं। आपने 'अनारकली' नामक बेजोड़ नाटक लिखा है। आपकी भाषा सरल और सीधी है, मगर असर करनेवाली है। 'चचा छक्कन' का आपने ऐसा चित्र खींचा है कि पढ़ते-पढ़ते मारे हँसीके पेट दुखने लगता है। एक मामूलीसी बातको लेकर मनुष्य-प्रकृतिका आपने जो दर्शन कराया है, उससे पता चलता है कि आपने मनुष्य-जीवनका किस बारीकीसे अभ्यास

किया है। आपकी शैली बड़ी रोचक और हृदयस्पर्शी है, और भाषाकी रवानी तो ग़ज़बकी है।]

एक बात मैं शुरूमें ही कह दूं। इस वाक़येको बयान करनेसे हरगिज़ मेरी ग़रज़ यह नहीं कि इससे चचा छक्कनकी प्रकृतिके जिस अंग पर प्रकाश पड़ता है उसके सम्बन्धमें आप कोई स्थायी राय निर्धारित कर लें। सच तो यह है कि चचा छक्कनका इस प्रकारका वाक़या मुझे सिर्फ़ यही एक मालूम है। न इससे पहले कोई ऐसा वाक़या मेरी नज़रसे गुज़रा और न बादमें, बल्कि ईमानकी पूछिये तो इसके विपरीत घटनाएँ बहुतायतसे मेरे देखनेमें आ चुकी हैं। कई बार मैं खुद देख चुका हूँ कि शामके वक़्त चचा छक्कन बाज़ारसे कचौरियाँ या गंडेरियाँ या चिलग़ोज़े और मूँगफलियाँ एक बड़े-से रूमालमें बाँधकर घर पर सबके लिये ले आये हैं। और फिर क्या बड़ा और क्या छोटा, हरएकमें बराबर-बराबर बाँटकर खाते-खिलाते रहे हैं। पर इस रोज़ अल्लाह जाने क्या बात हुई कि . . . पर इसका विस्तृत वर्णन तो मुझे यहाँ करना है।

उस रोज़ तीसरे पहरके वक़्त इत्तफ़ाक़से चचा छक्कन और विन्दोके सिवाय कोई भी घरमें मौजूद न था। मीर मुन्शी साहबकी पत्नीको प्रसूतिका बुखार आ रहा था। चची दोपहरके खानेसे निवृत्त होकर उनके यहाँ बीमार-पुरसीके लिये चली गई थीं। विन्नोको घर छोड़ जा रही थीं कि चचाने कहा—बीमार-पुरसीको जा रही हो तो शामसे पहले भला क्या लौटना होगा, बच्ची पीछे घबराएगी। साथ ले जातीं; वहाँ बच्चोंमें खेलकर बहल रहेगी। चची बड़-बड़ाती हुई विन्नोको साथ ले गईं। नौकर चचीको मीर मुन्शी साहबके घर तक पहुँचाने जा रहा था मगर विन्नो साथ कर दी गई तो बच्चीके ख़यालसे उसे भी वहाँ ठहरना पड़ा।

लल्लूके मदरसेका डी. ए. वी. स्कूलसे क्रिकेटका मैच था। वह सुबहसे उधर गया हुआ था। मोदेकी रायमें लल्लू अपनी टीमका

सबसे अच्छा खिलाड़ी है। अपनी इस रायकी बदौलत उसे क्रिकेटके अक्सर मैचोंका दर्शक बननेका मौक़ा मिल जाता है। इसलिये साधारण नियमानुसार आज भी वह लल्लूकी अरदलीमें था।

दो बजेसे सिनेमाका मेटिनी शो था। दद्दू चचासे इजाज़त लेकर तमाशा देखने जा रहा था। छुट्टनको जो पता लगा कि दद्दू तमाशेमें जा रहा है तो ऐन वक़्त पर वह मचल गया और साथ जानेकी ज़िद करने लगा। चचाने उसकी पढ़ाई-लिखाईके विषयमें चचीका हवाला दे-देकर एक छोटा किन्तु विचारपूर्ण भाषण करते हुए उसे भी अनुमति दे दी। बात असल यह है कि चची कहीं मिलनेके लिये गई हों, तो बाक़ी लोगोंको बाहर जानेके लिये चचासे इजाज़त लेना कठिन नहीं होता। ऐसे सुवर्ण अवसरों पर चचा पूर्ण एकान्तको अधिक पसन्द करते हैं। दूसरी मसरूफ़ियातने जिन कार्योंकी ओर चचीको एक कालसे ध्यान देनेका अवसर नहीं दिया होता, ऐसे समय चचा ढूंढ़-ढूंढ़कर उनकी ओर ध्यान देते हैं। इससे चचीको यह भाव प्रदर्शित करना इष्ट होता है कि घरकी मशीनमें उनका अस्तित्व एक निरर्थक पुर्जेसे अधिक महत्त्व नहीं रखता और यह चचा ही की जातिगत महानताका प्रभाव है कि दृष्टिको घरमें व्यवस्था और सुघड़ताके कोई चिन्ह नहीं दिखाई देते हैं।

आज आपकी क्रियाशील बुद्धिने चचीकी अनुपस्थितिमें घरके तमाम ऐसे बर्तन जो पीतलके थे, आँगनमें जमा कर लिये थे। बिन्दोको बाज़ार भेजकर दो पैसेकी इमली मँगाई थी; आँगनमें मोढ़ा डालकर बैठ गये थे। पाँव मोढ़ेके ऊपर रखे हुए थे, हुक्केका नैचा मुँहसे लगा हुआ था। व्यक्तिगत निगरानीमें पीतलके बर्तनोंकी सफ़ाई की व्यवस्था हो रही थी।

'अरे अहमक़, अब दूसरा बर्तन क्या होगा, जो बर्तन साफ़ करने हैं, उन्हींमें से किसी एकमें इमली भिगो डाल। और का ...

यों . . . वस यही पीतलका लोटा काम दे जायगा। साफ़ तो इसे करना ही है, एक दूसरा वर्तन लाकर उसे ख़राव करनेसे क्या लाभ? ऐसी वातें तुम लोगोंको खुद क्यों नहीं सूझ जाया करतीं?'

विन्दोने आज्ञा-पालनमें कुछ कहे विना अिमली लोटेमें डाल भिगो दी। चचाने अभिमानसे संतोषका प्रदर्शन किया—कैसी वताई तरकीव? जरूरत भी पूरी हो गई और अपना . . . यानी काम भी एक हद तक हो गया। ले अव वावरचीख़ानेमें जाकर वरतनमें माँजनेकी थोड़ीसी राख ले आ। किस वरतनमें लायेगा भला?

विन्दोने वड़ी वुद्धिमत्तासे सभी वरतनों पर दृष्टि डाली और उनमें से एक थाली उठाकर चचाकी तरफ़ देखने लगा। चचा भी इस कामके लिये शायद थाली ही तजवीज़ करना चाहते थे। राय देनेका गौरव न मिल सका। पूछने लगे—'क्यों भला?'

विन्दो वोला—चूल्हेसे उठाकर अिसमें आसानीसे राख रख सकूँगा।

'अहमक़ कहींका, इसके अलावा राख खुले वरतनमें होगी तो उठा-उठाकर वरतन माँजनेमें आसानी न होगी?

विन्दो अभी वावरचीख़ानेसे राख लाने न पाया था कि दरवाज़े पर एक फलवालेने आवाज़ लगाई—कलकतिया केले वेचने लाया था। उसकी आवाज सुनकर कुछ देर तक तो चचा खामोश वैठे हुक्का पीते रहे—कश अलवत्ता जल्दी जल्दी लगा रहे थे। मालूम होता था दिमाग़में किसी क़िस्मकी कशमकश जारी है। जव आवाजसे मालूम हुआ कि फलवाला वापस जा रहा है तो जैसे वेवस-से हो गये। विन्दोको आवाज़ दी—ज़रा जाकर देखो तो, केले किस हिसाव देता है।

विन्दोने वापस आकर वताया—छः आने दरजन।

'छः आने दरजन, तो क्या मतलव हुआ; चौवीस पैसेके वारह . . . वारह दूनी चौवीस, यानी दो-दो पैसेका एक। ऊँहूँ, महँगे हैं। जाकर कह, तीन-तीन पैसेके दो देता है तो दे जाय।'

दो मिनटके वाद विन्दोने आकर कहा कि मान गया, कितने केले लेने हैं?

फलवाला इस आसानीसे सहमत हो गया तो चचाकी नियतमें खोट आया।

'यानी तीन-तीन पैसेके दो? क्या खयाल है, महँगे नहीं इस भाव पर?'

विन्दो वोला—'अव तो उसके भावका फ़ैसला हो गया।'

'तो किसी अदालतका फ़ैसला है कि इतने ही भाव पर केले लिये जायँ। हम तो तीन आने दरजन लेंगे, देता है दे, नहीं देता है न दे। वह अपने घर खुश, हम अपने घर खुश।'

विन्दो असमंजसकी दशामें खड़ा था। 'अवे तू जाकर कह भी तो सही, मान जायगा।'

विन्दो जानेसे कतरा रहा था—आप खुद कह दीजिये।

चचाने जवावमें आँखें फाड़कर विन्दोको घूरा। वह वेचारा डर गया। मगर अव वहीं खड़ा रहा। चचाको उसका असमंजस किसी हद तक उचित मालूम हुआ। उसे तर्कका रास्ता समझाने लगे—तू जाकर यूं कह, मियाँने तीन आने दरजन ही कहे थे, मैंने आकर ग़लत भाव कह दिया। तीन आने दरजन देने हों तो दे जाय।

विन्दो दिल कड़ा करके चला गया। चचा जानते थे, भाव ठहराकर उससे फिर जाने पर केलेवाला शोर मचायेगा। वाहर निकलना युक्तिपूर्ण न मालूम होता था। दवे पाँव अंदर गये और कमरेकी जो खिड़की ड्योढ़ीमें खुलती थी, उसका पट ज़रा-सा खोलकर वाहर झांकने लगे। फलवाला गरम हो रहा था—आप ही तो एक भाव ठहराया और अव आप ही ज़वानसे फिर गये। वहाना नौकरकी भूलका, जैसे हम समझ नहीं सकते! या वेईमानी तेरा ही आसरा।

बिन्दो ग़रीब चुपका खड़ा था। फलवाला बकता-झकता खोंचा उठा चलने लगा। बिन्दो भी अन्दर जानेको मुड़ गया। दरवाज़े तक पहुँचने न पाया था कि फलवाला रुक गया। खोंचा उतारकर बोला —कितने लेने हैं?

बिन्दो अन्दर आया तो चचा मोढ़े पर बैठे जैसे किसी विचारमें तल्लीन हुक्का पी रहे थे। चौंककर बोले—मान गया? हम न कहते थे, मान जायगा। हम तो इन लोगोंकी नस-नससे वाक़िफ़ हैं। तो कँ केले लेने मुनासिब होंगे? चचाने उँगलियोंकी पोरों पर गिन-गिनकर हिसाब लगाया—हम आप, छुट्टनकी माँ, लल्लू, दद्दू, बिन्नू और छुट्टन, गोया छः, छः दूनी क्या हुआ? खुदा तेरा भला करे बारह। यानी एक दरजन। फ़ी आदमी दो केले बहुत होंगे। फलसे पेट तो भरा नहीं जाता। मुँहका स्वाद बदला जाता है। पर देखियो, दो तीन गुच्छे अन्दर लेकर आना, हम आप उनमें से अच्छे-अच्छे केले छाँट लेंगे।

फलवालेने शिकायतकी सदा लगाते हुए केलोंके गुच्छे अन्दर भेज दिये। चचाने केलोंको दबा-दबाकर देखा, उनकी चित्तियोंका अध्ययन किया और दरजन भर केले अलग कर लिये। केले-वाला बाक़ी केले लेकर बड़बड़ाता हुआ विदा हो गया। चचाने बिन्दोकी ओर रुख़ किया—ले, इन्हें खानेकी डोलीमें हिफ़ाज़तसे रख दे। रातके खाने पर लाकर रखना। और जल्दीसे आकर बरतन माँजनेके लिये राख ला। बड़ा समय इस सौदेमें नष्ट हो गया।

बिन्दो केले अन्दर रख आया। और बावरचीख़ानेसे राख लाकर बरतन माँजने लगा। 'यूँ... ज़रा ज़ोरसे हाथ, ताकि बरतन पर रगड़ पड़े, इस तरह! पीतलके बरतन साफ़ करनेके लिये ज़रूरत इस बातकी होती है कि इमलीके प्रयोगसे पहले उन्हें एक बार ख़ूब अच्छी तरह माँजकर साफ़ कर लिया जाय। ऐसे सब

वरतनोंकी सफ़ाईके लिये इमली निहायत लाजवाव नुस्ख़ा है। गिरहमें बाँध रख। किसी रोज़ काम आयेगा। और एक पीतल ही का क्या ज़िक्र? धातुके सभी सामान इमलीसे दमक उठते हैं। अभी-अभी तू आप देखियो कि इन काले-काले वरतनोंकी सूरत क्या निकल आती है। हाँ, और वह मैंने कहा केले एहतियातसे रख दिये हैं न? हूँ। अच्छे भाव मिल गये। एक-एकके लिये दो-दो ठीक रहेंगे। . . . यूँ वस मँज गया। अव रगड़ उस पर इमली। इस तरह। देखा, मैल किस तरह कटता है, कैसी चमक आती जा रही है! यह इमली भी सचमुच वड़ी वेजोड़ चीज़ है। मगर मैंने कहा, विन्दो मेरे भाई, ज़रा उठियो तो। उन केलोंमें से जो दो हमारे हिस्सेके हैं हमें ला दीजियो। हम तो अभी ही खाये लेते हैं, वाक़ी लोग जव आयेंगे, अपना हिस्सा खाते रहेंगे।

विन्दोने उठकर दो केले चचाको ला दिये। चचाने मोढ़े पर उँकड़ू वैठे-वैठे पेंतरा वदला और केलोंको थोड़ा-थोड़ा छीलना और मज़ेसे खाना शुरू किया। 'तू किये जा अपना काम; ज़रा झपाकसे। हाँ, देखना अव ज़रा देरमें इन वरतनोंकी शकल क्या निकल आती है . . . अच्छे हैं केले. . . वस यूँ ही। ज़रा ज़ोरसे हाथ . . . इस तरह . . . । छुट्टनकी अम्माँ देखेंगी तो समझेंगी, आज ही नये वरतन ख़रीद किये हैं। और फिर लुत्फ़ यह कि ख़र्च कुछ भी नहीं। हर्र लगे न फिटकरी, रंग चोखा आये। आख़िर कितनेकी आ गई इमली? न, न, ख़ुद ही कहो, कितनेकी आई इमली? दो पैसेकी न? तू आप ख़रीदकर लाया था। और फिर जो कुछ किया तूने अपने हाथसे किया है। यह तो हुआ नहीं कि तुझसे आँख वचाकर हमने वीचमें कुछ मिला दिया हो। वस, यह जितनी भी करामत है सिर्फ़ इमलीकी है। महज़ इमलीकी। और वह मैंने कहा, अव कै केले वाक़ी रह गये हैं। दस? हूँ। ख़ूव चीज़ है ना इमली? एक टकेके ख़र्चमें कायापलट हो जाती है। मगर विन्दो, इन दस

केलोंका हिसाव वैठेगा किस तरह? यानी हम शरीक न हों तब तो हरएकको दो केले मिल रहेंगे; लेकिन हमारे साझेके विना शायद दूसरोंका जी भी खानेको न चाहे। क्यों? छुट्टनकी अम्माँ तो हमारे वग़ैर नज़र उठाकर भी न देखना चाहेंगी। तूने खुद देखा होगा, कई वार ऐसा हो चुका है। और वच्चोंमें भी दूसरे हज़ार ऐव हों, पर इतनी ख़ूवी ज़रूर है कि वे लालची और स्वार्थी नहीं हैं। सवने मिलकर शरीक होनेके लिये हमसे अनुरोध शुरू किया तो वड़ी मुश्किल होगी। वरावर-वरावर वाँटनेके लिये केले काटने ही पड़ेंगे, और कलकतिया केलेकी विसात भला क्या होती है? काटनेमें सवकी मिट्टी पलीद होगी। कै केले वताये थे तूने? दस? दस केले और छः आदमी। टेढ़ी वात है। मगर हम कहते हैं कि समझो फ़ी आदमी एक-एकका हिसाव रख दिया जाय तो? दो-दो न सही। एक-एक ही हो; मगर खायँ तो सव हँसी-खुशीसे, मिल-जुलकर। ठीक है ना? गोया छः रख छोड़ने ज़रूरी हैं। तो इस सूरतमें कै केले ज़रूरतसे ज़्यादा हुए? चार ना? हूँ। तो मेरे ख़यालसे वह चारों ज़ायद केले ले आना। वाक़ीके छः तो अपने ठीक हिसावके मुताविक़ वँट जायँगे।'

विन्दो उठाकर चार केले ले आया। चचाने इतमीनानसे उन्हें वारी वारी खाना शुरू कर दिया।

'हाँ, तो तू क़ायल भी हुआ इमलीकी करामातका? असंख्य लाभोंकी चीज़ है। मगर क्या कीजिये, इस ज़मानेमें देशकी चीज़ोंकी ओर कोई ध्यान नहीं करता। यही इमली अगर विलायतसे डिव्वोंमें वन्द होकर आती, तो जनाव लोग इस पर टूटकर पड़ते। हर घरमें इसका एक डिव्वा मौजूद रहता। मगर चूँकि पंसारीकी दुकानसे प्राप्त हो जाती है, कोई ध्यानमें भी नहीं लेता। और फिर एक वरतनोंकी सफ़ाईका क्या ज़िक्र? इसके और भी वहुतेरे गुण हैं। यानी सिरदर्दकी शिकायतके लिये इससे अच्छी चीज सुननेमें नहीं आई। और फिर यह भी नहीं कि कड़वी-कसैली हो या वुरे स्वाद

की या दुर्गन्धपूर्ण हो। शरवत वनाइये, खट्टा-मीठा, ऐसा स्वादिष्ट होता है कि क्या कहिये।...केले भी वहुत स्वादिष्ट हैं। ज्यादः ले लिये तूने...इमलीका शरवत तो शायद तूने भी पिया हो। कैसा सुस्वादु होता है। गर्मियोंमें तो अमृत है। और फिर मज़ा यह कि लाभदायक भी वेहद। जैसा स्वाद वैसा ही गुण। मितलीको यह रोकता है। मितली नहीं जानता? अरे अहमक़, कैकी शिकायत। इसके अतिरिक्त पित्तके लिये यह लाभकारी है। पित्त भी एक चीज़ होती है, फिर कभी समझायेंगे। तो वह केले तो अव छः ही वाक़ी रह गये हैं ना? कुछ नहीं, वस ठीक है। वस ठीक है। सवके हिस्सेमें एक-एक आ जायगा। हमें हमारे हिस्सेका मिल जायगा। दूसरोंको अपने-अपने हिस्सेका। काट-छाँटका तो झगड़ा खत्म हुआ। अपने-अपने हिस्सेका केला लें। और जो जी चाहे करें। जी चाहे आज खायें, आज जी न चाहे कल खायें। और क्या, होना भी यूं ही चाहिये। अिच्छाके विना कोई चीज़ खाई जाय तो शरीरका अंश नहीं वनने पाती, यानी अकारथ चली जाती है। कोई चीज़ आदमी खाये उसी वक़्त, जव उसके खानेको जी चाहे। छुट्टनकी अम्मांकी हमेशा यही क़ैफ़ियत है। जी चाहे तो चीज़ खाती हैं, न चाहे तो कभी हाथ नहीं लगातीं। हमारा अपना यही हाल है। यह फुटकर चीज़ें खानेको कभी कदास ही जी चाहता है। होना भी ऐसा ही चाहिये। अव यही केले हैं, वीसियों मर्तवा दुकानों पर रखे देखे, कभी रुचि न हुई। आज जी चाहा तो खाने वैठ गये। अव फिर न जाने कव जी चाहे। हमारी तो कुछ ऐसी ही तवीयत है। न जाने शामको जव तक सव आयें रुचि रहे या न रहे। निश्चयसे क्या कहा जा सकता है? दिल ही तो है। मुमकिन है उस वक़्त केलेके नामसे मनमें घृणा हो। तो ऐसी सूरतमें हम जावें। हम तो वाक़ी छः केलोंमें से अपने हिस्सेका एक केला अभी खा लेते हैं। क्यों? और क्या? अपनी-अपनी तवीयत है, अपनी-अपनी

भूख; जब जिसका जी चाहे खायें, इसमें तक़ल्लुफ़ क्या? ऐसे मामलोंमें तो बे-तक़ल्लुफ़ी ही अच्छी।

'ऐ ज़ौक़ तक़ल्लुफ़में है तकलीफ़ सरासर,
आरामसे वह हैं जो तक़ल्लुफ़ नहीं करते।'

तो ज़रा उठियो मेरे भाई। बस मेरे ही हिस्सेका केला लाना। बाक़ीके सब वहीं अच्छी तरह रखे रहें।'

आज्ञाके अनुसार विन्दोने केला चचाको ला दिया। चचा छील कर खाने लगे।

'देख क्या सूरत निकल आई बरतनोंकी? सुभान-अल्लाह। यह इमलीका नुस्ख़ा मिला ही ऐसा है। अब इन्हें देखकर कोई कह सकता है कि पुराने बरतन हैं? जो देखेगा यही समझेगा, अभी अभी बाज़ारसे मँगवाकर रखे हैं। दूसरोंकी क्या बात? हमारी गैरहाज़िरीमें यूँ साफ़ किये गये होते, तो वापस आकर हम खुद न पहचान सकते। छुट्टनकी अम्माँ भी देखेंगी तो एक बार ज़रूर चौंक पड़ेंगी। तुझसे पूछें तो यह कह दीजो, मियाँ सारी दोपहर बैठकर साफ़ कराते रहे हैं। पर एक बात, इमलीका ज़िक्र न आने पाये, हाँ। ऐसी बात बता दो तो कामके वक़्त खो जाती है—समझ गया न? बस, यह इमलीकी बात आगे न निकलने पाये। जो पूछे, यही कहो, मियाँने एक नुस्ख़ा बनाकर उससे साफ़ कराये हैं। बच्चोंसे भी ज़िक्र न कीजो, वर्ना निकल जायगी बात। कब तक आयेंगे बच्चे? लल्लूका मैच तो शायद शामसे पहले ख़त्म न हो। उसके खाने-चायका इन्तज़ाम टीमवालोंने कर ही दिया होगा; वर्ना ख़ाली पेट क्रिकेट किससे खेला जाता है? कोई इन्तज़ाम न हो तो मोदेको भेज-कर वहीं खाना मँगवा सकता था। ख़ूब तर माल उड़ाया होगा आज। मेवे-मिठाईसे ठसाठस पेट भर लिया होगा। चलो क्या हर्ज है, यह उमर ही खाने-पीनेकी है। और फिर घरके दूसरे लोग

वढ़िया वढ़िया चीज़ें खायें तो वह वेंचारा क्यों पीछे रहे? दद्दू और छुट्टन तो टिकटके दामके साथ खाने-पीनेके लिये भी पैसे लेकर गये हैं। और क्या? वहीं किसी दुकान पर मेवा-मिठाई उड़ा रहे होंगे। खुदा खैर करे, गरिष्ठ चीज़ें खा-खाकर कहीं वदहज़मी न कर लायें। साथ कोई रोक-टोक करनेवाला नहीं है। तकलीफ़ होती है। विन्नोका तो यह है कि माँ साथ है, वह खयाल रखेगी कि कहीं ज़्यादा न खा जाय। मगर मैं कहता हूँ कि केले हमने आज वड़े वेमौक़ा लिये। उस वक़्त खयाल ही न आया कि आज तो यह सव वड़ी-वड़ी नियामतें उड़ा रहे होंगे। केलोंको कौन पूछने लगा? और तूने भी याद न दिलवाया, वर्ना क्यों लेते इतने वहुत-से केले? वेकार नष्ट हो जायँगे। उन पर रात गुज़र गई तो खाक भी वाक़ी न रहेगा। सूखकर काले पड़ जायँगे। मगर खुद उसकी दवा कर जिसकी दवा नहीं है। अव खरीद जो लिये, क्या किया जाय? किसी न किसी तरह तो नेग लगाना ही पड़ेगा। फेंके तो जा नहीं सकते। फिर ले आता यहीं, मजवूरीको मैं ही उन्हें खत्म कर डालूं।'

प्रश्न —

१. चचा छक्कनने केले खरीदनेमें क्या-क्या तरकीवें लड़ाईं?

२. चचा छक्कन इमलीकी कौन-कौनसी करामातें वयान करते हैं?

३. पिछले पाँच केले खानेके लिये चचाने क्या वहाने वनाये?

४. 'चचा छक्कनकी कहानी मनोवैज्ञानिक कहानी है', इस कथनको स्पष्ट समझाइये।

५. चचा छक्कनके गुण-दोषोंको अपनी भाषामें लिखिये।

१६

हिन्दूकुशकी सैर

[श्री अख्तरहुसैन रायपुरी]

[आप रायपुर, मध्यप्रदेशके निवासी हैं। आपकी भाषा मिलीजुली है और इसमें प्रवाह है। आप प्रगतिशील लेखकोंमें से हैं। आपको प्रवासका शौक़ है। आपके प्रवास-वर्णन एक सजीव चीज़ हैं। और पाठक वर्णन पढ़ते पढ़ते ऐसा अनुभव करते हैं कि जैसे ख़ुद ही प्रवास कर रहे हों। आप छोटी कहानियों-के लेखक भी हैं।।]

(१)

मैदानमें रहनेवालोंके लिये पहाड़ोंमें बड़ा आकर्षण है। पर सब पहाड़ सबको एकसे नहीं भाते। ज्यादातर लोग गर्मीसे बचने या तोंद छाँटनेके लिये ऊपर जाते हैं। उन्हें आवा-जाई और रहन-सहनकी शहरी आसानियोंकी तलाश पहाड़ों पर भी होती है। वे अपने साथ मैदानोंका एक हिस्सा ले जाकर पहाड़ोंकी चोटी पर थोप देते हैं। उनके नीरस परिवर्तनहीन जीवनकी छाप शिमला और मसूरी जैसी जगहों पर देख लीजिये। रिस्तोराँ, सिनेमा, नाचघर, घुड़दौड़ —इन सबसे सस्ते मनबहलावका सामान- तो हो जाता है। पर पहाड़ोंका वातावरण वहाँ कहाँ। जब तक उनकी चोटियों पर पैदल न चढ़िये, उनके नुकीले पत्थरोंको तलवों पर महसूस न कीजिये, उनकी खामोशीमें जीवनके कोलाहलको गुम होते न देखिये, उनके उतार-चढ़ावमें प्रकृतिकी रूपरेखाको न पढ़िये —तब तक इस हेरा-फेरीसे कुछ हासिल नहीं।

मानसिक शांतिकी तलाशमें में भी कभी कभी पहाड़ जाता हूँ। स्विटज़रलैंड और हिमालयमें दूर-दूर तक विचरनेका मौक़ा मिला है। पर हिमालयमें गरमीके मौसममें गया, जब वहाँ पानीकी कमी होती है। बेपानीका पहाड़ निजी जीवनकी स्थिरता और दुनियामें अपने अकेलेपनकी याद दिलाता है। पानीका बहाव प्रकृतिके मौनको भंग करके जैसे हर चीज़को हरकतमें ले आता है। आदमीको पत्थरकी अचलता और पानीके बहाव — दोनों — की ज़रूरत है।

जुलाईमें सरकारी नौकरी छोड़ देनेके बाद फिर एक नये संकटका मुक़ाबला था। अपनी बची-खुची ताक़तको सिमेटकर फिर एक नयी परिस्थितिसे लड़ना था। पर यूरोपकी कुंज-गलियों और सरकारी दफ़्तरोंमें बरसों रहनेके बाद यह ताक़त आत्माकी गहराइयोंमें सो-सी गयी थी। इस जादूको जगाना था — कहीं दूर जाकर उन्हीं पहाड़ोंके दामनमें, जिन्होंने पहिले भी कई बार मुझे सहारा दिया था।

ऐसे पहाड़ कहाँ हैं? सभ्यताके धनीधोरी हर जगह अपने दंभका प्रदर्शन करते मिलेंगे। किताबों और चौपायोंको छोड़कर जैसे ही इन आदमियोंका रुख़ कीजिये, यह काटनेको दौड़ते हैं। पहाड़ ही जाना हो तो ऐसी दूरकी कौड़ी लाइये, जहाँ सभ्यताका रोग न पहुँचा हो। नक़शेकी पड़ताल करते-करते उत्तरकी चरम सीमा पर दृष्टि पड़ी। चितराल, काश्मीर और सीमाप्रांतके बीचमें तीन रियासतें एक पर एक सीढ़ीकी तरह चढ़ती चली गई हैं — स्वात, दीर और चितराल। इनमें चितराल सबसे उत्तरमें है। इसके ऊपर पामीर और रूस हैं, पूर्वमें कश्मीर और काराकोरम और पश्चिममें अफ़ग़ानिस्तान व हिन्दूकुश। नीचे सीमाप्रांत है और इससे केवल एक प्रवेश मार्ग है, जिसे लाओरीकी घाटी कहते हैं। यह घाटी भी कोई ११ हज़ार फुट ऊँची है और कोई ग़लतीसे दोपहरके बाद इधरसे गुज़रनेका इरादा करे तो हवाका ऐसा ज़ोर होता है कि उड़कर

खड्डेमें ग़ायब हो जाय। अभी कुछ साल हुए कि दर्जनों सिपाही बीसियों खच्चरोंके साथ इसी घाटीकी अंवड़में लापता हो गये।

यह सब जानकर मुझे विश्वास हुआ कि चितरालके पहाड़ोंकी प्राचीर अभेद्य है। वहीं चलना चाहिये। हिन्दूकुशके आह्वानको स्वीकारना ही होगा।

(२)

चितराल पहुँचनेका तरीक़ा यह है:

नौशेरा जंकशनसे दुर्गई	छोटी रेल
दुर्गईसे दीर	मोटर
दीरसे लाओरीकी चोटी	घोड़ेकी सवारी

यहांसे चितराल रियासतकी सीमा आरम्भ होती है। पहाड़ोंसे उतरकर वादीमें पहुँचनेके लिये पैदल चलना होता है।

जब हम नौशेरा पहुँचे तो दुर्गईकी रेल छूट चुकी थी। लाचार टैक्सी लेकर दीर जाना पड़ा, जो वहांसे कोई डेढ़ सौ मील दूर है।

रास्तेमें दायें-बायें देखते चलिये। नौशेरासे कोई १८ मील दूर मरदान है, जिसके पास ही ख़ान अब्दुलग़फ़ारख़ांका गांव चारसदा है।

यहांसे कुछ ही मील पर धूलि-धूसरित पहाड़ियोंके पीछे आज़ाद क़बीलोंका इलाक़ा शुरू हो जाता है। वहीं बिजौर है जिसकी किसी गुफ़ामें फ़क़ीर इप्पी धुनी रमाये पड़े होंगे। इसकी विपरीत दिशामें 'याग़िस्तान' का आज़ाद इलाक़ा है, जिसमें भारतके प्रवासी वहाबी मुसलमान रहते हैं। इनके पूर्वज १८६४-६५ में अंग्रेज़ोंसे असहयोग करके घर-बार तज यहाँ चले आये थे।

अब आप स्वात नदीको पार कर रहे हैं। इसके दोनों किनारों पर दूर-दूर तक हरे-भरे खेत और फलोंके पेड़ सर जोड़े खड़े हैं।

सीमाप्रांतमें आप हर जगह देखेंगे कि पानीके पास रहनेवाले पहाड़के पड़ोसियोंकी अपेक्षा शांतिप्रिय होते हैं। इनमें पानीकी तरलता होती है। उनमें पत्थरकी कठोरता। पहाड़ोंमें रहनेवाले लड़ाकोंकी भी दो श्रेणियाँ हैं। जिन सपाट पहाड़ियोंमें न घास उगती है न फूल खिलते हैं, उनके निवासियोंमें मानव-प्रेमकी कमी होती है। पर ऊँचे पहाड़ोंके रहनेवालोंकी आनवान अलग होती है।

स्वातकी सरसब्ज़ वादीसे गुज़र कर हम मलकानके क़िलेके सामने पहुँच गये हैं। यह ब्रिटिश सत्ताका गढ़ और इन तीनों रियासतोंके पोलिटिकल एजण्टका ठिकाना है। यहाँसे आगे जानेके लिये परवाना लेना होता है। इसके विना ऊपर जानेकी मनाही है। हमारा परवाना पहलेसे तैयार रखा था, वल्कि चितरालके फ़ौजी दोस्तोंकी ओरसे साथ चलनेके लिये 'लेवी' के दो पठान वन्दूक़ची भी तैनात थे। हर पड़ावमें जो क़िलावन्द डाक-वंगला होता है, उसे 'लेवी-पोस्ट' कहते हैं। 'लेवी' सचमुचमें एक तरहकी 'मिलिशिया' है, जिसका काम सड़कोंकी चौकसी है। उसी इलाक़ेके क़वीलेवाले 'लेवी' में भरती किये जाते हैं और उन्हें सरकारकी ओरसे वेतन मिलता है।

अव हम दीर रियासतमें से गुज़र रहे हैं । गाँव वाड़ोंके अन्दर वसे हुए हैं, जिनके कोनों पर छोटे-छोटे मीनार सन्तरियोंके लिये वने हुए हैं। यह सव पठानोंकी वस्ती है और हर छोटा-वड़ा कारतूसकी पेटी वाँध वन्दूक़ लटकाये अकड़ता चला जाता है। ड्राइवरने कहा कि खोपड़ीसे टोप उतार दीजिये, कहीं कोई विगड़े-दिल किसी ओरसे छिपकर टोपको चाँदमारीका निशाना न वनाये।

शाम होनेवाली है। पठान औरतें अनाज या घासके गट्ठर पीठ पर लादे गल्ला हाँकती हुई घर लौट रही हैं। वे सव काले कपड़ोंमें छिपी हुई हैं और हमें देखकर पीठ फेर लेती हैं या गोरे हाथोंसे मुँह छिपा लेती हैं। उनके दुपट्टे दमक रहे हैं—सौंदर्यकी

कांतिसे या आकाशकी लालिमासे, पता नहीं। नन्हीं लड़कियाँ कौतूहलसे हमें ताकती हैं। और उनके कटे हुए बाल माथे पर अल्हड़पनसे हिलोरें खा रहे हैं। हवा सेब और नाशपातीकी महकसे बोझिल है। अखरोट और बादामके पेड़ अपने सुहावने भारसे लदे हुए हैं। चौपालोंमें बन्दूक़ोंकी कतारके बीचमें पठान भाट पुराने सूरमाओंकी कीर्ति बखान रहे हैं और सितारकी आवाज कभी कभी जोशमें आकर "दग़ा दे—दग़ा दे" की टेक पर सबके साथ सिर धुनने लगती है। सड़कके दायें-बायें दोतरफ़ा दुकानें लगी हैं, जिनमें खास तौर पर चायखानोंमें भीड़ है। हुक्के और चायका दौर चल रहा है। और कोई चारण अजबख़ाँ या आलमख़ाँकी कहानी सुना रहा है।

जब हम दीरके दीवारबन्द डाक-बंगलेके सामने पहुँचे तो अँधेरा हो चुका था। नहानेके लिये गर्म पानी और खानेके लिये दुम्बेकी दुमका पुलाव तैयार रखा था।

दूसरे दिनका सफ़र बड़ा टेढ़ा है। सुबह और शामके बीचमें घोड़े पर और पैदल कोई तीस मीलका दुर्गम पहाड़ी मार्ग तै करना है। हजार फुट चढ़ना और इतना ही उतरना है। दायें-बायें गहरे खड्डे हैं और इनके बीचोंबीच पहाड़ोंको काटती हुई पतली-सी पग-डंडी साँपके समान लहरा रही है। यह सबसे कड़ी मंजिल है। और इसकी कल्पना मात्रसे हमारा उत्साह ठंडा पड़ा जाता है।

देवदार और चीड़के ऊँचे ऊँचे पेड़ हमें रास्ता दिखा रहे हैं। एक पहाड़ी नदी शोर मचाती हुई साथ साथ चली जाती है और छोटे झरने गुनगुनाते हुए उससे गलबहियाँ कर रहे हैं। कहीं कोई बस्ती मिल गई तो हम ठहरकर दमभर आराम कर लेते हैं। उसके बाहर चुनारके चार घने पेड़ोंकी शीतल छायामें नमाज पढ़नेका चबूतरा है। लीप-पोतकर उस पर सूखी हुई घास बिछा दी गई है। ग्रामीण हमें सशंक दृष्टिसे घूरते हैं और उनके तेवर

कह रहे हैं कि आप जितनी जल्दी यहांसे चलते वनें उतना अच्छा होगा।

चुस्त और चालाक पहाड़ी घोड़ोंने हमें दोपहर तक लाओरीकी चोटी पर चढ़ा दिया। दोनों ओर हिममंडित पर्वतश्रेणी है। इसलिये घाटीमें हवाके वहावका ऐसा ज़ोर है कि सड़कके मोड़ पर पलभर भी ठहरना खतरा मोल लेना है। हवा वर्फ़में घुली हुई है और भरी दोपहरमें हम ओवरकोटके अन्दर थरथरा रहे हैं। अव हज़ारों फुटका ढलवाँ उतार है। इसमें घोड़े सवारी लेकर नहीं उतर सकते। हालाँकि मुद्दतके वाद उन पर वैठकर अंजर-पंजर ढीले हो गये हैं, फिर भी उन्हें प्रेमपूर्वक विदा करके हम आगे क़दम उठाते हैं।

जैसे जैसे नीचे उतरते जाते हैं, पाँव भरते जाते हैं, ताक़त जवाव देती जाती है। वर्फ़की नालियाँ हमारे डगरके पास वह रही हैं। लेकिन इनकी कच्ची वर्फ़को मुँहमें डालना रोग पालना है। रात वीते थके हारे हम मीर-खानीके लेवी पोस्टमें क़दम रखते हैं। यहाँ विच्छुओं और मच्छरोंकी भरमार है। पाँवकी रगें फटी पड़ती हैं, नींद हराम है। फिर भी यह सन्तोष है कि मंज़िल आ गयी, सवेरे चितरालकी घाटीकी सैर करते होंगे।

(३)

चितराली पठान नहीं हैं। इनमें तुर्कों और कश्मीरियोंका खून मिला हुआ है। यहाँके शासक 'मेहतर' कहलाते हैं। 'मेहतर' फ़ारसीमें राजकुमारको कहते हैं। इनका घराना तीन चार सौ सालसे चितराल पर राज कर रहा है। इनके पूर्वज तुर्किस्तानसे आये थे। चितराली वोली आदिम संस्कृत और तुर्की भाषाका विचित्र संमिश्रण है, जिसमें फ़ारसीका भी थोड़ा-सा पुट मिला हुआ है। इसमें संस्कृतके शव्द अपने शुद्धरूपमें इस तरह आते हैं कि अचंभेकी

हद तक नहीं रहती। 'स्त्री', 'अश्रु', 'हिम', 'कोमोर्' (कुमारी) जैसे पचासों शब्द तो बातों ही बातोंमें कानमें पड़ जाते हैं। पर चितरालीकी न अपनी लिपि है और न अपना साहित्य। सरकारी जवान फ़ारसी है और हिन्दुस्तानी आम तौर पर समझी जाती है।

चितरालको भारतसे कोई लगाव नहीं। हमारे देशसे इसे कभी कोई सरोकार न रहा और न किसी भारतीय विजेताका ध्यान इसकी ओर गया। कहते हैं कि मुसलमान बादशाहोंके ज़मानेमें जिन्हें निर्वासन-दण्ड मिलता था, वे इधर खदेड़ दिये जाते थे। अब भी जो लोग इधर सरकारी कामसे आते हैं, उन्हें 'समुद्र पार'का भत्ता मिला करता है! इन्हीं सब बातोंसे चितरालका रुख हमेशा तुर्किस्तानकी ओर रहा। इसीलिये यहाँके गाँव, मकान, बाज़ार और आदमी तुर्क या ईरानी लगते हैं। उनकी वेश-भूषा और रहन-सहन पर बड़ी हद तक तुर्कोंका असर है। उनकी अपनी सभ्यता या संस्कृति नहीं है और न निजका कोई संगीत ही है! सुरनाई (शहनाई), दमामा, ढोल, डफ़ और सितार—यह उनके बाजोंके नाम हैं। चितरालियोंके जो नाच देखनेमें आये, उनमें पठानोंके प्रसिद्ध खट्टक नाचकी नक़ल थी। हाँ, 'डैनी' 'सोज' और 'सूची' यह इनके जातीय नाच हैं और अपनी जगह पर खूब हैं। ऊपरी सूबेके 'अग्नि-परिक्रमा' और 'राजहंस'के नाच अपनी क़िस्मकी अनोखी चीज़ें हैं।

हालाँकि रियासतका रक़बा ख़ासा बड़ा है, पर आबादी डेढ़ लाखसे अधिक नहीं। खेती-बाड़ी पर लोगोंका गुज़ारा है और लगान व चुंगीके सिवा उन्हें कोई टैक्स नहीं देना होता। न स्कूल, न अस्पताल, न रेडियो, न सिनेमा और न अख़बार। लोग अज्ञानके वैभवसे मालामाल हैं। छः महीने बर्फ़में दबे पड़े रहते हैं और बाक़ी छः महीने टामकटोइयाँ मारते फिरते हैं। यानी हम सचमुच ऐसी जगह

पहुँच गये थे, जो समाधि-स्थलीसे भी अधिक प्रशांत थी। फलोंकी वहुतायत है और उन्हें वाहर ले जाना असंभव है। इसलिये दो पैसे सेरके हिसाबसे अंगूर और सेव ख़रीद लीजिये।

जव हम चितरालकी वादीकी सैर कर चुके, फ़ौजी अफ़सरों और हिज़ हाईनेसकी मेहमानीसे थक चुके और ताज़ी हवा व नये वातावरणसे निजकी और देशकी समस्याओंकी याद थोड़ी देरके लिये भुला दी, तो हमने ललचाई आँखोंसे पर्वतमालाओंको देखा, जो हमारे चारों ओर सिर-वुलन्द खड़ी हुई थीं। उत्तरमें तिर्चमीरकी चोटी दुल्हनकी तरह वर्फ़का घूंघट डाले कोहासेमें छिपी हुई थी। इसकी ऊँचाई कोई पच्चीस हज़ार फुट होगी। इसके पीछे रूसकी सीमा शुरू होती है। चितराल शहरसे लगभग ४० मीलकी सीव पर खड़े होकर झाँकिये तो 'लंगर किशन' नामी रूसकी हरावल चौकी दिखाई पड़ेगी। हमें न उधर जानेका अवकाश था और न साहस। या फिर तिर्चमीरके नीचे नीचे होते हुए मस्तूजकी राह गिलगिटसे कश्मीर निकल सकते थे। पर इसके लिये भी वड़े समय और प्रवन्धकी ज़रूरत थी। हमें तो 'हिन्दूकुशके काफ़िरोंको' देखना वदा था, जो रियासतके पछवाहे एक दुर्गम घाटीमें अफ़ग़ान सीमाकी तलहटीमें रहते हैं।

शायद आपने 'काफ़िरिस्तान' का नाम सुना हो। यह अफ़ग़ानिस्तानके पूरवका एक सूवा है और इसीका एक सिलसिला ऊँचे ऊँचे पहाड़ोंको चीरकर चितराल रियासतमें घुस आया है। जैसा कि नामसे ज़ाहिर है, यहाँके रहनेवाले 'काफ़िर' यानी मूर्तिपूजक हैं। अफ़ग़ानिस्तानके सव काफ़िर पिछले पचास सालोंके अन्दर मुसलमान हो गये और अव उनके सूवेका नाम 'नूरिस्तान' कर दिया गया है। काफ़िर ले देकर अव चितरालमें रह गये हैं। उनके दो क़वीले थे—'लाल' और 'काले'। इनमें से सव लाल काफ़िर

मुसलमान हो गये, केवल काले काफ़िर अपने मत पर चल रहे हैं। किसी जमानेमें ये लोग काले कपड़े पहनते थे, इसीलिये इन्हें यह नाम मिला। वरना देखनेमें ये लोग यूरोपियनोंसे कम गोरे-चट्टे नहीं। काफ़िरोंके इतिहासकी ठीक ठीक खबर किसीको नहीं। कोई इन्हें किसी भटके हुए यहूदी काफ़िलेकी औलाद बतलाता है, तो कोई सिकन्दरके नामलेवा यूनानियोंकी सन्तान कहता है। किसीका खयाल है कि यह उन पुराने आर्योंकी यादगार हैं, जो मुसलमानोंसे अपने धर्मको सुरक्षित रखनेके लिये जंगलों और पहाड़ोंमें जा छिपे थे।

मालूम नहीं कबसे यह काफ़िर यहाँ रस-बस रहे हैं। इतिहासमें इनका जिक्र सबसे पहले तैमूरने अपनी डायरी (तुज्क)में किया है। इसके बाद किरचर नामी पादरीने सन् १६६७ में 'चायना सेलेन्ट्रा' नामी किताबमें इनका चर्चा किया। यह सुनकर कि यह लोग मुसल-मान नहीं हैं, उसने सोचा कि हो न हो यह ईसाई होंगे। मध्य एशियासे जो महान् वाणिज्य-पथ (ट्रेड-रूट) चितराल होता हुआ हिन्दुस्तान आता था, उस पर आने-जानेवाले आर्मेनियन सौदागरोंने वही अफ़वाह यूरोपमें फैला दी। इस झाँसेमें आकर पादरी ग्रीगोरियो रायटने सन् १६७५ के लगभग काफ़िरोंके देशकी यात्रा की। उसे निराशाका मुँह देखना पड़ा, क्योंकि वह लिखता है कि "यह लोग मूर्तिपूजक हैं। महादेवकी पूजा करते और शराब पीते हैं। इनमें अज्ञानका ऐसा गहरा अँधेरा है कि ईसाई धर्मकी ओर इनका ध्यान भी न गया।"

इसके बाद दुनिया इन्हें भूल-सी गई। अलबत्ता मुसलमानोंसे इनकी सिरफुटौवलका सिलसिला जारी रहा और काफ़िरोंके विषयमें अजीब-अजीब बातें सुनी जाती थीं। अभी पचास साल पहले तक इनमें नरमेधकी प्रथा थी, खोपड़ियोंकी माला पहिननेका चलन था और जिसकी मालामें जितनी अधिक खोपड़ियाँ होतीं, वह उतना

ही शूरवीर समझा जाता। पर अब इस पुराने कबीलेके चलचलावका ज़माना है। सब लाल काफ़िर मुसलमान हो गये हैं। काले काफ़िरों के भी केवल पाँच सौ घर रह गये हैं। यह सब 'बम्बरेत' की प्रसिद्ध घाटीमें रहते हैं, जो चितराल और अफ़ग़ानिस्तानके बीचमें हिन्दूकुशकी पर्वतश्रेणीसे घिरी हुई है। इनकी ऊँचाई हर तरफ़ नौसे पन्द्रह हज़ार फुट तक है।

सबके मना करने पर भी हमने इस रहस्यमयी घाटीकी सैरका इरादा कर लिया। हमारे और काफ़िरोंके बीचमें एक चटियल पहाड़ था। यातायातकी कमीके कारण इस पर कोई पक्की पगडंडी न थी और कच्चे पत्थरोंके स्तरने इन पर चलना दूभर कर दिया था। हालांकि इसकी ऊँचाई केवल नौ हज़ार फुट थी, पर आज तक हमें ऐसा कड़ा रास्ता न नापना पड़ा होगा। न कहीं घासका एक तिनका था और न पानीकी एक बूंद। आठ घंटेकी लगातार चलाईके बाद आठ मील चलकर जब हम चोटी पर पहुँचे, तो साँस फूल रही थी, शरीर पसीनेमें शराबोर था, पाँव जवाब दे चुके थे। सामने बम्बरेतकी घाटी दो हज़ार फुटके उतार पर थी। सारी घाटी कोई १५ मील लम्बी और दोसे तीन मील तक चौड़ी होगी। उत्तरसे वह दक्षिणकी ओर चढ़ती चली गई थी और १४–१५ हज़ार फुट ऊँचे बर्फ़के पहाड़ोंके पीछे अफ़ग़ानिस्तान था।

इस घाटीका हर रज-कण पुकार पुकार कर कह रहा था कि हमारा व्यक्तित्व अलग है। बीचोंबीचसे 'बम्बरेतगोल' नामी पहाड़ी नदी कलकल नाद करती हुई चट्टानोंको नहलाती, अपने दुग्ध-श्वेत जलमें अपना मुँह देखती बह रही थी। उसके किनारे बेट मजनूंकी डालें पानीकी बलैयाँ ले रही थीं। हर तरफ़ खेत ही खेत थे, जिनमें गेहूँकी बालें और सरसोंके फूल दमक रहे थे। पहाड़ोंकी

पोर-पोरसे पानीकी नहरें वह रही थीं और प्रकृतिको यह जनपद इतना पसन्द था कि पत्थरोंमें लोहे और तांबेकी आभा फूटी पड़ती थी। भूमिके गर्भसे जो वैभव फटा पड़ता था, उससे लाभ उठानेवाला कोई न था। एक जगह तो हमने किसी झरनेमें पास ही पास पेट्रोल और सोनेका पानी वहता देखा!

पर इस भौतिक संपत्तिकी चर्चाका यह प्रसंग नहीं, क्योंकि यहांकी असली शोभा कुछ और थी। नदीके आसपास काफ़िर कुमारियाँ गाय-भेड़ चरा रही थीं या खेतोंमें काम कर रही थीं। उनके सुडौल शरीर एक गहरे भूरे लवादेमें छिपे हुए थे, जो गलेसे लेकर टखने तक लम्बा था और कमर पर कपड़ेकी पेटीसे वँधा हुआ था। दो चोटियाँ माथेसे निकालकर सिर पर लौटा दी गई थीं और एक अजीव-से पहिनावेसे ढँकी हुई थीं। यह मोटे कपड़ेका बड़ा-सा रूमाल था, जिसमें कौड़ियाँ टँकी हुई थीं और वह नाग-फनके समान उनके सुन्दर कपालों पर पड़ा हुआ था। यह लिवास कुछ कुछ पुरानी मिस्री औरतोंका-सा था, जो फ़िरऔनोंकी समाधियोंमें सदाके लिये सो रही हैं। पर्वतमाला पर धूपमें वर्फ़ चाँदीकी तरह चमक रहा था, उससे नीचे देवदार और चीड़के विशालकाय पेड़ मर्मर ध्वनिमें कोई कोरस गा रहे थे। यह जीवनका संगीत था—और आज तक अपने देशमें हमें ऐसी सुपमा देखनेका सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। पठान या चितराली औरतोंकी तरह काफ़िर सुन्दरियोंका अजनवी मर्दोंसे परदा न था। हाँ, हमें देखकर वे रास्तेसे हटकर खड़ी हो गई और संकोचसे सरसोंके फूलोंको अपने जुड़ोंमें खोसने लगीं।

हमारे स्वागतके लिये घाटीका सबसे प्रसिद्ध व्यक्ति 'मलंग' पुल पर मौजूद था। वे-कहे वह हमारा दुभापिया और पथप्रदर्शक वन वैठा। टॉल्स्टॉयने अपनी कहानी 'कोसेको'में जिस बूढ़े शिकारी 'इरोशका'का जिक्र किया है, मलंग उसीका-सा आदमी था।

काफ़िरोंके जो जानवर अफ़ग़ान सरहदमें चले जाते थे, उन्हें वापिस ले आनेका काम रियासतने मलंगके सुपुर्द किया था। वहारके दिनोंमें इन सव इलाकोंके घोड़े चरनेके लिये पहाड़ों पर छोड़ दिये जाते हैं और महीनों वहीं रहते हैं। फिर भी आपसवाले कभी इनकी चोरी नहीं करते। हाँ, अफ़ग़ान और काफ़िरोंमें इन्हें लेकर छेड़छाड़ चला करती है। और मलंग उसका निपटारा इस तरह करता है कि जितने जानवर गुम होते हैं, उतने ही सीमा-पारसे चुराकर ले आता है। अफ़ग़ानोंसे कई वार उसकी मुठभेड़ हो चुकी है। मलंग वन्दूक़के निशाने और नाच-गानेमें अपना सानी नहीं रखता। वह जानना चाहता है कि हम केवल 'वशाइक" (नाच) देखेंगे या 'जामजूर' (सुन्दर स्त्री) से भी पेंग वढ़ाएँगे। उसकी राय है कि 'वशाइक' तक तो ठीक है, क्योंकि काफ़िरोंके नाच दिलचस्प होते हैं, पर 'जामजूर' का मामला कुछ और है। कुमारी हो या विवाहिता, वह हँसी-खुशी किसी परपुरुषके पास जाये तो कोई कुछ न कहेगा, लेकिन प्रलोभन या ज़ोर ज़वरदस्तीकी सज़ा मौत है। नहीं, मलंग हमें केवल 'वशाइक' देखना, काफ़िरोंके रस्म-रिवाजोंको समझना और पहाड़ोंकी सैर करना है। हम किसी काफ़िर वस्तीमें जाकर किसी काफ़िरके घर रहना चाहते हैं, ताकि इन्हें करीवसे देखें।

मलंगके साथ हम घाटीमें दाख़िल हुए। झवरेदार पहाड़ी कुत्तोंने हम पर भौंकना और नौमुस्लिम कठमुल्लाओंने हमें घूरना शुरू किया। दो-चार काफ़िर वच्चे हमारे संग हो लिये। वे लवकुशके समान मृग-व्हाल या भेड़की खाल ओढ़े हाथमें तीर कमान लिये हुए थे। रास्तेमें कहीं काफ़िरोंके क़व्रिस्तान थे और उनमें लकड़ीके लम्वे-लम्वे सन्दूक़ ज़मीन पर रखे हुए थे। काफ़िर अपने मुर्दोंको उनके कपड़ों, गहनों और हथियारोंके साथ संदूक़में वन्द करके क़व्रि-स्तानमें रख देते हैं, और उनकी रखवाली उनका वड़ा देवता 'मारा'

करता है। उसकी मूर्ति पत्थरकी नहीं बल्कि लकड़ीकी होती है और पहिनावा किसी युनानी सौदागर-सा होता है।

हमारे ठहरनेका प्रबंध 'करकाल' नामक गाँवमें किया गया, जिसमें काले काफ़िरोंके सिवा कोई न बसता था। आम तौर पर घर लकड़ीके बने हुए थे और उनके साथ पत्थरके रोड़ों पर मिट्टीका गारा किये हुए अनाजघर थे। मकान दोमंजिला थे, जिनके ऊपर आदमी और नीचे ढोर रहते थे। ऊपर जानेके लिये लकड़ीकी सीढ़ी होती है, जो खतरेके समय उठा ली जाती है। मलंगने बतलाया कि हम 'चरबीवाला' मलिकशाहके मेहमान होंगे। 'चरबीवाला' काफ़िरोंकी बोलीमें बड़े आदमीको कहते हैं। मलिकशाह बाल-बच्चों समेत नीचे जानवरोंके साथ रहने चला गया और ऊपरकी लम्बी कोठरी हमारे लिये खाली कर दी गयी। इसे बुलवा और झड़वाकर हमने कैंप-बेड बिछाया और बड़ी बड़ी खिड़कियोंको खोलकर गाँव और पश्चाद्भूमिमें नदी व पहाड़का नजारा करने लगे।

काफ़िरोंके घरमें एक अलाव होता है, जिसकी आगमें वे तापते हैं और उसीमें खाना पकाते हैं। दिया जलानेका रिवाज नहीं है। लकड़ीकी छोटी छोटी कमचियोंसे अन्दर-बाहर मशालका काम लिया जाता है। सब पहाड़ियोंके समान यह लोग भी गन्दे होते हैं और उनमें यह कहावत प्रचलित है कि 'जो चीज मैली हो जाती है उसे साफ़ करनेसे क्या फ़ायदा।' अलबत्ता प्रसव और मासिक धर्मके समय औरतें गाँवसे निकाल कर दूरके एक बाड़ेमें रखी जाती हैं जहाँ कोई नहीं जाता। शहद, मक्खन और पनीर—यह तीनों उनके मनभाते खाजे हैं, पर जिनके भंडारको औरत नहीं छू सकती। यह सम्मान केवल शक्तिशाली पुरुषको ही प्राप्त है। खेती-बाड़ी और घरबारका काम औरतें ही करती हैं, मर्द शिकार और नाच-गानेमें समय काटते हैं। रातको सोनेसे पहले मर्दके पाँव धोना औरतकी दिनचर्यामें शामिल है।

शाम होते ही नदी-किनारेके मैदानमें 'नाच'का सरंजाम होने लगा। ज़मीन साफ़ की गयी, लकड़ीके बड़े बड़े कुंदे काटकर होलीकी-सी आग जलाई गयी और नगाड़े पर चोट पड़ने लगी, ताकि दूर दूरके काफ़िरोंको 'वशाइक' की सूचना हो जाये। जब अँधेरा हो गया तो हर तरफ़से बिछवे झनकने लगे, मशालें टिमटिमाने लगीं और मलंगने हमें बताया कि नाचकी तैयारी हो चुकी, बस आपकी देर है।

नदी धीमे सुरोंमें कोई बाजा-सा बजा रही थी, हिमाच्छादित पर्वतोंके शृंग पर अर्धचन्द्र हँसलीकी तरह पड़ा हुआ था, बीचमें अलावकी आग धधक रही थी और उसके चारों ओर कोई पचास औरत और इतने ही मर्द घेरा डाले खड़े थे। घेरेके बाहर ढोल बज रहे थे। आगकी रोशनियोंने आदमियोंकी छायाको प्रेताकार बनाकर फैला दिया था और ऐसा अजीब समाँ था कि हम थोड़ी देरके लिये भौंचक्के रह गये। घेरेके बाहर एक तिपाई पर हम बैठ गये। ढोलने कोई हलकी-सी गत छेड़ी और काफ़िर सुन्दरियाँ तीन तीनकी टुकड़ियोंमें बँट गयीं। उनके नुपूर हौले-से तिलमिलाये, उनके मीठे सुरोंने कहा—

'हमारे देशमें परदेसी आये हैं—परदेसी आये हैं।'

किसी किसीने आँखोंके चारों ओर बकरेके सींगका लेप कर लिया था और अपने सिंगार पर इतरा रही थी। बीच बीचमें मर्द "हो हो हो हो" का नारा लगा उठते थे और कुँवारे बरछी या लकड़ी हिलाते हुए नाचनेवालियोंके आसपास मँडराते और अपनी चहेतीका हाथ पकड़कर 'पोलका'-सा नाच शुरू कर देते। दूसरा नाच सिपाहियोंका था, जिसमें ढोलकी ललकार पर सब जंगी नारे बुलंद करते और पैंतरे बदलकर किसी कल्पित शत्रु पर हमला करते थे। उनका जोश बढ़ता गया, नगाड़ेकी झाईंसे वायुमण्डल काँप उठा और बरछियों और तलवारोंकी लपा-छपीने हमें डरा दिया। अगर कहीं उन्हें अपनी पुरानी रीति याद आ जाये और यह हमें 'मारा' देवता पर चढ़ानेका फ़ैसला कर लें तो क्या हो?

अब आधी रात हो रही थी। आखिरी नाचमें हम घेरेके अन्दर ले लिये गये। किसी मेहमानके प्रति यह सबसे बड़ा सम्मान प्रदर्शन है। सब हाथमें हाथ दिये, पाँव मिलाये आगका चक्कर लगाते जाते थे और उनके गीतकी यह टेक थी —

'परदेसी चला जायेगा — हाय, वह हमारा दिल भी ले जायगा।'

हमारी नजर एकाएक एक नवयौवना पर पड़ी, जो अपने मृगनयनों पर उँगलियाँ फैलाकर हमें काफ़िरोंकी प्रेमवन्दना कर रही थी। उसका कोमल गात एक काले लबादेमें फूलके समान खिल रहा था और वह चढ़ती जवानीमें भरपूर थी। मलंगने बतलाया कि उसका नाम 'गुलून' है और वह 'चरखीवाला' अय्यूबकी बेवती है।

हर रातको यह नाच होता है और गुलूनको चुपके-चुपके देखनेसे हम अपनेको नहीं रोक सकते। वह इठलाती है, बल खाती है और अय्यूब या अपने बाप टिगलकी तीखी चितवनसे कतराकर सहेली शर्गुल या सखी नमकीसे चुहल करने लगती है। अय्यूब प्राचीन कालके यहूदी पैग़म्बरोंकी तरह अपनी लम्बी सफ़ेद दाढ़ी हवामें लहराता हुआ नाचका मैनेजर बना हुआ है। मलंग हमारे पास संजय बना बैठा कह रहा है कि सालमें एक बार जवान लड़कियाँ और लड़के इसी मैदानमें इकट्ठा किये जाते हैं। अगर कोई लड़का किसी कुमारीका हाथ पकड़ ले तो समझा जाता है कि वह उससे विवाह करना चाहता है। लड़की हाथ न छुड़ाये तो उसके माँ-बाप लड़केसे पूछते हैं कि वह दहेजमें कितनी जमीन और ढोर देगा। यह समस्या हल हो जानेके बाद विवाह हो जाता है। पर लड़कीने हाथ छुड़ा लिया तो विवाह नहीं हो सकता।

पौ फटते ही हम पहाड़ोंकी सैरके लिये जाते हैं और रास्तेमें गुलूनको देखते हैं, जो गायें हाँकती या उपले थोपती मिलेगी। दोपहरको जब हम थककर लौटते और किसी चट्टान पर लेटकर इस नवदेशकी बातें सोचते हैं, तो वह मलंगके साथ हमारे पास आती और उस संसारकी बातें पूछती है, जिससे भागकर हम यहाँ आये

हैं। टॉल्स्टॉयके हीरो 'ओलिनिन' से क़ज़्ज़ाक सुन्दरी 'मिरयाका'ने जैसा दुर्व्यवहार किया था, गुलून हमसे वैसा वर्ताव नहीं करती। वह निष्पाप और निष्कलंक है। वह वाल्टर स्काटकी भोलीभाली लूसी है, जिसे इन्हीं जंगल-पहाड़ोंमें खिलना और मुरझाना है।

कल इस दिव्य भूमिसे चले जाना है। गाँवोंसे दूर चट्टानों पर हम मनमारे वैठे हैं। चाँदनी चटकी हुई है और चकोरोंके विलापके सिवा कुछ नहीं सुनाई देता। शायद यह शान्ति फिर नसीव न हो। मनुष्यको उसकी आदिम अवस्थामें कभी न देख सकें। वापसीके वाद उन्हीं आदमखोरोंका सामना होगा; खेतीमें भूख उगती होगी, वाज़ारोंमें ग़रीवोंका मांस विकता होगा। उस भीड़भाड़में हम वेज़वान पेड़ोंके समान अलग खड़े होंगे।

गाँवमें कहीं एकतारा वज रहा है और उस पर गुलून उदास सुरोंमें गा रही है—

'परदेसी किसीके नहीं होते,
वह आते हैं और चले जाते हैं।'

काफ़िरोंके देश अलविदा! अगर तू मुल्लाओंके चुंगलसे वचा रहा तो फिर कभी आयेंगे।

('विश्ववाणी' के सौजन्यसे)

प्रश्न —

१. पहाड़ोंकी सैर किस प्रकार करनी चाहिये?
२. स्वात और दीर प्रदेशके पठान लोगोंका रहन-सहन वताइये?
३. पहाड़ी मुसाफ़िरीका वयान कीजिये।
४. चितराल और वहाँके लोगोंके वारेमें आप क्या जानते हैं?
५. संक्षेपमें नोंध लिखें:—

(१) मलंग (२) काले काफ़िर (३) काफ़िरी स्त्रियाँ (४) काफ़िरोंका नाच (५) काफ़िरोंके रस्म-रिवाज और दैनिक जीवन (६) गुलन।

हिन्दी पाठावली

पद्य-विभाग

१

सूर संग्रामको देख भागै नहीं

[कबीर]

[कबीर साहबको न जाननेवाला शायद ही कोई मिलेगा। आप अपने भजनों और साखियोंसे बड़े लोकप्रिय हैं।

माना जाता है कि आपका जन्म सं० १४५६ में हुआ और मृत्यु सं० १५७५ में हुई। आप काशीमें पैदा हुए थे। आपने अपनी जातिके बारेमें एक जगह लिखा है—

'तू ब्राह्मन मैं काशीका जुलहा बूझहु मोर गियाना।'
(आदिग्रन्थ)

आप बड़े सदाचारी और सुशील थे। अपना जुलाहेका धंधा करते-करते आप ईश्वर-भजन किया करते थे। आप बड़े सत्संग-प्रिय थे। आपके यहाँ साधु-सन्तोंका और फ़क़ीरोंका ताँता लगा रहता था। आप बड़े सुधारक भी थे। पुराने रस्म-रिवाज, अंधश्रद्धा, मूर्तिपूजा आदिके आप कट्टर विरोधी थे। हिन्दू-मुस्लिम दोनोंको आप एक मानते थे। दोनोंमें एका रखनेका आपने हमेशा प्रयत्न किया।

आप पढ़े-लिखे कुछ न थे। आप भजन और साखियाँ कहते और सुननेवाले उन्हें याद कर लेते थे। बादमें इन सबका संग्रह

कर लिया गया। आपके ख़ास ग्रंथ ये हैं — शब्दावली, रेख़ता, ककहरा, अलिफ़नामा, साखी, बीजक।]

सूर संग्रामको देख भागै नहीं,
देख भागै सोई सूर नाहीं॥

काम औ' क्रोध, मद, लोभसे जूझना,
मँडा घमसान तहँ खेत माहीं॥

सील औ' साँच, सन्तोष साही भये,
नाम समसेर तहँ ख़ूब वाजै॥

कहैं कबीर कोइ जूझि है सूरमा,
कायराँ भीड़ तहँ तुरत भाजै॥

२

मन न रँगाये, रँगाये जोगी कपरा

[कबीर]

मन न रँगाये, रँगाये जोगी कपरा।
आसन मारि मंदिरमें बैठे, नाम छाँड़ि पूजन लागे पथरा॥

कनवा फड़ाय जोगी जटवा बढ़ौलें, दाढ़ी वढ़ाय जोगी होइ गैलें बकरा।
जंगल जाय जोगी धुनिया रमौलें, काम जराय जोगी वनि गैलें हिजरा॥

मथवा मुड़ाय जोगी कपरा रँगौलें, गीता बाँचिकै होइ गैलें लवरा॥
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, जम दरवजवाँ बाँधल जैबे पकरा॥

३

वृक्षनसे मत ले

[सूरदास]

[सूरदासके जन्मके वारेमें निश्चित जानकारी नहीं, मगर मानते हैं कि आपका जन्म सं० १५४० में दिल्लीके पास 'सीही' नामक गाँवमें हुआ था। आपने ९० सालकी आयु पायी। आपकी कविताके लालित्य और माधुर्यके वारेमें तो कहना ही क्या है? आप कृष्णभक्त कवि थे। हिन्दुस्तानके गवैये सूरदासके भजन खूब प्रेमसे गाते हैं। श्रीकृष्णकी अनेक लीलाओं पर काव्य लिखकर आपने अपनी अनुपम काव्य-शक्तिका परिचय करा दिया। आपके भजनोंमें ऐसी शक्ति है कि उन्हें गाते वक्त भक्तजनोंकी आँखोंमें प्रेमके आँसू आ जाते हैं। हिन्दी साहित्यमें सूरदासका क्या स्थान है, यह इस दोहेसे भलीभांति मालूम होता है—

सूर सूर, तुलसी ससी, उडुगण केशवदास।
अबके कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करहिं प्रकास॥]

वृक्षनसे मत ले,
मन तू वृक्षनसे मत ले।
काटे वाको क्रोध न करहीं,
सिंचत न करहिं नेह॥ वृक्षन०॥

धूप सहत अपने सिर ऊपर,
औरको छांह करेत।
जो वाहीको पथर चलावे,
ताहीको फल देत॥ वृक्षन०॥

धन्य धन्य ये पर-उपकारी,
वृथा मनुजकी देह।
सूरदास प्रभु कहँ लगि वरनौं,
हरिजनकी मत ले ॥ वृक्षन० ॥

४

निर्बलके बल राम

[सूरदास]

सुनेरी मैंने निर्वलके वल राम।
पिछली साख भरूँ संतनकी आड़े सँवारे काम ॥ ध्रुव० ॥
जव लग गज वल अपनो वरत्यो नेक सरो नहीं काम।
निर्वल ह्वै वल राम पुकारयो आये आधे नाम ॥
द्रुपद-सुता निर्वल भई ता दिन तजि आये निज धाम।
दु:शासनकी भुजा थकित भई वसन रूप भये श्याम ॥
अप वल, तप वल और वाहु वल चौथा है वल दाम।
सूर किशोर कृपासे सव वल हारे को, हरिनाम ॥

५

रे मन मूरख जनम गँवायो

[सूरदास]

रे मन मूरख जनम गँवायो।
करि अभिमान विषय सों राच्यो, स्याम सरन नहीं आयो ॥
यह संसार फूल सेमरको, सुन्दर देख लुभायो।
चाखन लाग्यो रूई गई उड़ी, हाथ कछु नहिं आयो ॥
कहा भयो अवके मन सोचे, पहले नाहिं कमायो।
कहे 'सूर' भगवंत भजन विनु सिर धुनि धुनि पछतायो ॥

६

नहिं ऐसो जनम बारम्बार

[मीराबाई]

[मीराबाईको कौन नहीं जानता होगा ? आप अपने भक्तिमय भजनोंके लिये खूब मशहूर हैं। आपका जन्म सं० १५५५ के आसपास मेवाड़में कुड़गी नामक गाँवमें हुआ था। आपकी मृत्यु कब हुई, उसका पूरा पता नहीं चलता। भक्त रैदासको आप अपना गुरु मानती थीं। आपका मन संसारके व्यवहारोंमें लगा ही नहीं और आपने सारा जीवन कृष्णभक्तिमें बिताया। आपके भजनोंसे पता चलता है कि आपके दिलमें कृष्णके प्रति कितना निर्व्याज प्रेम था।

आप संस्कृत भी जानती थीं। आपने 'गीतगोविन्द' की टीका लिखी है।]

नहिं ऐसो जनम बारम्बार।
का जानूं कछु पुण्य प्रगटे, मानुसा अवतार।
बढ़त छिन छिन घटत पल पल, जात न लागै बार।
बिरछ के ज्यूं पात टूटे, बहुरि न लागे डार।
भौसागर अति जोर कहिये, विपम ओखी धार।
राम नामका बाँध बेड़ा, वेगि उतरे पार।
ज्ञान-चौसर मँडी चोहटे, सुरत पासा सार।
या दुनियामें रची बाजी, जीत भावै हार।
साधु संत महंत ज्ञानी, चलत करत पुकार।
दासि मीरां लाल गिरधर जीवणा दिन च्यार॥

७

दरसन दीज्यो

[मीराबाई]

प्यारे दरसन दीज्यो आय, तुम बिन रह्यो न जाय,
जल बिन कमल, चंद बिन रजनी, ऐसे तुम देख्याँ बिन सजनी ।। १ ।।
आकुल व्याकुल फिरूँ रैन दिन, विरह कलेजो खाय,
दिवस न भूख, नींद नहिं रैना, मुखसूं कहत न आवे बैना ।। २ ।।
कहा कहूँ कछु कहत न आवे, मिलकर तपन बुझाय,
क्यूं तरसावो अंतरजामी, आय मिलो किरपाकर स्वामी।
मीरा दासी जनम जनमकी, पड़ी तुम्हारे पाय ।। ३ ।।

८

नाम-महिमा

[नामदेव]

[आपका जन्म महाराष्ट्रके पंढरपुरमें सन् १२७० में हुआ था। आप बड़े मशहूर संत हो गये हैं। आपने स्तुति-काव्य ही लिखे हैं। आपके समयमें हिन्दी आंतरप्रांतीय व्यवहारकी भाषा थी। आप सारे देशका भ्रमण करते थे, इसलिये आपको हिन्दी अच्छी तरहसे आती थी। आपने हिन्दीमें भी काव्य लिखे हैं। आपकी मृत्यु सन् १३५० में हुई।]

सुमर सुमर मन श्री भगवान।
प्रथम ये ही जो घर पर आवे,
कोटि यही कोई करे करावे,

कोटि तीर्थमें करे स्नान,
तोही न होय एक नाम समान।
अनेक वर्म मनसे उपजावे,
तजे भोजन कछू कबहुं न खावे,
दशमे द्वार चढ़ावे प्राण,
तोहि न होय एक नाम समान।
कायापलट करी बहु जीवे
रसनासे रस कछू न पीवे
निशदिन पढ़े वर शास्त्र पुराण,
तोहि न होय एक नाम समान।
पंचाग्नि सेवे तप करे,
सिद्ध वचनसे वस्तु तरे,
गगनमंडलमें लावे ध्यान,
तोहि न होय एक नाम समान।
काशीमें जाय करवत खावे,
मरे तनु हिमाळे गाळे,
तुला बैठ देवे जो दान,
तोहि न होय एक नाम समान।
जा पर गुरुजी किरपा करे,
प्रेमभक्ति हिरदेमें धरे,
कलिजुगमें हय ये परमाण,
नामदेवको इतना ज्ञान।
सुमर सुमर मन श्री भगवान।

९

गुरु कृपांजन पायो मेरे भाई

[एकनाथ]

[आप एक वड़े मशहूर संत हो गये हैं। आपका जन्म महाराष्ट्रके पैठाणमें ई० स० १५३३ के आसपास हुआ था। मराठीमें तो आपने वहुत लिखा है। आपका सबसे मशहूर ग्रंथ 'एकनाथी भागवत' है। उस समय साधु-संतोंकी वड़ी महिमा थी और वे सारे देशमें घूमते थे। इसलिये हिन्दी उनको आ ही जाती थी। एकनाथजी भी अपने समयके वड़े प्रसिद्ध संत थे। आपने भी देशका खूव भ्रमण किया और अपनी मधुर वानीका लाभ लोगोंको हिन्दीमें भी पहुँचाया। आपकी मृत्यु ई० स० १५९९ में हुई।]

गुरु कृपांजन पायो मेरे भाई
राम विना कछु जानत नाहीं ॥ ध्रुव० ॥

अंतर राम हि वांहिर राम हि
जहँ देखौं तहँ राम ही राम ॥ १ ॥

जागत राम हि सोवत राम हि
सपनेमें देखौं राजा राम हि ॥ २ ॥

एका जनार्दनी भाव ही नीका
जो देखौं सो राम सरीखा ॥ ३ ॥

१०

विजय-रथ

[तुलसीदास]

[रामभक्त गोस्वामी तुलसीदास सारे हिन्दुस्तानमें मशहूर हैं। आपकी पहचान करानेके लिये 'रामायण' का उल्लेख ही काफ़ी है।

आपका जन्म सं० १५८९ में हुआ था। आपका मूल नाम रामबोला था। आपके पिताका नाम आत्माराम दुबे था। आपको अपनी पत्नी रत्नावलीसे खूब प्रेम था। एक बार पत्नी अपने मायके गई। लेकिन आपसे वियोग सहन न हुआ। अतः आप भी उसके पीछे पीछे गये। इस पर पत्नीने जो ताना दिया, उससे गोसाईंजीका मन संसारसे उठ गया और रामभक्तिमें लग गया।

आप एक भक्त होते हुए भी अच्छे लेखक और कवि थे। आप अवधीमें लिखते थे। आपकी बहुतसी रचनाएँ हैं। उन सबमें 'रामचरितमानस' जगमशहूर है। आपका नाम इंग्लैंड, जर्मनी, रूस, आस्ट्रिया आदि देशों तक फैल गया है। और 'रामचरितमानस' का अनुवाद संसारकी बड़ी बड़ी भाषाओंमें हो गया है।

आपकी मृत्यु सं० १६८० में हुई।]

रावन रथी बिरथ रघुबीरा। देखि बिभीषन भयउ अधीरा॥
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा॥
नाथ न रथु नहिं तनु पदत्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल बिबेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे॥

ईसभजन सारथी सुजाना। विरति चर्म संतोष कृपाना।।
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। वर बिग्यान कठिन कोदंडा।।
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना।।
कवच अभेद विप्र-गुरु-पूजा। एहि सम विजय उपाय न दूजा।।

महा अजय संसाररिपु, जीति सकइ सो वीर।
जाके अस रथ होई दृढ़, सुनहु सखा मतिवीर।।

११

केवट-प्रसंग

[तुलसीदास]

[यह काव्य 'रामचरितमानस' के अयोध्या-कांडसे लिया गया है। वनवासकी अवधि व्यतीत करनेके लिये राम, लक्ष्मण और सीता अयोध्या छोड़कर सुरसरिके तट पर पहुँचे। नदीको पार करनेके लिये उन्होंने केवटसे नाव माँगी, पर वह आसानीसे राजी न हुआ। यहाँ पर केवट और रामचन्द्रजीके बीच जो बातचीत हुई उस प्रसंगका वर्णन है।]

चौ० जासु वियोग विकल पसु ऐसे। प्रजा मातु पितु जीहहिं कैसे।
बरबस राम सुमंत्रु पठाये। सुरसरितीर आपु तब आये।।
माँगी नाव न केवट आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना।
चरन-कमल-रज कहँ सबु कहई। मानुषकरनि मूरि कछु अहई।।
छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई।
तरनिउँ मुनिघरनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई।
एहि प्रतिपालउँ सबु परिवारू। नहिं जानउँ कछु अउर कबारू।।
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पदपदुम पखारन कहहू।।

छंद० पदकमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहउँ।
मोहि राम राउरि आन दसरथ-सपथ सब साँची कहउँ॥
बरु तीर मारहु लषनु पै जब लगि न पाय पखारिहउँ।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पारु उतारिहउँ॥

सो० सुनि केवटके बैन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहँसे करुनाऐन चितइ जानकी-लषन-तन॥

चौ० कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोइ करु जेहि तव नाव न जाई।
बेगि आनु जलु पाय पखारू। होत बिलंबु उतारहि पारू॥
जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा।
सोई कृपालु केवटहि निहोरा। जेहि जगु किय तिहुँ पगहुँ तें थोरा॥
पदनख निरखि देवसरि हरषी। सुनि प्रभुबचन मोहमति करषी।
केवट रामुरजायसु पावा। पानि कठवता भरि लेइ आवा॥
अति आनंद उमगि अनुरागा। चरनसरोज पखारन लागा।
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं। एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं॥

दो० पद पखारि जलुपान करि आपु सहित परिवार।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार॥

चौ० उतरि ठाढ भये सुरसरि रेता। सीय रामु गुह लषन समेता।
केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा॥
पियहियकी सिय जाननिहारी। मनिमुंदरी मन मुदित उतारी।
कहेउ कृपाल लेहि उतराई। केवट चरन गहेउ अकुलाई॥
नाथ आजु मैं काह न पावा। मिटे दोष-दुख-दारिद-दावा।
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी। आजु दीन्हि बिधि बनि भलि भूरी॥
अब कछु नाथ न चाहिय मोरे। दीनदयाल अनुग्रह तोरे।
फिरती बार मोहि जोइ देवा। सो प्रसाद मैं सिर धरि लेवा॥

दो० बहुत कीन्ह प्रभु लषनु सिय नहिं कछु केवटु लेइ।
बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ॥

१२

दोहे

[रहीम]

[आपका पूरा नाम नवाब अब्दुलरहीम खानखाना था। पिताका नाम बैरमख़ाँ था। आपका जन्म सं० १६१० में हुआ था। आप अकबरके प्रधानमंत्री और दरबारके नवरत्नोंमें से एक थे।

आप अरबी, फ़ारसी, संस्कृत और हिन्दीके बड़े विद्वान् थे। आप सरल और दयापूर्ण स्वभावके थे। श्रीकृष्णके आप बड़े भक्त थे। आपकी कविताओंमें इसकी स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

आपकी कविताएँ नीति, सदाचार और ज्ञानकी बातोंसे भरी हैं। आपके दोहे बहुत प्रसिद्ध हैं। छोटे छोटे दोहोंमें आपने बहुत गहरी बातोंको हृदयस्पर्शी भाषामें रख दिया है।

आपके प्रसिद्ध ग्रंथोंमें 'रहीम सतसई', 'रासपंचाध्यायी', 'बरवै नायिका भेद', 'दीवान फ़ारसी' वग़ैरह हैं।]

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग॥

जो रहीम ओछो बढ़ै, तो अति ही इतराय।
प्यादे सों फ़रज़ी भयो, टेढ़ो टेढ़ो जाय॥

रहिमन अपने पेट सों, बहुत कह्यो समुझाय।
जो तू अनखाये रहे, तोसों को अनखाय॥

रहिमन को कोउ का करै, ज्वारी, चोर, लबार।
जो पत-राखनहार है, माखन चाखनहार॥

रहिमन चुप ह्वै बैठिए, देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइ हैं, बनत न लगिहै बेर॥

रहिमन छोटे नरन सों, होत वड़ो नहिं काम।
मढ़ो दमामो ना वनै, सौ चूहे के चाम।।

रहिमन तव लगि ठहरिये, दाम मान सनमान।
घटत मान देखिय जवहिं, तुरतहिं करिय पयान।।

रहिमन नीचन संग वसि, लगत कलंक न काहि।
दूध कलारी कर गहें, मद समुझें सव ताहि।।

रहिमन पानी राखिये, विनु पानी सव सून।
पानी गए न ऊवरै, मोती, मानुष, चून।।

रहिमन मनहिं लगाइके, देखि लेहु किन कोय।
नरको वस करिवो कहा, नारायन वस होय।।

रहिमन याचकता गहे, वड़े छोट ह्वै जात।
नारायन हू को भयो, वावन आँगुर गात।।

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं।
उनते पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं।।

१३

श्याम रंगीले साँवरे

[ब्रह्मानन्द]

[आपका जन्म सं० १८२८ में गुजरातमें हुआ था। आपके पिताका नाम शंभुदान गढवी था। वे डुंगरपुर तहसीलके खाणगांवमें रहते थे। पंद्रह साल तक आपने अभ्यास नहीं किया। फिर कच्छमें जाकर पिंगल शास्त्रका अध्ययन किया। कच्छ-भूजमें सहजानन्द स्वामीके साथ परिचय हुआ। उन्होंने १८६२ में आपको दीक्षा दी और नाम रंगदास रखा। वादमें आपने अपना नाम ब्रह्मानन्द रखा। आप सहजानन्द स्वामीके शिष्योंमें से थे। कुछ अरसेके वाद आप काठियावाड़में जाकर वसे। आपने अपने गुरुकी आज्ञासे स्वामीनारायण

संप्रदायके मंदिर बनवानेमें बड़ा योग दिया। आप बड़े अच्छे भजन कहते थे। आपका काव्यसंग्रह छप चुका है। आपका अवसान मूली (काठियावाड़)में हुआ।]

श्याम रंगीले साँवरे सबके सुखकारी।
अपनो बरद विचारके करो मेहेर मोरारी॥
अरजी दास गरीबकी, सांइया सुनी लीजे।
भजन विरोधी दुष्टके, मदगंजन कीजे॥
अंतर ताप मिटाइए, कीजे सुख साता।
करुणासागर कृष्ण हो, शरणागत त्राता॥
जेह बिघ राजी नाथ तुम, तेही बिघ हम राजी।
हारजीत वृद्धि हानकी, तुमरे हथ्थ बाजी॥
ब्रह्मानन्द कहे नाथजी, कीजे दुःख दूर।
मूर्ति मनोहर रेन दिन रहो नैन हजूर॥

१४

जाकु रंग न लाग्यो रामको

[छोटम]

[आप एक गुजराती भक्त-कवि हैं। आप १९वीं शताब्दीमें हुए हैं। आपने हिन्दीमें भजन और साखियाँ लिखी हैं। आपकी साखियाँ हिन्दीमें अच्छी मानी जाती हैं। विद्वानोंका मत है कि आपने हिन्दीमें लिखकर हिन्दीकी शोभा बढ़ाई है। गुजरातीमें 'छोटमनी वाणी' नामक आपके हिन्दी-गुजराती भजनों और साखियोंका संग्रह छपा है।]

जाकु रग न लाग्यो रामको, सो नर पामर मूढ़ गमार रे,
ताकु नहि ठरनेको ठार रे. ॥टेक॥

फोगट सुख संसारको रे, जैसा सुपनाका भोग;
पलमें फना हो जायगा, पावे सुखदुःख कर्म संजोग रे. ॥ जाकु० ॥
काया जैसी कोटडी रे, कुमती काजल मांय;
कोटी तीरथ फरता फिरे, कोय काल चंछुवे नाय रे. ॥ जाकु० ॥
आप न खोजे आपको रे, उलटा फिर फिर जाय;
कदली प्रसवत लुमको रे, तुरत अवोमुख वहाय रे. ॥ जाकु० ॥
जीव करत है जन्मसे रे, मोह मदीरापान;
आप भुलाया आपका, कछु ना रही सुधके सांन रे. ॥ जाकु० ॥
ए तन पिंजर हाडको रे, भरीआ अनंत विकार;
मैं मेरा करी के मुवा, फिर धारत देह अपार रे. ॥ जाकु० ॥
कोटीक पुण्य प्रभावसे रे, जाय मिले सत्संग;
छोटम दुर्गुण छांड दे, ताकु लागे हरिको रंग रे. ॥ जाकु० ॥

१५

अगर है शौक़ मिलनेका

[मंसूर]

अगर है शौक़ मिलनेका, तो हरदम लौ लगाता जा।
जलाकर खुदनुमाईको, भसम तन पर लगाता जा॥
पकड़कर इश्ककी झाड़ू, सफ़ाकर हुज्र-ए दिलको।
दुईकी धूलको लेकर, मुसल्ले पर उड़ाता जा॥
मुसल्ला छोड़, तसबी तोड़, किताबें डाल पानीमें।
पकड़ दस्त तू फ़रिश्तोंका, ग़ुलाम उनका कहाता जा॥
न मर भूखा, न रख रोज़ा, न जा मस्जिद न कर सिजदा।
वज़ूका तोड़ दे कूज़ा, शरावे-शौक़ पीता जा॥
हमेशा खा, हमेशा पी, न ग़फ़लतसे रह इकदम।
नशेमें सैर कर अपनी खुदीको तू जलाता जा॥

न हो मुल्ला, न हो वम्मन, दुईकी छोड़कर पूजा।
हुक्म है शाह कलंदरका, 'अनलहक़' तू क़हाता जा।।
कहे मंसूर मस्ताना हक़ मैंने दिलमें पहचाना।
वही मस्तोंका मयखाना, उसीके बीच आता जा।।

१६

एक तिनका

[अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध']

[निजामावाद, ज़िला आज़मगढ़में आप सन् १८६५ में पैदा हुए और ८२ सालकी आयु पाकर १९४७ में आपका देहान्त हुआ। आप पहले सरकारी नौकर थे। पेंशन पानेके वाद आप काशी विश्वविद्यालयमें हिन्दीके प्रोफेसर वने।

खड़ी वोलीके लेखकोंमें आपका महत्त्वका स्थान है। आपका खड़ी वोलीका महाकाव्य 'प्रियप्रवास' हिन्दी साहित्यमें वड़ा मशहूर है। आप व्रजभाषामें भी कविता लिखते थे। 'चुभते चौपदे', 'चोखे चौपदे', 'वैदेही-वनवास', 'रस-कलस', और 'पारिजात' आपकी पद्यकी मशहूर रचनायें हैं। आप गद्य भी लिखते थे। 'ठेठ हिन्दीका ठाठ' और 'अवखिला फूल' आपकी गद्य रचनायें हैं।]

मैं घमण्डोंमें भरा ऐंठा हुआ।
एक दिन जव था मुंडेरे पर खड़ा।।
आ अचानक दूरसे उड़ता हुआ।।
एक तिनका आँखमें मेरी पड़ा।।
मैं झिझक उठ्ठा हुआ वेचैन-सा।
लाल होकर आँख भी दुखने लगी।।
मूठ देने लोग कपड़ेकी लगे।
ऐंठ वेचारी दवे पाँवों भगी।।

जब किसी ढबसे निकल तिनका गया।
तब समझने यों मुझे ताने दिये।।
ऐंठता तू किस लिये इतना रहा।
एक तिनका है बहुत तेरे लिये।।

१७

एक बूँद

[अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध']

ज्यों निकलकर बादलोंकी गोदसे,
थी अभी एक बूंद कुछ आगे बढ़ी;
सोचने फिर-फिर यही जीमें लगी,
आह क्यों घर छोड़कर है यों कढ़ी!
देव, मेरे भाग्यमें है क्या बदा,
मैं बचूंगी या मिलूंगी धूलमें;
या जलूंगी फिर अँगारे पर किसी,
चू पडूंगी या कमलके फूलमें।
बह गई उस काल एक ऐसी हवा,
वह समुन्दर ओर आई अनमनी;
एक सुन्दर सीपका मुँह था खुला,
वह उसीमें जा पड़ी मोती बनी।
लोग यों ही हैं झिझकते सोचते,
जब कि उनको छोड़ना पड़ता है घर;
किन्तु घरका छोड़ना अक्सर उन्हें,
बूंद लौं कुछ और ही देता है कर।

१८

निशा-निमंत्रण

[हरिवंशराय 'बच्चन']

[आपका जन्म सन् १९०७ में इलाहाबादमें हुआ। आजकल आप प्रयाग विश्वविद्यालयमें अध्यापक हैं। आपकी कविताशैली पर उमर ख़ैयामकी रुबाइयोंका गहरा असर है। हिन्दी काव्यमें साक़ी, शराब और प्यालेको आपने दाख़िल किया और उसमें सफल भी रहे। शुरू शुरूमें तो इसका बड़ा विरोध हुआ, मगर आपने अपनी मेहनत और ज़बानके जादूसे सबके दिल जीत लिये। काव्यक्षेत्रमें दाख़िल होते ही किसी कविने शायद ही इतनी जल्दी लोकप्रियता हासिल की होगी।

'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश', 'निशा-निमंत्रण', 'एकांत संगीत', 'सतरंगिनी' आदि आपकी मशहूर रचनायें हैं।]

(१)

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
हो जाय न पथमें रात कहीं,
मंज़िल भी तो है दूर नहीं—
यह सोच थका दिनका पंथी भी जल्दी जल्दी चलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

(२)

बच्चे प्रत्याशामें होंगे,
नीड़ोंसे झाँक रहे होंगे—
यह ध्यान परोंमें चिड़ियोंके भरता कितनी चंचलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

(३)

मुझसे मिलनेको कौन विकल ?
मैं होऊँ किसके हित चंचल ? —
यह प्रश्न शिथिल करता पदको, भरता उरमें विह्वलता है !
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

१६

आशे !

[हरिवंशराय 'बच्चन']

(१)

भूल तब जाता दुःख अनन्त,
निराशा-पतझड़का हो अन्त,
हृदयमें छाता पुनः वसन्त,
दमक उठता मेरा मुख म्लान,
देवि, जब करता तेरा ध्यान।

(२)

पथिक जो बैठा हिम्मत हार,
जिसे लगता था जीवन भार,
कमर कसता होता तैयार,
पुनः उठता करता प्रस्थान,
देवि, जब करता तेरा ध्यान।

(३)

डूबते पा जाता आधार,
सरस होता जीवन निस्सार,
सार-मय फिर होता संसार,

सरल हो जाते कार्य महान,
देवि, जब करता तेरा ध्यान।

(४)

शक्तिका फिर होता संचार,
सूझ पड़ता फिर कुछ-कुछ पार,
हाथमें फिर लेता पतवार,
पुनः खेता जीवन-जलयान,
देवि, जब करता तेरा ध्यान।

२०

नया शिवाला

[इक़बाल]

[आपका पूरा नाम डॉ० शेख मुहम्मद 'इक़बाल' है। आप सन् १८७५ में स्यालकोटमें पैदा हुए। आपकी मृत्यु सन् १९३७ में लाहोरमें हुई। दुनियाके बड़े बड़े शायरोंमें आप गिने जाते हैं। आप राष्ट्रीय शायर थे। 'सारे जहाँसे अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' कविता लिखकर आप सारे हिन्दमें मशहूर हो गये। आप पूरबकी संस्कृतिके बड़े हामी थे। पश्चिमी संस्कृतिकी तड़क-भड़क और खोखलेपन पर आप हमेशा प्रहार किया करते थे।

उर्दू शायरीमें मौलाना हालीने सुधारका जो काम शुरू किया, उसको आपने आगे बढ़ाया और उर्दू शायरीमें एक नई जान डाल दी। आप फ़ारसीमें भी लिखते थे।]

सच कह दूँ ए बिरहमन गर तू बुरा न माने
तेरे सनमक़दोंके बुत हो गये पुराने

अपनोंसे वैर रखना तूने वुतोंसे सीखा
जंगोजदल सिखाया वाअज़को भी खुदाने

तंग आके मैंने आखिर देरोहरमको छोड़ा
वाअज़का वाज़ छोड़ा, छोड़े तिरे फ़साने

कुछ फ़िक्र फूटकी कर माली है तू चमनका
वूटोंको फूंक डाला इस विसभरी हवाने

पत्थरकी मूरतोंमें समझा है तू खुदा है
खाके वतनका मुझको हर ज़र्रा देवता है

आ मिलके ग़ैरियतके परदोंको फिर उठा दें
विछड़ोंको फिर मिला दें, नक़्शे दुई मिटा दें

सूनी पड़ी हुई है मुद्दतसे जीकी वस्ती
आ इक नया शिवाला इस देसमें वना दें

फिर इक अनूप ऐसी सोनेकी मूरती हो
इस हरदुवारे दिलमें लाकर जिसे विठा दें

सुन्दर हो इसकी सूरत छवं इसकी मोहनी हो
इस देवतासे माँगें जो दिलकी हों मुरादें

आँखोंकी जो है गंगा ले लेके इससे पानी
इस देवताके आगे इक नहरसी वहा दें

हिन्दोस्तान लिख दें माथे पे इस सनमके
भूले हुए तराने दुनियाको फिर सुना दें

है रीत आशिक़ोंकी तनमन निसार करना
रोना, सितम उठाना और उनको प्यार करना

२१

सुखमें याद भले कर अुसकी

[श्रीमन्नारायण अग्रवाल]

[आप गांधी विचारधाराके हिमायती हैं। आप अर्थशास्त्र और राजकारणके वड़े अभ्यासी हैं।

हिन्दी साहित्यमें आपका स्थान है। आप कविता लिखते हैं, गहरे निवंध भी। आपकी शैली वड़ी मनोरंजक मगर दिल पर असर करनेवाली है। आजकल आप वर्धामें सेक्सरिया कॉमर्स कालिजमें हैं।

आपकी मशहूर रचनायें ये हैं—'रोटीका राग', 'मानव', 'सेगाँवका सन्त', 'गांधीवादी आर्थिक योजना', 'गांधीवादी विधान', 'अमर आशा' (काव्यसंग्रह) और हाल हीमें प्रकाशित गंभीर विषयों पर मनोरंजक शैलीमें लिखे हुए लेखोंका संग्रह 'जुगनू'।]

सुखमें याद भले कर उसकी,
दु:खमें मत लेना प्रभु-नाम!
पूरी कोशिश किये कराये,
अपनी ताक़त विन अज़माये
रटन लगाना राम-नामकी।
है प्रभुका, अपना, अपमान!
विना जगाये अपवल, तपवल,
विना जुटाये सवल वाहुवल,
नहीं कभी भगवान मिलेंगे,
रे मानव! तू यह सच मान!
सुमिरन कर नर अमर-शक्ति निज
करता जा जगका सव काम

सुखमें याद भले कर उसकी
पर दुःखमें मत ले प्रभु-नाम!

("अमर आशा' से)

२२

तत्त्वसार तो विरले जाने

[श्रीमन्नारायण अग्रवाल]

मानवताका धर्म भूलकर
अन्धकार ही अन्धकार है!
ईश्वर नाम सभी लेते हैं,
तत्त्वसार तो विरले जाने,
धर्म नाम पर हृदय हीन बन
स्वार्थ साधना दुनिया माने!
मजहबके पीछे कितनोंका
खून बहा है निर्दयतासे,
दीनोंका हक़ छीन द्विजोंने
ठुकराये जन निर्दयतासे!
बुद्धि, ज्ञानके बल पर कितना
फैला है अज्ञान जनोंमें,
पंडित शास्त्र रटा करते हैं,
नहीं प्रेमका चिन्ह मनोंमें!
किये बिना कम पीर जगतकी,
जीवन भूपर एक भार है;
मानवताका धर्म भूलकर
अन्धकार ही अन्धकार है!

('अमर आशा' से)

२३

वंजारा

[भाई तनवीर नक़वी]

[आप इस ज़मानेके कवि हैं। आपकी कवितामें जवानीका जोश और तमन्नायें भरी पड़ी हैं। आपकी भाषा राष्ट्रभाषाका नमूना है। आप अपनी बात सरल मगर असरकारक शैलीमें रखते हैं। आपकी कवितायें 'नया हिन्द' मासिकमें प्रकट होती रहती हैं।]

वन वन जा वंजारे!

नगर नगर है तेरी नगरी
डगर डगर है गाँव
देख देख थक जायें आँखें
थके न तेरे पाँव
अपनेको समझा रे, जा रे
वन वन जा वंजारे!

हरएक आन है तेरे आगे
नई नवेली दुनिया
तू दुनिआका साथी फिर भी
तेरी अकेली दुनिया
दुनिया नई वसा रे, जा रे
वन वन जा वंजारे!

भीगी मस्त हवायें तुझको
गहरी नींद सुलाएँ

भोर भए आज़ाद परिन्दे
गाएँ तुझे जगाएँ
उठ जा रे मतवारे, जा रे
वन वन जा वंजारे!

आगे बढ़ना काम है तेरा
चलना तेरी रीत
आँधी, रेत, बगूले, तूफ़ाँ
सब ही तेरे मीत
इनसे मन बहला रे, जा रे
वन वन जा वंजारे!

पलट पलटकर क्या तकती हैं
तेरी थकी निगाहें
दूर खड़ी है मंज़िल तेरी
खोले अपनी बाँहें
जा रे गले लग जा रे, जा रे
वन वन जा वंजारे!

अपना आप सहारा लेकर
सारे तोड़ सहारे
तेरी नदिया वह नदिया है
जिसके नहीं किनारे
वह जा खेवन हारे, जा रे
वन वन जा वंजारे!

२४

दर्दकी दवा क्या है?

[ग़ालिब]

[आपका पूरा नाम मिर्ज़ा असदुल्लाख़ाँ 'ग़ालिब' है। आपका जन्म सन् १७९७ में हुआ और सन् १८६९ में दिल्लीमें मर गये। कविताएँ लिखनेका आपको बचपनसे ही शौक़ था। अपने समकालीन कवियोंके रास्तेसे निकलकर आपने काव्यका सम्बन्ध जीवनके साथ जोड़ा। आप अमीर घरानेमें पैदा हुए थे, मगर अपने स्वभाव और स्वाभिमानके कारण सारी उमर ग़रीबीमें काटी। आप हृदयके बड़े सरल थे। आप बिलकुल खुशामदपसंद न थे। आप एक ऊँचे दरजेके तत्त्वज्ञानी थे। आप हिन्दू-मुस्लिम ऐक्यके बड़े हामी थे और आपमें मजहबी कट्टरपन ज़रा भी न था। आप सही अर्थमें कवि थे। आपने फ़ारसीमें भी खूब लिखा है। आपने उर्दूमें खत लिखनेकी बड़ी सरल शैली शुरू की।]

दिले नादाँ, तुझे हुआ क्या है?
आखिर इस दर्दकी दवा क्या है?
हम हैं मुश्ताक़, और वह बेज़ार
या इलाही! यह माजरा क्या है?
मैं भी मुँहमें ज़बान रखता हूँ,
काश पूछो! कि मुद्दा क्या है?
जब कि तुझ बिन नहीं कोई मौजूद
फिर यह हंगामा ए खुदा क्या है?
वह परी चेहरे लोग कैसे हैं
ग़मज़ा ओ इश्वा ओ अदा क्या है?

हमको उनसे वफ़ाकी है उम्मीद
जो नहीं जानते वफ़ा क्या है?
जान तुम पर निसार करता हूँ
मैं नहीं जानता दुआ क्या है?
हाँ! भला कर तेरा भला होगा
और दरवेशकी सदा क्या है?

२५

रे मन आज परीक्षा तेरी

[श्री मैथिलीशरण गुप्त]

[आप चिरगाँव, ज़िला झाँसीके रहनेवाले हैं। आपका जन्म सन् १८८५ में हुआ है। आपके पिता कवि थे। पिताने कविता विरसेमें दी। आपके छोटे भाई सियारामशरणजी भी एक अच्छे कवि हैं। श्री महावीरप्रसाद द्विवेदीके प्रोत्साहनसे आपने कविता लिखनी शुरू की और अब खड़ी बोलीके मशहूर कवि हो गये हैं। आधुनिक युगके हिन्दी कवियोंमें आपका स्थान ऊँचा है।

आप बड़े सरल हृदयके हैं। ग़रीबोंके प्रति और देशके प्रति आपके दिलमें प्रेम भरा है। आम जनताको ऊँचे उठानेमें आप अपनी काव्यशक्तिके ज़रिये बड़ी भारी मदद कर रहे हैं। आप पूरे रामभक्त हैं।

आपकी शैलीमें प्रवाह है। प्रकृतिके वर्णनमें तो शायद आप बेजोड़ हैं। ज़मानेकी रफ़्तारके साथ आप अपने काव्य-विषयमें भी प्रगति करते जाते हैं।

'भारत-भारती', 'साकेत', 'यशोधरा', 'पंचवटी', 'जयद्रथ-वध' आदि आपकी प्रसिद्ध रचनायें हैं।]

(भगवान बुद्ध जब ज्ञान प्राप्त करके अपनी राजधानीमें लौटते हैं, तब नगरके सब नर-नारी उनके दर्शनके लिये जाते हैं। एक यशोधरा नहीं जाती। उसके मनमें जो मंथन होता है, वह इस काव्यमें दिया गया है।)

रे मन, आज परीक्षा तेरी।
विनती करती हूँ मैं तुझसे, बात न बिगड़े मेरी।
अब तक जो मेरा निग्रह था,
बस अभावके कारण वह था।
लोभ न था, जब लाभ न यह था;
सुन अब स्वागत-भेरी।
रे मन, आज परीक्षा तेरी।

दो पग आगे ही वह वन है,
अवलम्बित जिस पर जीवन है।
पर क्या पथ पाता यह जन है?
मैं हूँ और अँधेरी।
रे मन, आज परीक्षा तेरी।

यदि वे चल आये हैं इतना,
तो दो पद उनको है कितना?
क्या भारी वह, मुझको जितना?
पीठ उन्होंने फेरी।
रे मन, आज परीक्षा तेरी।

सब अपना सौभाग्य मनावें,
दरस-परस, निःश्रेयस पावें।
उद्धारक चाहें तो आवें,
यहीं रहे यह चेरी।
रे मन, आज परीक्षा तेरी।

२६

चित्रकूट

[श्री मैथिलीशरण गुप्त]

[यह कविता गुप्तजीके 'साकेत' महाकाव्यके नवें सर्गसे ली गई है। उर्मिलाके निर्मल चरित्रको प्रकाशमें लानेके लिये गुप्तजीने 'साकेत' की रचना की है। उर्मिलाने लक्ष्मणके विरहमें चौदह वर्षकी अवधि किस प्रकार व्यतीत की, यह बतलाना ही 'साकेत' काव्यका मुख्य उद्देश्य है।

मिथिला और अयोध्याकी भाँति उर्मिलाको चित्रकूट भी प्यारा है। यहाँ पर वह चित्रकूटके वैभवका अपने शब्दोंमें वर्णन करती है।]

सिद्ध-शिलाओंके आधार,
ओ गौरव-गिरि, उच्च-उदार!

तुझ पर ऊँचे ऊँचे झाड़,
तने पत्रमय छत्र पहाड़!
क्या अपूर्व है तेरी आड़,

करते हैं बहु जीव विहार,
ओ गौरव-गिरि, उच्च-उदार!

घिर कर तेरे चारों ओर,
करते हैं घन क्या ही घोर।
नाच नाच गाते हैं मोर,

उठती है गहरी गुंजार,
ओ गौरव-गिरि, उच्च-उदार!

नहलाती है नभकी वृष्टि,
अंग पोंछती आतप-सृष्टि,
करता है शशि शीतल दृष्टि,
देता है ऋतुपति शृंगार,
ओ गौरव-गिरि, उच्च-उदार।

तू निर्झरका डाल दुकूल,
लेकर कन्द-मूल-फल-फूल,
स्वागतार्थ सबके अनुकूल,
खड़ा खोल दरियोंके द्वार,
ओ गौरव-गिरि, उच्च-उदार!

सुदृढ़, धातुमय, उपल शरीर,
अन्तस्तलमें निर्मल नीर,
अचल-अटल तू धीर-गंभीर,
समशीतोष्ण, शान्तिसुखसार,
ओ गौरव-गिरि, उच्च-उदार!

विविध राग-रंजित, अभिराम,
तू विराग-साधन, वन-धाम,
कामद होकर आप अकाम,
नमस्कार तुझको शत वार,
ओ गौरव-गिरि, उच्च-उदार!

२७

संकेत

[डॉ० रामकुमार वर्मा]

[आप बुन्देलखंडके पहाड़ी मुल्कमें पले हैं। आप कवि होनेके उपरान्त एक अच्छे समालोचक, नाटककार और कहानी-लेखक भी हैं। आपके बारेमें श्री अमरनाथ झाने ठीक कहा है कि, "साहित्यके इतिहासमें बहुत कम ऐसे व्यक्ति हैं, जो साहित्यके योग्य समालोचक भी हैं और स्वयं कलाकार भी हैं।" अभिनयात्मक शैलीकी वजहसे आपकी कविता बहुत रोचक बन जाती है। आप कोरी कल्पनाके कवि नहीं हैं, मगर मनुष्य जीवन आपकी कविताओंका विषय है। आजकल आप प्रयाग विश्व-विद्यालयमें काम कर रहे हैं। 'चित्तौड़की चिता', 'अंजलि', 'रूपराशि', 'चन्द्रकिरण', 'चित्ररेखा', 'निशीथ' और 'संकेत' आपके मशहूर काव्यसंग्रह हैं।]

सुख न इस संसारमें—वह है
दुखोंकी एक विस्मृति।

मध्यमें है एक क्षण—इस ओर अथ
उस ओर है इति॥

यह उषाका रंग, चंचल बादलोंकी भूमिका है।
और बादल-उमड़ता उच्छ्वास मेरी भूमिका है॥

जो मुझे प्रतिपल बदलती है, न है
वह अमर संसृति।

सुख न इस संसारमें—वह है
दुखोंकी एक विस्मृति॥

भावनाओंमें उभरनेका अधिकसे अधिक प्रण था।
किन्तु देखा विश्वमें मैंने कि मैं लघु एक कण था।।

पर अमर बनकर रहेगी
विश्वमें मेरी कलाकृति।
सुख न इस संसारमें — वह है
दुखोंकी एक विस्मृति।।

२८.

दिये तरे अँधेरा

[भाई स्वामी मारहरवी]

[आप नये युगके आशास्पद कवि हैं। आपकी कवितामें नये युगकी झलक दिखाई देती है। आपकी भाषामें चलतापन है। गहरे भावोंको भी आप सरल शैलीमें अच्छी तरहसे प्रगट कर सकते हैं। आप 'नया हिन्द' मासिकमें अपनी कवितायें देते रहते हैं।]

चलनेसे मत हार मुसाफ़िर! चलते रहना काम है तेरा
अध भरमें यह आलस कैसी? दूर अभी तो गाम है तेरा
दरियाके मत खोज किनारे, तूफ़ानोंमें राम है तेरा
आप मुसाफ़िर, आप ही मंज़िल, मंज़िल दूजा नाम है तेरा

रस्तोंके तू छोड़ दे झगड़े, इन रस्तों आराम नहीं है
तुझमें साँचे राम है प्यारे, तुझ बिन कोई राम नहीं है

राह भी तेरी, पाँव भी तेरे, पाँव तले है मंज़िल तेरी
मनके दुविधे आज जो हारा, फिर न मिलेगी मंज़िल तेरी
मुल्ला अपनी ओर पुकारे, पंडित रोके मंज़िल तेरी
अपने अपने दाँव लगाकर, खोटी कर दी मंज़िल तेरी

क्रोध कपटके दो-राहेमें तेरा मुसाफ़िर! काम भी विगड़ा
मसजिद मंदिरके झगड़ोंमें, ईश्वर अल्ला नाम भी विगड़ा

दुनिया सारी संग हो तेरे, चाहे लाख सहारें हों
मंज़िल तेरी तभी मिलेगी, पाँव जो तेरे सारे हों
सामने जिनके मंज़िल हो, और वह मूरख जो हारे हों
सम्मुख जगमग दीप जरें, और दिये तरे अँवियारे हों

कहाँ यह सुन्दर सपने टूटे, कहाँ पे टूटी आसकी डोर?
कहाँ मुसाफ़िर डगमग हाला, कहाँ पे हो गये पाँव भी चूर?

दीपकी जगमग जोत-सी है क्या? दीपकी अग्नि जलकर देख
जीवन सागर थाह कहाँ है? मँझवारोंमें पलकर देख
मंज़िल तक जो चलना हो, तो काँटों पर भी चलकर देख
पाँवसे अपने चल भी मुसाफ़िर! आँखसे अपनी चलकर देख

फूटे भाग्य सुहाग मिले ना, फूटे नयन न दर्शन होय
'स्वामी' झलकी मिले नहीं, जब मैला मनका दर्पन होय

भीषण आँधी रोक भी दे, मँझवारोंके रुख मोड़ भी दे
जीवट! अपनी मौतसे पहले, मौतकी गरदन तोड़ भी दे
मंज़िलको मत छोड़ मुसाफ़िर! भूल भुलैयाँ छोड़ भी दे
तेज़ नुकीले काँटोंसे इस पाँवके छाले फोड़ भी दे

लीकसे बाहर पाँव न हो, याँ घातमें बैठी मौत भी है
अपने हाथके दाँव जो चूका, मौतसे पहले मौत भी है

२६

प्रेम-संगीत

[श्री भगवतीचरण वर्मा]

[आपका जन्म सन् १९०३ में हुआ। आपने पीड़ित और दलित वर्गको अपनी कविताका पात्र बनाया है। आप एक बड़े प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं। आपके व्यक्तित्वकी छाप आपकी भाषामें दिखाई देती है। आप चलती मगर मुहावरेदार खड़ी बोलीमें लिखते हैं। आपकी क़लममें वह जादू है कि आपकी हरेक कृति सजीव हो उठती है। आप एक मशहूर कवि तो हैं ही, मगर साथ साथ एक अच्छे उपन्यासकार और कहानी-लेखक भी हैं। 'मधुकण', 'प्रेम-संगीत' और 'मानव' आपके प्रसिद्ध काव्यसंग्रह हैं। 'चित्रलेखा' और 'तीन वर्ष' अच्छे उपन्यास हैं; और 'इन्स्टालमेंट' और 'दो बाँके' सफल कहानी-संग्रह हैं।]

हम दीवानोंकी क्या हस्ती?
हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले!
मस्तीका आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले।

आये बनकर उल्लास अभी,
आँसू बनकर बह चले अभी।
सब कहते ही रह गये, अरे!
तुम कैसे आये, कहाँ चले?

किस ओर चले? यह मत पूछो,
चलना है बस, इसलिये चले;
जगसे उसका कुछ लिये चले,
जगको उसका कुछ दिये चले।

दो बात कहीं, दो बात सुनीं,
कुछ हँसे और फिर कुछ रोये,
छक कर सुख-दुखके घूँटोंको
हम एक भावसे पिये चले!

हम भिखमंगोंकी दुनियामें
स्वच्छन्द लुटाकर प्यार चले,
हम एक निशानी-सी उर पर
ले असफलताका भार चले,

हम मान-रहित अपमान-रहित
जी भर कर खुल कर खेल चुके
हम हँसते हँसते आज यहाँ,
प्राणोंकी बाजी हार चले।

हम भला बुरा सब भूल चुके,
नत मस्तक हो मुख मोड़ चले;
अभिशाप उठाकर होठों पर
वरदान दृगोंसे छोड़ चले।

अब अपना और पराया क्या?
आबाद रहें रुकनेवाले!
हम स्वयं बँधे थे और स्वयं
हम अपने बंधन तोड़ चले!

खुला आसमान

[श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला']

[आपका जन्म बंगालमें हुआ। आजकल आप लखनऊमें रहते हैं। आप संस्कृत, बंगला, हिन्दी, अंग्रेज़ीके विद्वान् हैं। आप काव्य-शास्त्रके नियमोंमें बँधे रहना पसन्द नहीं करते। ताल और लयके वेगमें शब्दोंकी आप कुछ परवाह नहीं करते। उन्हें आप अपनी मरज़ीके अनुसार तोड़ते-मरोड़ते हैं। आपने 'मुक्त छन्द' नामके एक नये छन्दका प्रयोग किया है।

आपने उपन्यास भी लिखे हैं। 'तुलसीदास', 'अनामिका', 'सेवा' और 'परिमल' आपके मशहूर काव्यसंग्रह हैं और 'अप्सरा' 'अलका', 'कुल्लीभाट' लोकप्रिय उपन्यास हैं।]

बहुत दिनों बाद खुला आसमान।
निकली है धूप, हुआ ख़ुश जहान।
दिखीं दिशाएँ, झलके पेड़,
चरनेको चले ढोर-गाय-भैंस-भेड़,
खेलने लगे लड़के छेड़-छेड़ —
लड़कियाँ घरोंको कर भासमान।
लोग गाँव-गाँव को चले,
कोई बाज़ार, कोई बरगदके पेड़के तले
जाँघिया-लँगोट ले, सँभले,
तगड़े-तगड़े सीधे नौजवान।
पनघटमें बड़ी भीड़ हो रही,
नहीं ख्याल आज कि भीगेगी चूनरी,
बातें करती हैं वे सब खड़ीं,
चलते हैं नयनोंके सधे बान।

३१

क्या गाऊँ ?

[श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला']

क्या गाऊँ ? — माँ ! क्या गाऊँ ?
गूँज रहीं हैं जहाँ राग-रागिनियाँ,
गाती हैं किन्नरियाँ — कितनी परियाँ —
कितनी पंचदशी कामिनियाँ,

वहाँ एक यह लेकर वीणा दीन
तन्त्री-क्षीण, — नहीं जिसमें कोई झंकार नवीन,
रुद्ध कण्ठका राग अधूरा कैसे तुझे सुनाऊँ ? —
माँ ! क्या गाऊँ ?

छाया है मंदिरमें तेरे यह कितना अनुराग !
चढ़ते हैं चरणों पर कितने फूल
मृदु-दल, सरस-पराग;

गन्ध-मोद-मद पीकर मन्द समीर
शिथिल चरण जब कभी बढ़ाती आती,
सजे हुए बजते उसके अधीर नूपुर-मंजीर !
वहाँ एक निर्गन्ध कुसुम उपहार,
कहीं कहीं जिसमें पराग-संचार सुरभि-संसार
कैसे भला चढ़ाऊँ ? —
माँ ! क्या गाऊँ ?

३२

चीऊँटेसे नसीहत

[मौ० हाली]

[आपका पूरा नाम मौलाना अल्ताफ़ हुसेन 'हाली' है। आपका जन्म पानीपतमें हुआ और सन् १९१४ में ७७ सालकी ज़ईफ़ उमरमें आपका अवसान हुआ। आपको बचपनसे ही कविता लिखनेका शौक़ था। उर्दू शायरीमें आपने एक प्रकारकी क्रांति कर दी। आपने मनुष्य-जीवनको और उसकी समस्याओंको कविताका विषय बनाया। देशप्रेम, समाज-सुधार, प्राकृतिक विषय आदि पर आपने कविता लिखी। आप उर्दूमें लिखते थे मगर आपकी भाषा इतनी सरल है कि आपकी रचनायें उर्दू न जाननेवाले भी समझ सकते हैं। आपका स्वभाव बड़ा सात्त्विक था और आप ईश्वर-परायण थे। 'मुसद्दस', 'मुनाजाते बेवा', 'चुपकी दाद' आदि आपकी मशहूर रचनायें हैं।]

जमाअतकी इज़्ज़त में है सबकी इज़्ज़त
जमाअतकी ज़िल्लत में है सबकी ज़िल्लत
रही है न हरगिज़ रहेगी सलामत
न शख़्सी बुज़ुर्गी न शख़्सी हकूमत

वही शाख़ फूलेगी याँ और फलेगी
हरी होगी जड़ इस गुलिस्ताँ में जिसकी

ज़खीरा है जब चीऊँटा कोई पाता
तो भागा जमाअत में है अपनी आता
उन्हें साथ ले ले के है याँ से जाता
फ़ुतूह अपनी एक एकको है दिखाता

सदा उनके हैं इस तरह काम चलते
कमाई से एक इक की लाखों हैं पलते
जब एक चीऊँटा जिसमें दानिश न हिकमत
बनी नौ की अपनी बरलाए हाजत
मईशत से एक इक को बख्शे फ़राग़त
करे उन पे वक़्फ़ अपनी सारी ग़नीमत
तो इससे ज्यादा है बेग़ैरती क्या
कि हो आदमी को न पास आदमीका

३३
काले बादल
[श्री सुमित्रानंदन पंत]

[आप सन् १९०१ में कसौनी, जिला अलमोड़ामें पैदा हुए। प्रकृतिकी गोदमें पलनेके कारण आप प्रकृतिके पुजारी हैं। आपकी प्रकृति भी फूलकी तरह कोमल है। शुरूमें आप प्रकृति पर काव्य लिखते थे, बादमें मानव-जीवनकी वास्तविकता पर लिखे। आजकल आप समूह जीवन पर कविताएँ लिख रहे हैं। आपकी शैली कोमल है और आप नई नई उपमाओंका खूब उपयोग करते हैं। छाया-वादके आप आचार्य गिने जाते हैं। 'पल्लव', 'वीणा', 'गुंजन', 'स्वर्णकिरण', 'स्वर्णधूलि' आपकी लोकप्रिय रचनाएँ हैं।]

सुनता हूँ, मैंने भी देखा,
काले बादलमें रहती चाँदी की रेखा!
काले बादल जाति द्वेषके,
काले बादल विश्व क्लेशके,
काले बादल उठते पथ पर
नव स्वतंत्रता के प्रवेशके!

सुनता आया हूँ, है देखा,
काले बादलमें हँसती चाँदी की रेखा !

आज दिशा है घोर अँधेरी,
नभमें गरज रही रणभेरी,
चमक रही चपला क्षण क्षण पर,
झनक रही झिल्ली झन झन कर !

नाच नाच आँगनमें गाते केकी केका
काले बादलमें लहरी चाँदी की रेखा !

काले बादल, काले बादल,
मन भय से हो उठता चंचल,
कौन हृदयमें कहता पल पल,
मृत्यु आ रही साजे दलबल !

आग लग रही, घात चल रहे, विधिका लेखा
काले बादलमें छिपती चाँदी की रेखा !

मुझे मृत्युकी भीति नहीं है,
पर अनीतिसे प्रीति नहीं है,
यह मनुजोचित रीति नहीं है,
जनमें प्रीति प्रतीति नहीं है।

देश जातियोंका कब होगा नव मानवतामें रे एका;
काले बादलमें कल की सोनेकी रेखा ?

३४

ग्रामीण

[श्री सुमित्रानंदन पंत]

'अच्छा, अच्छा,' बोला श्रीवर,
हाथ जोड़ कर, हो मर्माहत,
'तुम शिक्षित, मैं मूर्ख ही सही,
व्यर्थ वहस, तुम ठीक, मैं ग़लत !

'तुम पश्चिम के रंगमें रंगे,
मैं हूँ दक़ियानूसी भारत,'
हँसा ठहाका मार मनोहर,
'तुम औ' कट्टरपंथी ? लानत !'
'सूट बूटमें सजे धजे तुम
डाल गले फाँसी का फंदा,
तुम्हें कहे जो भारतीय, वह
है दो आँखोंवाला अंधा !
'अपनी अपनी दृष्टि है', तुरत
दिया क्षुब्ध श्रीवरने उत्तर,
'भारतीय ही नहीं, वल्कि मैं
हूँ ग्रामीण हृदयके भीतर !

'धोती कुरते चादर में भी,
नई रोशनीके तुम नागर,
मैं वाहर की तड़क भड़क में
चमकीली गंगाजल गागर !'

'यह सच है कि,' मनोहर वोला,
'तुम उथले पानीके डाभर,
मुझको चाहे नागर कह लो
या खारे पानी का सागर!'
'तुमने केवल अधनंगे,
भारतका गँवई तन देखा है',
श्रीधर संयत स्वरमें वोला,
'मैंने उसका मन देखा है!'

'भारतीय भूसा पिंजरमें
तुम हो मुखर पश्चिमी तोते
नागरिकों के दुराग्रहों
तर्कों वादों के पंडित थोथे!
'मैं मन से ग्रामों का वासी
जो मृगतृष्णाओं से ऊपर
सहज आंतरिक श्रद्धा से
सद् विश्वासों पर रहते निर्भर!

'जो अदृश्य विश्वास सरणि से
करते जीवन सत्य को ग्रहण,
जो न त्रिशंकु सदृश लटके हैं,
भू पर जिनके गड़े हैं चरण!
'उस श्रद्धा विश्वास सूत्रमें
वँधा हुआ मैं उनका सहचर
भारत की मिट्टी में वोए
जो प्रकाश के वीज हैं अमर!'

३५

विप्लव-गान

[श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन']

[आपका जन्म ग्वालियर राज्यमें सन् १८९९में हुआ। राष्ट्रीय आन्दोलनके समय आप कई बार जेल जा चुके हैं। आपके साहित्य-सर्जन पर स्व० श्री गणेशशंकर विद्यार्थीका काफ़ी असर है। आपकी कविता जहाँ शौर्य और क्रांतिके गीतोंसे भरी पड़ी है, वहां उसमें प्रेम, वियोग और विरहके गीत भी हैं।

आप एक अच्छे वक्ता भी हैं और आपकी जबानमें वह जादू है कि सुननेवाले मोहित हो जाते हैं। आजकल आप कानपुरमें राष्ट्रीय सेवाकार्यमें लगे हुए हैं। आप भारतकी पालियामेण्टके सदस्य भी हैं।

'कुंकुम', 'विस्मृता' और 'उर्मिला' आपके काव्यसंग्रह हैं। इनमें 'कुंकुम' बहुत लोकप्रिय है।]

(१)

कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये,
एक हिलोर इधर से आये, एक हिलोर उधरसे आये,
प्राणों के लाले पड़ जायें, त्राहि-त्राहि रव नभ में छाये,
नाश और सत्यानाशोंका, धुंआधार जगमें छा जाये,
बरसे आग, जलद जल जाएँ, भस्मसाद् भूधर हो जायें,
पाप पुण्य सदसद् भावोंकी, धूल उड़ उठे दायें बायें,
नभका वक्षस्थल फट जाये, तारे टूक-टूक हो जायें,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये।

माताकी छातीका अमृतमय पय कालकूट हो जाये,
आँखोंका पानी सूखे, वे शोणितकी घूंटें हो जायें,
एक ओर कायरता काँपे, गतानुगति विचलित हो जाये,
अन्धे मूढ़ विचारोंकी वह, अचल शिला विचलित हो जाये,
और दूसरी ओर कँपा देने वाला गर्जन उठ धाये,
अंतरिक्ष में एक उसी नाशक तर्जन की ध्वनि मँडराये,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये,

(२)

नियम और उपनियमों के ये बंधन टूक-टूक हो जायें,
विश्वम्भर पोषक वीणा के, सभी तार मूक हो जायें,
शांति-दंड टूटे — उस महारुद्र का सिंहासन थर्राये,
उसकी पोषक श्वासोच्छ्वास, विश्व के प्राङ्गणमें घबराये,
नाश ! नाश ! ! हा महानाश ! ! की प्रलयंकारी आँख खुल जाये,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये।

३६

आरज़ू

[श्री आरज़ू लखनवी]

मिलनेकी उसके धुन है तो चल, होगा क्या न सोच
करना है एक काम तो अच्छा बुरा न सोच

अपना जिसे बनाना हो, आप उसका हो रहे
यह किसके बसकी बात है होना है क्या न सोच

हमको उन्हींके ध्यानमें मिटने से काम था
जाने लगा जो दम भी तो जी से गया न सोच

पक्के हैं धुनके जो, वह भटकते नहीं कभी
गलियों के तोड़ मोड़ को जी में ज़रा न सोच

अपने कहेका उसने किया है कभी निवाह?
उँगली दबाके दांतोंमें भूला है क्या, न सोच

रुकने लगें न बढ़के कहीं देनेवाले हाथ
रख दूसरेका ध्यान भी अपना भला न सोच

जो कुछ बदा है होगा अदा, और वही है ठीक
बस आरज़ू, बस आरज़ू, अच्छा बुरा न सोच

कठिन शब्दार्थ

गद्य-विभाग

१. मुझसे सब अच्छे

पृष्ठ १

भ्रमण – टहलना
परमार्थवृत्ति – दूसरोंका कल्याण करनेकी इच्छा
उपकार – भलाई

पृष्ठ २

संभवत: – हो सकता है
पश्चिमतर – पश्चिमसे आगेके
कर्तव्यपालन करना – फ़र्ज़ अदा करना
अग्रसर होना – आगे बढ़ना
ब्रह्माण्ड – विश्व
कूपमंडूक – बहुत कम जानकारी रखनेवाला मनुष्य (कुएँमें रहनेवाला मेंढ़क)
प्राणीमात्र – समस्त जीव
पक्षपात – तरफ़दारी
विज्ञापनबाज़ीका दलदल–समाचार-पत्रोंके चक्करमें यानी कीचमें
नि:स्वार्थ – बिना मतलबके
अनुकरण – नक़ल

पृष्ठ ३

स्पष्टोक्ति – साफ़ बात
व्याख्यान झाड़ना – भाषण देना, लेक्चरबाज़ी करना
अतिरंजित विवरण – बढ़ाचढ़ाकर किया गया बयान
'कामये दु:खतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्' – दु:खसे तपे हुए जीवोंके दु:खको दूर करना चाहती हूँ
गर्द – धूल
तमीज़ – विवेक, ज्ञान, अदब
लठैत – लट्ठबाज़, लाठी लड़नेवाला
धृष्ट – निर्लज्ज, उद्धत
मुखाकृति – मुखकी बनावट
गया बीता – बुरी दशाको पहुँचा हुआ, गिरा हुआ
नथना – नाकका अगला भाग

पृष्ठ ४

दबी ज़बानसे कहना – संकोचसे कहना, झेंपना
बित्ते पर – भरोसे पर, बूते पर
शतबार धिक्कार – सौ दफ़ा लानत
ईर्षा-द्वेष – जलन, दूसरेकी उन्नतिसे दु:खी होनेका भाव

पृष्ठ ५

नित्य-प्रति – रोज़ रोज़
सेवावृत्ति – सेवा करनेकी आदत
तृण – घास
जीवन-निर्वाह करना – जिन्दगी बसर करना
विराट सभा – बड़ी सभा
घृणासूचक प्रस्ताव – नफ़रत जतानेवाला ठहराव
दम भरना – अभिमानपूर्वक वर्णन करना
मृतक – मरा हुआ
जिह्वा-स्वाद – जीभका रस
सुस्वादु – अच्छे स्वादवाला
सरसब्ज़ – हराभरा
पतित – गिरा हुआ, क्षुद्र
श्रेष्ठ – सबसे अच्छा
ग्लानि – खेद, मानसिक शिथिलता
अन्तरात्मा – अंतःकरण
करीर – एक कँटीली झाड़ी जिसमें पत्तियाँ न हों

पृष्ठ ६

मो सम कौन . . . खल कामी – मेरे समान नीच, दुष्ट और कामी कौन है? जिसने मुझे यह शरीर दिया, उसे ही मैंने भुला दिया। मैं ऐसा नमकहरामी हूँ।
अंतर्नाद – आत्माकी आवाज़

२. मौतके मुँहमें

पृष्ठ ७

ज़िन्दादिल – खुशमिजाज
आक्रमण – हमला
मूलतत्त्व – मुद्देकी बात, खास सिद्धांत
बीहड़ तथा अगम्य – विकट और अभेद्य, जिसमें जाया न जा सके
पीर – गुरु, महात्मा, बड़ा
बावर्ची – रसोई बनानेवाला
भिश्ती – पानी भरनेवाला
खर – गधा, खच्चर
निरामिषभोजी – जो मांस न खाय
गुनाह बेलज्ज़त – ऐसा पाप जिसमें कोई लाभ न हो
व्यसन – बुरी आदत, लत
अपेक्षा – बनिस्बत

पृष्ठ ८

धमनी – नाड़ी
उष्ण रक्त प्रवाहित हो रहा है – गर्म लहू बह रहा है
मध्याह्न – दुपहर
साहसके पुतले – साहसी, बहादुर
शस्त्र और शास्त्र – हथियार और पुस्तक संबंधी ज्ञान
पारंगत – प्रवीण, दक्ष
खुदाई फ़ौजदार – ईश्वरीय न्यायाधीश या सत्ताधारी

हस्तक्षेप करना – दख़ल देना
लत – बुरी आदत
आततायी – दूसरोंको सतानेवाला
अवकाश – फ़ुरसत
'पयःपानं भुजंगानां केवलं विष-वर्धनम्' – साँपको दूध पिलानेसे केवल विष बढ़ता है
बातें बनाना – बहाने बनाना
शैतान – दुष्ट, लोगोंको बहकाकर धर्म-मार्गसे भ्रष्ट करनेवाला देवता
शैतानका नगड़-दादा – सबसे बड़ा शैतान
घिसघिस – झंझट, भारी परिश्रम

पृष्ठ ९

फायर करना – गोली चलाना
परलोक पठाना – मारना, दूसरे लोकको भेजना
छाय – साथ
मालूंगी – मारूँगी
मचलना – हठ करना
भागीरथी – गंगा नदी
धनुपाकार–धनुषके आकारकी, टेढ़ी
सहवासी – पड़ोसी, साथी
शैलशिखर – पहाड़की चोटी
द्रुमदल – वृक्षोंका झुरमुट
अलिचुंबित पुष्प – भौंरोंसे चूमे हुए फूल
नयनाभिराम – नेत्रोंको सुन्दर लगनेवाला
युगान्तर कर देना – पुरानी प्रथाको हटाकर उसके स्थान पर नई प्रथा चलाना

पृष्ठ १०

आकर्षण शक्ति–जड़ पदार्थोंकी वह शक्ति जिससे वे अन्य पदार्थोंको अपनी ओर खींचते हैं
चीत्कार – चिल्लाहट
होम देना – क़ुर्बान कर देना
शेष – बाक़ी, दूसरे
दुर्वासनाओंकी पूर्तिके पातकपुंज – बुरी इच्छाओंको पूरा करनेमें जो पाप होता है उसके ढेर
ऊब जाना – उकता जाना
कालिंदी-कूल-कदम्बकी डारिन – यमुना नदीके किनारेके कदम्ब वृक्षोंकी डालियाँ
नवागंतुक – नया आया हुआ
अघाना – तृप्त होना
टोन – आवाज़
सड़ककी घूमा, सदानी रहदी जवानीकी घूमा – पहाड़ी सड़कका मोड़ चिर-जवानीके मोड़के समान है
गानेकी छूत होना – एक आदमीको गाते देखकर दूसरेके दिलमें गानेकी उमंगका पैदा होना

रेंकना – बुरे ढंगसे गाना, गधेका बोलना
ओज – शक्ति, काव्यका एक गुण
प्रतिभा – विद्वत्ता
अभाव – न होना, कमी
अधोगति – पतन, नीचे गिरना
भग्नावशेष – खंडहर, टूटीफूटी (कुटिया)

पृष्ठ ११

जीर्ण-शीर्ण – फटा-पुराना
पेवंददार – पाती या पेवंद (थिगली) लगा हुआ
नथ – नाकमें पहननेका एक गहना
आतिथ्य – मेहमानदारी, अतिथि-सत्कार
सहृदयता – दयालुता, सज्जनता
षड्रस भोजन – सुन्दर सुस्वादु भोजन
(षड्रस – मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय, अम्ल ये छः रस)
कलह-कूप-अट्टालिका – वह मकान जिसमें घोर कलह चलता रहता हो
कैसर – जर्मनीका बादशाह जिसने पहिला विश्वयुद्ध उपस्थित किया था
प्रत्यक्ष – आँखों देखी, सम्मुख
लायड जार्ज – पहले विश्वयुद्धके समयका ब्रिटेनका होशियार प्रधान मंत्री
सात्विक – सत्वगुणी
क़ायल – क़बूल करनेवाला, माननेवाला
दराँती – घास काटनेका एक औज़ार, हँसिया
बटिया – बाट, पगडंडी

पृष्ठ १२

मिमियाना – भेड़ या बकरीका बोलना
घात – चोट, दाँव
दबोचना – दबाना
चम्पत होना – नौ दो ग्यारह होना, ग़ायब होना
काठके उल्लू – बिलकुल मूर्ख
अन्धाधुन्ध फायर करना – बिना सोचविचार किये बन्दूक़ चलाना
धावा – हमला
समतल – सपाट

पृष्ठ १३

घात लगाना – आक्रमण करनेके लिये अनुकूल अवसरकी राह देखना
आकाश पाताल एक करना – बेहद कोशिश करना
आह्वान करना – बुलाना
चन्द्रिका – चाँदनी
प्राची दिशा – पूर्व दिशा
शशिदेव – चंद्रमा

सजधज – सजावट, बनाव-सिंगार
काकचेष्टा बकध्यानं – कौए जैसा उद्योग और बगुले जैसा ध्यान, बनावटी साधुपन दिखाना
भें-भें और में-में – बकरेका शब्द, रोदन
चहलपहल – बहुतसे लोगोंका किसी स्थान पर आना जाना
आगमनकी प्रतीक्षा – आनेका इन्तज़ार
चौकन्ना करना – सावधान करना, भड़काना
तनिक – थोड़ा, ज़रा
पर्याप्त – काफ़ी, पूरा
होश-हवास – चेतना और बुद्धि, सुधबुध
काकड़ — हिरनकी क़िस्मका एक जानवर

पृष्ठ १४

एकटक देखना – लगातार बिना पलक गिराये देखना
हतोत्साह – निराश
परिचित – जानकार
खटका – प्रपंच, धोखा, दग़ा
प्रतीत – मालूम
छली-प्रपंची – मायावी, कपटी
कातर दृष्टिसे – भयभीत नज़रसे, डरी आँखोंसे
चौंधियाँ देनेवाली – चकाचौंध कर देनेवाली
मौतको नंगा नाचता देखकर – मौतका नंगा नृत्य देखकर, अंतिम समय समझकर
बेबस-गुमसुम – असहाय और मौन
भयावह – डरावना, भयंकर
मोहक शक्ति – आकर्षित करनेवाली शक्ति

पृष्ठ १५

वज्र – फ़ौलाद, इन्द्रदेवका शस्त्र विशेष
घातक – मार डालनेवाला
प्रलयंकारी ध्वनि – बड़े ज़ोरका भीषण शब्द
दाग देना – बंदूक़ छोड़ना
मर्मस्थान – हृदय, वह स्थान जहाँ आघात पहुँचनेसे प्राणीको अधिक कष्ट होता है
सेहरा – मौर, मुकुट
विद्युत् गतिसे – बिजलीके वेगसे
अन्दाज़से – अनुमानसे
सर्वं वै पूर्णं स्वाहा – सर्वस्वका नाश या होम होना
आड़– आश्रय, ओट
क़िलेबंदी टूट गई–रक्षाके लिये किये गए प्रयत्न बेकार हो गए
तिरछा लगना – टेढ़ा लगना, इधर उधर किनारे पर लगना

दहल जाना – डर जाना, डरसे काँप उठना
व्यक्त करना – प्रकट या ज़ाहिर करना
अचूक – कभी न चूकनेवाला
क्रूर प्रहार – निर्दयी वार

पृष्ठ १६

लोटपोट होकर – धराशायी होकर
सिर चकरा जाना – होश-हवास जाते रहना, घबरा जाना
सिर धुनना – शोकसे सिर पीटना
वज्राघात – वज्रका आघात, प्रहार
दायित्व – जवाबदेही
दुर्गति – बुरी हालत
उद्विग्नता – परेशानी, घबराहट
मेरी जीवनलीला समाप्त हो जाय – मैं भी मर जाऊँ
ग्राफ – गोली

पृष्ठ १७

मुहूर्त – क्षण, घड़ी
शव – मृत शरीर
काम तमाम करके – खतम करके, मारकर
माथा ठनका – आशंका हुई
संदिग्धावस्था – संदेहपूर्ण अवस्था, दुविधापूर्ण हालत
आव गिना न ताव – कुछ भी सोच-विचार न किया
मदिराका पियक्कड़—दारू पीनेवाला
ब्रांडी – शराब

पृष्ठ १८

खुखरी – नेपाली छुरी
चेस्टर – लबादा, लम्बा कोट
आवरण – पर्दा, आच्छादन
झँझोड़ना – झटकना, पकड़कर बुरी तरह हिलाना
आघात – चोट, प्रहार

पृष्ठ १९

खुरसटें – खरोंचें
प्रेमजन्य कोपका भाजन – प्रेमसे उत्पन्न गुस्सेका पात्र
रोमांचकारी घटना – रोंगटे खड़े कर देनेवाला वाक़या
व्यथित हृदय – दुःखी
उदर – पेट
उदरको जंगली मुर्ग़ . . . क़ब्र बनाने लगे – ख़ूब जंगली मुर्ग़ और तीतर खाने लगे
परब्रह्म – भगवान
जहाँ - संसार
कोटिशः – अनेक
महफ़िल – जलसा, गोष्ठी
मकाँ – मकान
एक जाता है . . . मकाँ होता नहीं – संसारसे एक व्यक्ति जाता है तो दूसरा वहाँ आ जाता है, उस परम पिता परमेश्वरकी महफ़िल (संसार) का मकान कभी खाली नहीं होता।

३. बापू

पृष्ठ २२

लाज़मी – ज़रूरी
बेशुमार – बेहद, अनगिनत
रोमांचक – रोएँ खड़े कर देनेवाली
पार्ट अदा करना – अभिनय करना
सतह – तल, ऊपरी हिस्सा
अध्ययन – अभ्यास, पढ़ाई

पृष्ठ २३

महसूस करना – अनुभव करना
बदा होना – लिखा होना (भाग्यमें)
क़ामयाबी – सफलता
विरले ही – कोई ही
त्रुटियाँ – ग़लतियाँ, दोष
हालाँकि – यद्यपि, गो कि
स्थितप्रज्ञ – समस्त मनोविकारोंसे रहित आत्मसंतोषी
एकरसता – एकता
अख़्तियार करना – अपनाना

पृष्ठ २४

प्रदान करना – देना
वाहन – सवारी, बोझा ढोनेवाली वस्तु
फ़िरका – जाति
याददाश्त – स्मरण-शक्ति
फुर्तीले – जल्दी चलनेवाले
मुस्कान – मंद हँसी, मुस्कुराहट
चरम सीमा – आख़िरी, सबसे अंतिम हद

पृष्ठ २५

रूहानी तौर पर कंगाल – आध्यात्मिक दृष्टिसे ग़रीब
प्रभावित करेगा – असर डालेगा

४. बड़े घरकी बेटी

पृष्ठ २६

नम्बरदार-ज़मींदार – जो मालगुज़ारी वसूल करनेमें सरकारको सहायता दे
पितामह – दादा
अस्थिपंजर – हड्डियोंका ढाँचा
धन-धान्यसंपन्न – सब तरहसे भरे पूरे
सदा सिर पर सवार रहना – कभी ख़ाली न छोड़ना, हर दम सामने उपस्थित रहना

पृष्ठ २७

दोहरे बदनका – मोटा, तगड़े डीलडौलका
सजीला – छैला, सजा हुआ
विपरीत – उल्टा, विरुद्ध
वैद्यक ग्रंथ – रोगोंकी चिकित्साकी किताब
न्योछावर कर देना – वार डालना, वारकर फेंकना
कर्णमधुर – कानोंको प्यारी लगनेवाली, सुहावनी
तिरस्कार – अनादर
सम्मिलित कुटुंब-प्रथा – संयुक्त परिवारकी रीति

खरल – खल, दवा पीसनेका पत्थरका पात्र
उपासक–भक्त, उपासना करनेवाला

पृष्ठ २८

तरह देना – ध्यान न देना, जाने देना
निर्वाह – निभाव, मेल
आये दिन – रोज़ रोज़
खिचड़ी अलग पकाना – (परिवारसे) अलग रहना
बहरी – बाज़की तरहकी एक शिकारी चिड़िया
शिकरा –एक शिकारी पक्षी
झाड़-फानूस – छतको सजानेके शीशेके झाड़, हंडियाँ, गिलास आदि जिनमें दीपक जलाये जाते हैं
विद्यमान – हाजिर, मौजूद
उमंग – उत्साह
ऑनरेरी मेजिस्ट्रेटी – प्रतिष्ठाके लिये किया जानेवाला अवेतनीय मेजिस्ट्रेटका कार्य
चंदा – फंड, उगाही
नागरी प्रचार – हिन्दी प्रचार (नागरी—वह लिपि जिसमें हिन्दी लिखी जाती है)
टीम-टाम – बनाव-शृंगार
बहली – रथके आकारकी बैलगाड़ी
स्लीपर – एक विशेप प्रकारके जूते
फ़र्श – बिछावन, चादर

पृष्ठ २९

व्यंजन – स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ, पका भोजन
भावज – बड़े भाईकी स्त्री, भाभी
किफ़ायत – कमख़र्ची, हाथ रोककर ख़र्च करना
क्षुधा – भूख
तनककर –चिढ़कर, उत्तेजित होकर
घी की नदी बहना – खूब घी होना, अत्यधिक संपन्न होना
हाथी मरा तो नौ लाखका – नष्ट हो जाने पर भी बड़ी चीज़ोंकी प्रतिष्ठा बनी रहती है
नाई कहार – हज्जाम और पानी भरनेवाला
मैका – पीहर
ढिठाई – गुस्ताखी, धृष्टता
नित्य – प्रतिदिन

पृष्ठ ३०

उजड्ड – असंस्कृत, संस्कारहीन, गँवार
हाथ साफ़ करना – पीटना
खड़ाऊँ – पादुका, काठका खुला जूता
गुमान – घमंड
खूनका घूँट पीकर रह जाना – लाचार होकर रह जाना

कोपभवन – वह मकान जिसमें रूठकर खाये-पिये विना कोई रहता हो
भद्र – सभ्य

पृष्ठ ३१

मुंह सँभालकर वात करना – सोच समझकर, मर्यादामें रहकर वात करना
मुँह लगना – अमर्यादित रूपसे वातचीत करना
कुर्मी – किसान, कुनवी
उलझ पड़ना – लड़ पड़ना, झगड़ना
उपद्रव – उत्पात, दंगा
तेवरियों पर वल पड़ना – क्रोधसे भौंहोंका चढ़ जाना
ज्वाला-सी दहक उठना – आग आग हो जाना
मुंह झुलसना – मुँह जलाकर काला कर देना (एक गाली)
चपरासगीरी – नौकर या चपरासी का काम
शऊर – वुद्धि
करवटें वदलना – वेचैन रहना

पृष्ठ ३२

अन्यायी – अत्याचार करनेवाला
उद्विग्नता – व्याकुलता, चिंता
विद्रोहपूर्ण – वैरसे भरा
आड़े हाथों लेना–खरी-खोटी सुनाना
मान-प्रतिष्ठा–सम्मान और ऐश्वर्य
प्रकोप – वहुत अधिक गुस्सा
सिर चढ़ाना – मुंह लगाना

पृष्ठ ३३

उत्तरदाता – जवावदेह, ज़िम्मेदार
दम न मारना – कुछ न वोलना, चूं तक न करना
गरमाना – क्रोध करना
कुटिल – कपटी
क्रूरता – निर्दयता
महानुभाव – आदरणीय व्यक्ति (व्यंगमें – दग़ावाज़)
अविवेक – अज्ञान

पृष्ठ ३४

मधुर वाणियाँ – मीठी वोलियाँ (व्यंगरूपमें—कड़वी गालियाँ)
तलमलाना–वेचैन होना, छटपटाना
दव्वू – दवकर रहनेवाला
हथकंडा – चालाकी
डिवेटिंग क्लव – चर्चासभा
दुष्टता – निर्दयता

पृष्ठ ३५

घुड़कना – डाँटना
मुगदर – व्यायाम करनेके लकड़ीके भारी डंडे
ड्योढ़ा – डेढ़ गुना
हृदयविदारक – हृदय दहलानेवाली
ग्लानि – नफ़रत
निर्दयताकी मूर्ति – अत्यंत कठोर, निर्दयी

पृष्ठ ३६

गला भर आना – आवेगके कारण कण्ठ रुक जाना

कतराकर निकलना – नजर बचाकर निकलना

मनका मैल . . . कोई वस्तु नहीं है – ग़लतफ़हमीको दूर करनेके लिये आँसू ही सर्वोत्तम हैं

उपयुक्त – उचित, वाजिब

लाला – देवरके लिये एक प्यार भरा संबोधन

जीभमें आग लगे – मेरी जीभ जले (गाली)

पृष्ठ ३७

कदापि – कभी भी

साक्षी देकर – सौगंध खाकर, गवाह देकर

सहर्ष – राज़ी-खुशी

पृष्ठ ३८

लल्लू – छोटे भाईके लिये एक प्यारभरा संबोधन

वृत्तान्त – हाल

५. तुलसीदासजी

पृष्ठ ३९

सर्वोत्तम – सबसे अच्छा

निन्दा – बुराई

पृष्ठ ४०

वालिवध – वालिकी मृत्यु

समर्थन – यह कहना कि अमुक बात ठीक है

देशद्रोह – देशके साथ बेवफ़ाई, बग़ावत

काव्य-चातुर्य – काव्य-कौशल, कविता लिखनेमें निपुणता

विभीषण – रावणका भाई जो रामका भक्त था और रावणकी मृत्युके पश्चात लंकाका राजा बना

भिन्न भिन्न – अलग अलग

उपरोक्त – ऊपर कहा हुआ

अंगप्रत्यंग – प्रत्येक हिस्सा

प्रतीत – मालूम, ज्ञात

परिणाम – नतीजा

वस्तुस्थिति – वास्तविक हालत, परिस्थिति

बाह्य परीक्षा – ऊपरी जाँच

ईश्वर-विमुख – ईश्वरके विरुद्ध

ईश्वरके सम्मुख – ईश्वरकी तरफ़, पक्षमें

अनुभवजन्य – अनुभवसे उत्पन्न, तजुर्बेसे पैदा हुआ

अधिकांश – ज्यादातर

आंतरिक – अंदरकी

मानस – रामायण, रामचरितमानस, मन

पृष्ठ ४१

अनिच्छासे – बिना चाहे

भक्तशिरोमणि – भक्तोंके सिरमौर

प्रचलित – चालू, जिसका चलन हो
पूजनीय – पूजने योग्य
पुनीत – पवित्र
निर्भर – अवलंबित, सहारे पर, आश्रित
शासक – राजा, शासन करनेवाला
द्वंद्व युद्ध – दोके बीचकी लड़ाई
सराहनीय – बखानने योग्य

पृष्ठ ४२.

यंत्रवत् – मशीनकी तरह
'सर्वारंभा हि दोषेण धूमेनाग्नि-रिवावृता:' – जैसे धुएँसे अग्नि ढँक जाती है, वैसे ही सभी प्रारंभिक कार्य दोषसे ढँके रहते हैं (मुक्त नहीं होते)
हंसवत् – हंसकी तरह
क्षीर – दूध
पृथक्करण – अलग करनेकी क्रिया

६. फ़ायदा क्या है ?

पृष्ठ ४३

रेखागणित – ज्यामिति, भूमिति
यूक्लिड – रेखागणित बनानेवाला
शिक्षित – पढ़ेलिखे
क़द्रदाँ – क़द्र करनेवाला
दुर्लभ होना – अप्राप्य होना, न मिलना
राजनीति-विशारद – राजनीतिका पंडित

पृष्ठ ४४

शिक्षार्थी – विद्यार्थी
जमघट – भीड़
आविष्कार – खोज
मुख़ातिब – उन्मुख, मुँह सामने करके
झेंपना – लजाना
पल्ले पड़ना – प्राप्त होना
ठेठ चोटी पर – अंतिम ऊँचाई पर
ठेठ – बिलकुल
शिखर – चोटी
समूची – तमाम, सारी
बेकारकी ग़लतफ़हमीमें – व्यर्थके भ्रममें

पृष्ठ ४५

उत्सव-प्रिय – आमोद-प्रमोदका प्रेमी
घेरेमें घिरे रहना – हदमें बंद रहना
स्वच्छंदता – स्वतंत्रता
अट्ठारह बिस्वे दारिद्र्य – (बिस्वा बीघेका १/२०) बीसमें से अठारह हिस्से दारिद्र्य
दूना – दुगुना
जेवनार – भोज, दावत, भोजन करनेवाले मनुष्योंकी पंक्ति
व्यंजन – खानेकी चीजें
बान – टेव, आदत
दिवालियापन – अत्यन्त ग़रीबी
ब्राह्मणवृत्ति, क्षात्रवृत्ति, वैश्यवृत्ति – ब्राह्मणकी त्याग वृत्ति, क्षत्रियकी रक्षावृत्ति और वैश्यकी औद्योगिक साहसवृत्ति
लुप्त – ग़ायब

मृत्युके पहले पार—मृत्युके उस पार
निमित्त—कारण, लिये
आहुति—बलिदान
कोश—शब्दकोष
संगति—मेल

पृष्ठ ४६

सरासर—पूर्णतया, बिलकुल
मीयाद—हद, सीमा
उर्फ़—यानी
सूत्र—गूढ़ और अनेकों अर्थवाला थोड़े शब्दोंका वाक्य
डोंडी—कली
बाक़ायदा—क़ायदेसे, विधिवत्

पृष्ठ ४७

उद्गम—उत्पत्ति-स्थान, निकास
अंतरीप—पृथ्वीका वह नुकीला भाग जो समुद्रमें दूर तक चला गया हो
करामात—चमत्कार
प्रकरण—प्रसंग

७. सरोजिनी नायडू

पृष्ठ ४८

वाक़िफ़—जानकार
ऐशो-आराम—भोगविलास और आराम
पुरखे—पूर्वज, बापदादा
हासिल—प्राप्त
प्रकांड विद्वत्ता—बहुत बड़ी विद्वत्ता

पृष्ठ ४९

मायालु—प्रेम रखनेवाली
दरियादिली—उदारता
जी चुराना—बचना, कतराना
इस प्रसंगकी बाबत—इस घटनाके संबंधमें
भाषाविद्—भाषाके पंडित
ख्वाहिश—आकांक्षा, इच्छा
कमसिन—कम उम्रकी
नाम पैदा करना—यश या कीर्ति प्राप्त करना
सतर—लाइन
ड्रामा—नाटक

पृष्ठ ५०

वज़ीफ़ा—छात्रवृत्ति
नतीजा—परिणाम
सुषमा—परम शोभा, सौंदर्य
शील—चरित्र
प्रतिभा—बुद्धिमानी
कल्पनाविहार—कल्पनाकी उड़ान
शब्दलालित्य—शब्द-योजनाकी सुन्दरता
शोभा-सुषमा—खूबसूरती, सुन्दरता
बड़े लाट—वाइसराय

पृष्ठ ५१

रिश्तेदार—सगेसंबंधी, नातेदार
परवरिश—पालन-पोषण
दिलदादा—आशिक़, प्रेमी, हामी
अंग्रेज़ीदाँ—अंग्रेज़ी जाननेवाले अथवा अंग्रेज़ीके प्रेमी

परदानशीन — परदेमें रहनेवाली
चोला पहनना — स्वरूप देना
अलविदा — आखिरी विदा

पृष्ठ ५२

दौरा — सफ़र, यात्रा
मुँहसे फूल झड़ना — मुँहसे बहुत सुन्दर और प्रिय बातें निकलना
ग्लानि — नफ़रत
हिन्दियों परके — हिन्दुस्तानियोंके ऊपर किये गये
ग़लतफ़हमी — भ्रम, शंका, ग़ैरसमझ
मिसेज़ — श्रीमती
नसीब न होना — प्राप्त न होना

पृष्ठ ५३

चुस्ती — फुरती, दृढ़ता
मुस्तैदी — तत्परता
रहनुमाई — मार्गदर्शन, अगुआई
हमदर्दी — सहानुभूति
तरक्क़ी — उन्नति
जीवनक्षेत्रमें — ज़िन्दगीके मैदानमें
खातून खाना — अच्छी गृहिणी
सभाकी परी — सभाओंमें लोगोंको अपने रूपरंगसे मोहनेवाली स्त्री
निस्वत — बजाय, अपेक्षा
तहेदिल — सच्चे दिलसे
दंगा — झगड़ा
हँसोड़ — दिल्लगीबाज़, मसखरा

पृष्ठ ५४

पतवार — नावका सुकान
क़यामतका दिन — प्रलयका दिन, मुसलमानों, यहूदियों और ईसाइयोंके अनुसार सृष्टिका वह अंतिम दिन जब सब मुर्दे उठकर खड़े होंगे और ईश्वरके सामने उनके कर्मोंका लेखा रखा जायगा
शरीक — शामिल
टीका — तिलक
क़हक़हा — ज़ोरकी हँसी, अट्टहास

पृष्ठ ५५

मिश्रण — मिलावट, मेल, मिलाप
मोहिनी — मोह लेनेकी शक्ति, आकर्षण, जादू
एक सरीखा — समान, एक-सा
ममता — प्यार
कार्यपद्धति — काम करनेका ढंग
सारा कार्यभार . . . विलीन हो गई — मौजूदा ज़मानेको अपनी सारी ज़िम्मेदारियाँ सौंपकर अतीतके अंधकारमें ओझल हो गई

८. शिवाजीका सच्चा स्वरूप

पृष्ठ ५६

दालान — बरामदा, ओसरा
सफ़ील — चारदीवारी, कोट

बुर्ज – क़िलेकी दीवारमें बैठकवाला गोल पहलदार भाग
सह्याद्रि पर्वत – बंबई प्रांतका प्रसिद्ध पर्वत
शिखरावलि – शिखरों (पर्वतकी चोटियों) की पंक्ति
दृष्टिगोचर होना – दिखलाई पड़ना
ओटमें – आड़में
आलोकित – प्रकाशित, चमकता हुआ
कीनखाव – एक प्रकारका क़सीदेदार रेशमी कपड़ा
मसनद – बड़ा तकिया

पृष्ठ ५७

मावली – महाराष्ट्रकी एक पहाड़ी वीर जाति
लूटकर – जबरदस्ती छीन कर
अधेड़ – प्रौढ़, जवानी और बुढ़ापेके बीचकी अवस्था
वर्ण – शरीरका रंग
वेषभूषा – पहनाव, पोशाक
श्रीमन्त – शिवाजीके लिये विशेष संबोधन
हम्माल – भार ढोनेवाला कुली
सदृश – समान, तुल्य
तरज – बनावट, ढंग
त्रिपुण्ड – शैव लोगोंका तीन आड़ी रेखाओंका तिलक
अभिवादन – प्रणाम, नमस्कार
संवाद – समाचार, ख़बर
निस्तब्धता – ख़ामोशी, सन्नाटा
उत्सुकता – भारी इच्छा

पृष्ठ ५८

पैदल – ज़मीन पर लड़नेवाले सिपाही, प्यादे
हेटकरी –, बारगिर –, शिलेदार – } शिवाजीके सैनिक
अधिपति – नायक
मेणा – स्त्रियोंकी बन्द पालकी
तोहफ़ा – भेंट, उपहार

पृष्ठ ५९

भृकुटी – भौंह
परिवर्तित मुद्रा – चेहरेका बदला हुआ रूप (ढंग)
पड़वी – दालान
सिपहसालार – सेनापति
नामाक़ूल हरकत – अयोग्य काम, (बुरा) अनुचित कार्य
अजीबोग़रीब ख़ूबसूरती – अद्भुत सुन्दरता
मुआफ़ी – क्षमा
इबादत – प्रार्थना
परेशान – बेचैन
इज्ज़त – आबरू
हिफ़ाजत – रक्षा, सावधानी
ख़बरदारीसे – सावधानीपूर्वक

पृष्ठ ६०

शौहर – पति

कदाचित् – शायद

घृणित कार्य – घृणा (नफ़रत) पैदा करनेवाला काम

दरार – शिगाफ़, किसी चीज़के फटने पर पड़ती खाली जगह

आततायी – दुष्ट, सतानेवाला

उदारचेता–जिसका चित्त उदार हो

कृति – कार्य, काम

रक्तपात – खूँरेज़ी, लहू बहाना

शील – चारित्र्य

इन्द्रियलोलुप – इन्द्रियोंके वशमें, कामुक

श्रेयस्कर – लाभदायक

कनखियोंसे देखना – दूसरोंकी नज़र बचाकर देखना

यवनिका – परदा

९. मजहबी रिवाजोंकी परख

पृष्ठ ६२

पुश्त – पीढ़ी

सत्यशोधक – सत्यकी खोज करनेवाला

मुनासिब – उचित, ठीक, योग्य

उसकी बदौलत – उसके कारण

नीयत – इच्छा, आंतरिक लक्ष्य, संकल्प

जमात – दल

खुराफ़ाती – झगड़ालू, बेहूदा

पृष्ठ ६३

व्रत – किसी पुण्य या लक्ष्यकी प्राप्तिके लिये नियमोंका पालन

क़ायम करना – स्थापित करना

झगड़ा मोल लेना – झगड़ा पैदा करना

आम तौर पर – साधारणतः

फ़र्ज़ – कर्तव्य

रस्म-रिवाज – रीति-रिवाज

सहयोग देना – मदद देना

समदृष्टि – सबको समान समझनेकी दृष्टि

पृष्ठ ६४

हतक करना – बेइज़्ज़ती करना

दुराव – भेदभाव, कपट

दुन्यवी – सांसारिक

आचार–आचरण, रहन-सहन, चलन

रूढ़ि – परंपरा, प्रथा

मान्यता–विश्वास, आदर्श, स्वीकृति

महसूस करना – अनुभव करना

अहंकार – घमंड

नमाज़ – प्रार्थना

रोज़ा – व्रत

ईद – } त्योहारोंके नाम
मुहर्रम – }

पृष्ठ ६५

मक़सद – ध्येय, मतलब
संप्रदाय – धार्मिक पंथ
ढकोसला – आडम्बर, पाखंड
पाक – पवित्र
नाहक़ – फिज़ूल
उगलना – पेटमें गई वस्तुको मुंहसे बाहर निकालना
बनिस्बत – अपेक्षा, मुक़ाबलेमें
दरअसल – वास्तवमें
शरीक – शामिल

१०. वह सीख

पृष्ठ ६७

बापू – महात्मा गांधी
चंपारन – बिहार प्रांतका एक ज़िला जहाँ नीलके खेतोंमें काम करनेवालोंका दुख दूर करनेके लिये गांधीजीने हिन्दुस्तानमें आकर पहला सत्याग्रह चलाया था
कोचरब आश्रम – अफ्रीकासे आने पर गांधीजीने अहमदाबादमें साबरमती नदीके पार कोचरब नामी विस्तारमें एक किरायेके बंगलेमें अपना आश्रम बनाया था
भद्र – अहमदाबादका एक पुराना क़िला जिसमें भद्रकाली माताका मंदिर भी है

एकाग्रता – चित्तकी स्थिरता
चिंतन – सोच-विचार
माहवार – प्रति माह
बुद्धू – बेवक़ूफ़
व्याकुलता – खिन्नता
झिड़की – डांट-फटकार
सजधज – बनाव-सिंगार
रियासत – देशी राज्य, रजवाड़ा
बर्दाश्त करना – सहना

पृष्ठ ६८

ताना कसना – आक्षेप करना, चुभती हुई बात कहना
दो कौड़ीका – जिसका कुछ मूल्य न हो, बेकार
मैट्रिक्युलेट – मैट्रिक पास
परिपाटी – सिलसिला
प्रबंध – इंतज़ाम
व्यथा – दुःख, खेद
निस्सार – असार, बेकार, व्यर्थ
घातक – नुक़सान पहुँचानेवाली, घात करनेवाली
सयाना – होशियार

पृष्ठ ६९

भोंदू – बेवक़ूफ़
मारा मारा फिरना – भटकना, दुःख उठाना, बुरी दशामें इधर उधर घूमना
तालीम – शिक्षा
फ़ुरसत – अवकाश, बचा हुआ समय

विकसित करना – बढ़ाना
काफ़ूर हो जाना – ग़ायब होना
वात्सल्य – बड़ोंका छोटोंके प्रति प्रेमभाव

पृष्ठ ७०

चरित्रगठन – चरित्रनिर्माण

११. सत्ययुग और कलियुग

नाईं – तरह, भाँति
सामूहिक – समूहका, इकट्ठा, मिलजुलकर

पृष्ठ ७१

जड़ – अचेतन
सम्बद्ध – जुड़कर, साथमें मिलकर
घर्षण – रगड़
संघर्ष – स्पर्धा, होड़ा-होड़ी
अधिकांश – ज्यादातर, अधिक अंशमें
वैयक्तिक – व्यक्तिगत
उद्वेग – व्याकुलता, आवेश
व्यतीत होना – ख़तम होना, बीतना, बसर होना
आवश्यकता – ज़रूरत
विभिन्न मंतव्य – अलग अलग मत या विचार
दलित – कुचले हुए, पीड़ित
सहृदयी – सज्जन
निष्फल श्रम – ऐसा परिश्रम जिसका फल प्राप्त न हो

पृष्ठ ७२

परस्पर विश्वास – एक दूसरेके प्रति भरोसा
विरुद्ध – ख़िलाफ़
अशक्त – जिसमें शक्ति न हो
स्पर्धा – होड़
क्रूस पर बलि चढ़ना पड़ता है – ईसाकी तरह वधके खंभे पर लटककर जान गँवानी पड़ती है, बलिवेदी पर बलिदान होना पड़ता है
सत्ता – अधिकार
तिरस्कारकी दृष्टि – नफ़रतकी निगाह
दलबन्दी – पार्टीबाज़ी, गुटबन्दी

पृष्ठ ७३

नारा – शोर, आवाज़
चरम – बड़ा, चोटीका
नौबत बजना – नगाड़े बजना, बोलबाला होना
क़ायम – स्थायी
विद्रोह – भारी उपद्रव
दधीचि – ऋषि विशेष जिन्होंने वृत्रासुरको मारनेके लिये इन्द्रको अपनी वज्र-सी कठोर हड्डियोंका दान दिया
दिग्विजय – संसार-विजय
उपस्थित होते हैं – आ जाते हैं
याचक – माँगनेवाला
संकीर्ण – छोटा, संकुचित, क्षुद्र

पृष्ठ ७४

दौर-दौरा – प्रभाव, हुकूमत

वैभव – धन-दौलत

१२. लाटरीका टिकट

मर्द – एक गाली

ख़ैरात – दान-पुण्य

पृष्ठ ७५

लाहौल विला कूह! – आश्चर्य और घृणासूचक शब्द

तोबा – किसी अनुचित कामको न करनेकी शपथ

जहन्नम – नर्क

ज़रूरी मशविरे – आवश्यक सलाह

फुंकनी – चूल्हा फूंकनेकी लोहे या बांसकी नली

सर खाना – व्यर्थकी बातचीतसे परेशान करना

दस्तक – खटखटानेकी क्रिया

पृष्ठ ७६

आदाब अर्ज़ – सादर नमस्कार

नज़ला – ज़ुकाम, सर्दी

ख़ैरियत – कुशल

दुल्हन – वधू

मुबतला – फँसा हुआ, लीन

कोठी – बंगला, बड़ा मकान

चमन – कोठीका नाम

चेचक – शीतला माता, एक रोग जिसमें बदन पर दाने निकल आते हैं

इन्तज़ार – बाट, राह

चौराहा – चार रास्ते

पृष्ठ ७७

इस क़िस्मके – इस तरहके

दर्द सर मोल लेना – आफ़त मोल लेना

शागिर्द पेशा – रईसोंके नौकरोंके रहनेका स्थान

आलीशान – बहुत बड़ा

मिज़ाजशरीफ़–आप अच्छी तो हैं?

वाक़ई – सचमुच

हाँडी चली जाना – चूल्हे पर चढ़ी हाँडीका उबलकर बह निकलना

न किसी बातका सर न पैर – बेमेल, ऊटपटांग बात

पृष्ठ ७८

बस्ता – कागज़ पत्र बाँधनेका चौकोर कपड़ा, दफ़्तर

वाक़ई – दरअसल

कौन जानता है तेरी ज़ुल्फ़ के सर होने तक? – कौन जानता है कि ज़ुल्फ़ बढ़ेगी वहाँ तक क्या हो जायगा? (ज़ुल्फ़ – बाल)

ज़लील – तुच्छ

मुइम्मा – रहस्य

वज़ा – बनावट, रचना

लिहाज़ा – इसलिये

ख़याली पुलाव पकाना – असंभव बातें सोचना

पृष्ठ ७९

सलाह मशविरा – विचार-विनिमय
शरीक – शामिल
घास खाना – अक्ल खराब होना
फ़ेहरिस्तें बटोरना – सूचीपत्र इकट्ठे करना
रोज़मर्रा – प्रतिदिन
अजीब अहमक – विचित्र प्रकारका मूर्ख
कूकदार – चाबीवाला, जिसे कूका जा सके, चाबी दी जा सके
पुर्ज़ा – मशीनका एक भाग, टुकड़ा
मुताल्लिक़ – के बारेमें
तहक़ीक़ात करना – जाँच करना
उमदा क़िस्मका – अच्छे प्रकारका
सोफ़ा – बढ़िया गद्देदार कुर्सी
पहेली बुझाना – उलझनसे भरी बात करना
लचकदार – नरम, झुकनेवाली

पृष्ठ ८०

क़ुफ्ल – ताला, स्टापर
घरमें नहीं दाने अम्मा चली भुनाने – घरमें न सूत न कपास जुलाहेसे लट्ठमलट्ठा; घरमें किसी चीज़का न होना और उसके संबंधमें बातें करना
साईं – माँगकर खानेवाला, फ़क़ीर
डाका – लूटमार
सुर्ख़ाबका पर लगना – अनोखापन या विशेषता होना
बिला वजह – अकारण, बिना बातके

पृष्ठ ८१

हिमाक़त – बेवक़ूफ़ी, मूर्खता
हवाई मनसूबे – थोथी कल्पना, हवाई बातें
दुनिया उम्मीद पर क़ायम है – आशा पर संसार टिका है
टापता फिरना – भटकते फिरना, हैरान होना
मालूमात हासिल करना – जानकारी प्राप्त करना
गोया – मानो
कोरा – कुछ न जाननेवाला, अज्ञानी

पृष्ठ ८२

ऐन वक़्त – ठीक मौक़े पर
साहबज़ादे – आदरका संबोधन
दूरंदेशी – दूरदर्शिता
ज़िहन – बुद्धि, मन
इस्कीम – योजना
मसलन् ; उदाहरणार्थ, जैसे
मकतब – पाठशाला, स्कूल
मरहूम – स्वर्गीय
बावर्ची – रसोइया

पृष्ठ ८३

मुग़लानियाँ – कपड़े सीनेवाली

दिल्लगीबाज़ – हँसोड़, मज़ाकी
इन्सान – आदमी
मामायें – खाना बनानेवाली
रईस – प्रतिष्ठित व्यक्ति
दावत – भोज
किफ़ायत – कमखर्ची
दिन फिरना – अच्छे दिन आना
इस्तीफ़ा – त्यागपत्र
तजवीज़ – तरकीब
महज़ – केवल, फ़क़त

पृष्ठ ८४

ऊँटें उड़ रही होंगी – खूब बेतुकी बातें हो रही होंगी
बन रहे हैं–किसी बातको छुपानेका ढोंग या अभिनय कर रहे हैं
कबाड़खाना – टूटीफूटी चीज़ोंको रखनेका स्थान
घड़ौंची – पानी रखनेकी तिपाई
घ़ुसन – दूध बेचनेवाली
क़तरा – बूंद
घिनौनी – बीभत्स, घृणा पैदा करनेवाली
सेहत – तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य
बालाई – मलाई

पृष्ठ ८५

नथुनों चने चबाना – नाकों चने चबाना, बहुत कष्ट पाना
फ़ख्र – अभिमान
मक़रोज़ – क़र्जदार
दिमाग़ खाली करना – मग़ज़-पच्ची करना
ईदका चाँद होना – बहुत कम दिखाई देना
मसरूफ़ – व्यस्त, काममें लगा हुआ
हालांकि – ऐसी बात है, यद्यपि, अगरचे
हाज़िरी देना – उपस्थित होना

पृष्ठ ८६

इलहिदा – अलग
नजात – छुटकारा, रिहाई
क़ायदेका – अच्छे ढंगका
घर घोड़ी नखास मोल – घरमें घोड़ी (चीज़) रखकर बाज़ारमें मोल-तोल करना
बक़ाया – बाक़ी

पृष्ठ ८७

वाक़ई – सचमुच
ग़ालिबन् – संभवतः
बेशक – निश्चय ही
बेहतर – ज्यादा अच्छा
काग़ज़ात – दस्तावेज़

पृष्ठ ८८

बादल देखकर घड़ा तोड़ना – बड़ी आशाके सहारे हाथकी चीज़ खो बैठना
इब्न – लड़का
अरायज़नवीस–अर्ज़ियाँ लिखनेवाला
अज़ीम – विशाल, बड़ा, वृद्ध और पूजनीय
मुहर्रिर – लेखक, लिखनेवाला

कुंडी – साँकल
मशविरा – सलाह
मशीर – सलाहकार

पृष्ठ ८९

विस्मिल्ला करना – भगवानका नाम लेना
दस्तख़त – सही, हस्ताक्षर
इख़्तिलाज – घबराहट
इन्तक़ाल फ़रमाना – चल बसना, मर जाना

१३. मजहब और साइन्स

पृष्ठ ९१

नामलेवा – नाम लेनेवाला, वारिस
कन्फ्यूशियस – चीनका प्रसिद्ध संत और तत्त्ववेत्ता
मुताविक़ – अनुसार
वालकी खाल निकालना – किसी वस्तुके सम्बन्धमें आवश्यकता से अधिक छानवीन करना
वेजा – अनुचित
ठेस – चोट
लचीलापन – किसी चीज़की परिवर्तनशीलता या फेरफारका गुण

पृष्ठ ९२

काहिली – सुस्ती, आलस
आड़ लेना – शरण या सहारा लेना, ओट लेना
वसूल – प्राप्त
चैतन्य – जगा हुआ
दुनियावी – सांसारिक
कूटनीति – दाँव-पेचकी नीति या चाल
अटूट नाता – कभी न टूटनेवाला संवंध

पृष्ठ ९३

वुनियाद – मूल
उसूल – सिद्धांत
तंगनज़री – संकुचित दृष्टिकोण
अंधी मान्यताएँ – अंधविश्वास
वाँदी – दासी

पृष्ठ ९४

वन्दगी – सलाम
रंगारंगी और वहुरूप – रंग विरंगापन और विचित्रता
तहज़ीव – सभ्यता
दरशाना – दिखलाना, समझाना
तसल्ली – शान्ति
ख़िलाफ़ – विरुद्ध

पृष्ठ ९५

निकम्मे – वेकार
रूहानी आग – आत्माकी ज्योति, आध्यात्मिक शक्ति
मैल – गंदगी

पृष्ठ ९६

दीन – मज़हव, धर्म
रूहानी दुनिया – आध्यात्मिक विश्व

माद्दा – पदार्थ, शक्ति
जड़ जगत – अचेतन संसार
विचार-ज़र्रोंसे – विचार-कणोंसे

पृष्ठ ९७

इत्तफ़ाक़से – संयोगसे
सुरीलापन – मीठा स्वर
तरतीबमें – क्रममें
रूहका जहूर – आत्माका प्रकाश
महकमा – विभाग, दफ़्तर
सूफ़ी – मुसलमानोंका एक धार्मिक उदार संप्रदाय
सलूक – आचरण, व्यवहार

१४. जब किसान गाता है

पृष्ठ ९९

धरतीका लाल – धरतीका पुत्र, किसान
जीवन-संघर्ष – जीवनके लिये होड़ा-होड़ी
संपर्क – संबंध
मरुभूमि – मारवाड़
पथिक – मुसाफ़िर
थिरकना–खुशीसे उछलना, नाचना
रीं – पहियोंसे निकलनेवाला शब्द
मुखरित हो उठना – ध्वनित होना, गूंजना
उपयुक्त प्रतीत होना – वाजिब या उचित लगना
मोहेंजोदड़ो – मिट्टीमें मिला हुआ सुमेरियन संस्कृतिका ५००० वर्ष पहलेका एक प्राचीन नगर, कुछ वर्ष पहले सिंधमें इसकी खुदाई शुरू हुई है।

पृष्ठ १००

वारी — पानी
वारिया – मोट चलाते हुए कुएँके जगत पर मोटको पकड़नेवाला आदमी
अनुरोध – आग्रह
कोलिया – सिंचाईके समय बैलोंको हांकनेवाला
ढाढ़ी – एक प्रकारके मुसलमान गवैये
स्वरलहरी – संगीतके स्वरकी लहर
प्रवाहित होना – बहना
तानपूरा – तंबूरा
घुमक्कड़ – बहुत घूमनेवाला
हालरा लोरी – बच्चोंको सुलानेके लिये गाया जाता एक प्रकारका गीत
विजय-पताका फहराना – जीतकी झंडी हिलाना, जीत प्रदर्शित करना
विशालता – बड़प्पन
बहुमुखी – विविध प्रकारकी
प्रतिभा – असाधारण शक्ति
प्रतीक – चिन्ह, निशान

प्रखरता – वेदह कठोरता, पैनापन
सांत्वना – तसल्ली, धीरज
साधन – उपकरण, सामान
सीमित – कम, सीमामें
अनथक – खूब, जो न थके
नवान्न – नया अन्न

पृष्ठ १०१

आवश्यकता – जरूरत
दूजी – दूसरी वात
वाखरी – कोठा, जहाँ पशु रखे जाते हैं
वाजर हन्दा – वाजरेके
दहीमें ओलणा – दहीमें चूरा हुआ, भीगा हुआ
इतरा – इतना
करतार – परमात्मा
फेर नहीं वोलणा – फिर कुछ नहीं कहना
म्हारा – मेरे
म्हाने – हमको
दीयो – देना
आथुणो – पश्चिमकी ओरवाला
नाड़ी – तलैया
छोरो – पुत्र
पाड़ी – भैंसकी वच्ची
छाली – वकरी
लरड़ी – भेड़
एक वणांला वरड़ी – उनकी ऊनसे एक वरड़ी (कम्वल) वुनेंगे

हलियो – हल
हाल दीज्यो ठाडी – मजवूत हल (हलके लोहेका फाल) देना

पृष्ठ १०२

घणू पड़ैलो – वहुत अधिक पड़ेगा
सी – जाड़ा, सर्दी
मोटी मोटी – मूल, मुख्य
अभाव – कमी
उल्लासका गान – खुशीका संगीत
व्यंग कसना – ताना देना, चुभती वात कहना
कोन्यां थारे सारे – (नहीं हैं तेरे सहारे) तेरे सहारे नहीं हैं

पृष्ठ १०३

म्हें – हम
थारे – तेरे
टापरी – झोंपड़ी
जाटनी – जाटकी स्त्री, किसानकी औरत
कृषि-गीत् – खेतीके गीत
संवोधन – पुकारना
चिर-परिचित – सदासे पहचाने हुए
मेहा – मेह, वर्षा
वागड़ – नदी-किनारेकी ऊँची ज़मीन, वागर
खादड़ – नीची ज़मीन

पृष्ठ १०४

अगली कड़ियोंमें–आगेकी लाइनोंमें
हाली – हलवाहा, हल चलानेवाला

छाक – दोपहरका भोजन

पृष्ठ १०५

गजको – गजभर लम्बा

लाड़ो–प्रेमका संबोधन, लाड़ली बेटी

मचक उठाओ – ज़ोर लगाकर, झटककर उठाओ

झाझी – भारी

टीवा – रेतका टीला

टीवड़ी – रेतका छोटा टीला

गंडासी – घास काटनेका हथियार

पूले – घासके भारे

सरकण्डे – सरपतकी जातिका एक पौधा

तिरणी – तृणोंको बाँधना, तिरनी, डोरी

पाल – पत्तोंका छावन

अटारी – घरके ऊपरकी कोठरी, अट्टालिका

पृष्ठ १०६

मेडी – ऊपरका कोठा

खोड़ो मिरगलो – लंगड़ा मृग

डेर – ढेर

खीचड़ो – खिचड़ी

चोखो – अच्छा

पृष्ठ १०७

विसाहो – खरीदो

दोरो – कठिन

पिछवा – पश्चिम दिशाको जानेवाली हवा

चालणो – चलना

वास्तविक — सच्चा

सिर पर चढ़कर बोलता है – प्रभाव बहुत मार्मिक होता है, असर अकसीर होता है

मूल रूपमें – अपरिवर्तित रूपमें याने किसानके मुँहसे ही सुननेमें

पगडंडी – तंग, टेढ़ामेढ़ा रास्ता

१५. चचा छक्कनने सबके लिये केले खरीदे

पृष्ठ १०९

वाक़या – घटना

बयान करना – कहना

हरगिज़ – कभी नहीं, किसी प्रकार भी नहीं

ग़रज़ – इच्छा, अभिप्राय

प्रकृतिके जिस अंग पर प्रकाश पड़ता है – आदतके जिस पहलू पर रोशनी पड़ती है

स्थायी – क़ायम, टिकाऊ

निर्धारित करना – बनाना

नज़रसे गुज़रा – देखनेमें आया

ईमानकी पूछिये तो – धर्मसे पूछिये तो, सच पूछिये तो

विपरीत – उल्टा, विरुद्ध

बहुतायतसे – अधिकतासे

अनुपस्थित – ग़ैरहाज़िर

गंडेरियाँ–गन्नेके छिले हुए छोटे टुकड़े

चिलग़ोज़े – एक प्रकारका मेवा
इत्तफ़ाक़से – दैवयोगसे, संयोगसे
प्रसूतिका बुख़ार – जच्चाको आने-वाला बुख़ार
बीमार-पुरसीके लिये – बीमारका हाल पूछने, उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करनेके लिये

पृष्ठ ११०

बदौलत – कारण
बहलाना – खुश करना
अक्सर – कभी कभी
ऐन – ठीक
मचलना – हठ करना
हवाला देना – उदाहरण देना
अरदलीमें – ख़िदमतमें, सेवामें
मेटिनी शो – दिनमें होनेवाला सिनेमाका खेल
अनुमति – छुट्टी, आज्ञा
मसरूफ़ियात – व्यस्तता, अधिक कामकाज
क्रियाशील बुद्धि – काम करनेकी सूझ
नैचा – नली
व्यक्तिगत निगरानी – खुदकी देखरेखमें

पृष्ठ १११

बावरचीखाना – रसोईघर
बुद्धिमत्ता – बुद्धिमानी, चतुरता
कश – दम या फूंक
अलबत्ता – बेशक, लेकिन
कशमकश – खींचातानी

पृष्ठ ११२

नीयतमें खोट आना – मनमें बुराई आना
असमंजस – दुविधा
कतराना – जी चुराना
आँखें फाड़कर घूरना – आँखें निकालकर देखना
दिल कड़ा करके – हिम्मत करके
युक्तिपूर्ण – संगत, उचित
आसरा – सहारा
ड्योढ़ी – दरवाज़ेके पासका हिस्सा
पट – किवाड़

पृष्ठ ११३

तल्लीन – मग्न, डूबे हुए
नस नससे वाकिफ़ होना – अच्छी तरहसे पहचानना
मुनासिब – उचित
फ़ी आदमी – प्रति व्यक्ति, हर एक आदमीके हिसाबसे
सदा – आवाज़, पुकार
चित्तियाँ – छोटे दाग़
रुख़ करना – मुड़ना, मुख़ातिब होना
हिफ़ाज़त – सावधानी

पृष्ठ ११४

लाजवाब – बेजोड़

नुस्खा – युक्ति, तरकीब
गिरहमें बाँध रखना – गाँठ बाँधना
तू आप देखियो – तू स्वयं देखना
एहतियात – हिफ़ाजत, सावधानी
उँकड़ू – घुटने मोड़कर बैठनेकी एक रीत
पैंतरा बदलना – स्थिति बदलना
झपाक – जल्दी
लुत्फ़ – आनन्द
हर्र लगे न फिटकरी, रंग चोखा आये – खर्च कुछ न हो और काम अच्छा बने
कायापलट होना – कुछका कुछ रूप हो जाना

पृष्ठ ११५

साझा – हिस्सा, भाग
शरीक – शामिल
स्वार्थी – खुदगरज
अनुरोध – प्रार्थना
करामत – चमत्कार, जादू

पृष्ठ ११६

कसैला – एक प्रकारका बुरा स्वाद
मितली – क़ै या उलटी
पित्त – आयुर्वेदके अनुसार कफ, वात और पित्त इन तीन पदार्थोंमें से एक; पीला पदार्थ
अतिरिक्त – अलावा
अंश – हिस्सा
अकारथ – व्यर्थ
कैफ़ियत – हाल, समाचार
कभी-कदास – कभी कभी
बीसियों मर्तबा – कई बार, कई दफ़ा

पृष्ठ ११७

तकल्लुफ़ – आडम्बर, दिखावा
बेतकल्लुफ़ी – आडम्बर रहित बर्ताव, खुलावट
"ऐ जौक़ . . . नहीं करते" – जौक़का कहना है कि आडम्बर में कष्ट ही कष्ट हैं। वे लोग सुखी हैं जो व्यर्थका दिखावा नहीं करते।
सुभान-अल्लाह – एक प्रकारका आश्चर्यजनक संबोधन
तर माल – सुस्वादु भोजन

पृष्ठ ११८

गरिष्ठ चीजें – देरमें पचनेवाली वस्तुएँ
बेमौक़ा – अनुचित अवसर पर
बदहज़मी – अजीर्ण, अपच
नियामत – स्वादिष्ट भोजन, दुर्लभ पदार्थ
खाक भी बाक़ी न रहेगा – सब कुछ नष्ट हो जायगा
ठिकाने लगाना – ठिकाने लगाना
मजबूरीको – लाचारीसे

१६. हिन्दूकुशकी सैर

पृष्ठ ११९

तोंद छाँटने – पेटकी मोटाई कम करने
आवा-जाई – आना जाना
थोप देना – लगाना, मत्थे मढ़ना
परिवर्तनहीन – जिसमें फेरफार न हो, नीरस
शिमला-मसूरी – उत्तर हिन्दके हवाख़ोरीके स्थान
रिस्तोराँ – होटल
मनवहलावका सामान – मनको प्रसन्न करनेवाली चीजें
वातावरण – वायुमंडल
तलवा – पैरके नीचेका हिस्सा, पगतली
महसूस करना – अनुभव करना
ख़ामोशी – शान्ति
रूपरेखा – आकृति, नक़शा
हेरा-फेरी – व्यर्थका घूमना

पृष्ठ १२०

हरकत – गति
अचलता – स्थिरता
विचरना – घूमना
सिमेटकर – इकट्ठी कर
दामन – पल्ला, छोर
धनीधोरी–समृद्ध, धनवान, मालिक
दूरकी कौड़ी लाना – अद्भुत या बड़ा काम करना
पड़ताल – जाँच, परीक्षा
घाटी – पर्वतके बीचका सँकरा मार्ग, दर्रा

पृष्ठ १२१

अंधड़ – आँधी, तूफ़ान
लापता – ग़ायब
प्राचीर – दीवार, परकोटा
अभेद्य – जिसे भेदना मुश्किल हो
आह्वानको स्वीकारना – आमंत्रण का स्वीकार करना
वादी – घाटी
ख़ान अब्दुल ग़फ्फ़ारख़ाँ – पठानोंके नेता, ख़ुदाई ख़िदमतगार जिन्होंने भारतकी आज़ादीकी लड़ाईमें भारी हिस्सा लिया
धूलिधूसरित – धूलसे भरा
आजाद क़बीला – आज़ाद पठानों-का समूह
विपरीत – ख़िलाफ़, उल्टा
इलाक़ा – प्रदेश
फ़क़ीर इप्पी – पठानोंका नेता जो कि फ़क़ीर है
धूनी रमाना – मस्त पड़े रहना
वहाबी – एक फिरका, जाति

पृष्ठ १२२

तरलता – प्रवाही, चंचलता
लड़ाका – लड़नेवाला
आनवान – मान-मर्यादा, शान-शौक़त

सरसब्ज़ – हराभरा
पोलिटिकल एजेण्ट – राजदूत
परवाना – आज्ञापत्र
तैनात – उपस्थित, हाज़िर
वेतन – तनख्वाह
संतरी – सिपाही
विगड़े दिल – हरएकसे उलझने-
वाला, मनचला, मस्त
चाँदमारीका निशाना – गोली
चलानेके अभ्यासका लक्ष्य
गल्ला – रेवड़, झुंड

पृष्ठ १२३

सौंदर्यकी कांति – सुन्दरताकी छटा,
शोभा
लालिमा – लाली, लाल रंग
वोझिल – भारी, दवी हुई
अल्हड़पन – मस्ती
सेव और नाशपाती – फल विशेष
दोतर्फ़ा – दोनों ओर
सूरमा – वहादुर
टेक – धुन, गानेकी पहली पंक्ति
जो वार वार वोली जाती है
दौर – चक्कर
दुंबा – एक प्रकारका मेंढा जिसकी
दुम चक्कीके पाटकी तरह
गोल और भरी होती है
टेढ़ा – कठिन, मुश्किल
दुर्गम – जिसे पार करना कठिन हो
कल्पना मात्रसे – सोचने ही से
उत्साह – उमंग, स्फूर्ति
गुनगुनाना – धीरे धीरे गाना
गलवहियाँ – आलिंगन, गले मिलना
सशंक दृष्टिसे घूरना – शककी
नज़रसे देखना

पृष्ठ १२४

तेवर – भौंह, क्रोधभरी नज़र
हिममंडित पर्वतश्रेणी – वर्फ़से सजी
हुई पर्वतमाला
चुस्त और चालाक – होशियार
अंजर-पंजर – शरीरका ढाँचा
जवाव देना – खत्म होना, थकना
डगर – मार्ग
रोग पालना – आफ़त मोल लेना
भरमार – अधिकता, वहुतायत
आदिम – पहलेका
मेहतर – चितरालके राजा
संमिश्रण – मेल, मिलावट
पुट – मेल

पृष्ठ १२५

सरोकार – संबंध
निर्वासन – देशनिकाला
खदेड़ देना – भगा देना
'समुद्रपार' का भत्ता – समुद्र पार
जानेका अधिक (भत्ता) खर्च
निजका – अपना, खुदका
रक़वा – क्षेत्रफल

लगान व चुंगी – महसूल और शहरमें आनेवाले वाहरी माल पर लगनेवाला टैक्स

टामकटोइयाँ मारते फिरना – व्यर्थ मारे मारे फिरना

पृष्ठ १२६

समाविस्थली – क़ब्रस्तान

प्रशांत – धीर

कोहासा – कुहरा

हिज़हाईनेस – राजा

पछवाहे – पश्चिममें

अवकाश – फ़ुर्सत

सिलसिला – क्रम, कतार

ले-देकर – कठिनाईसे

पृष्ठ १२७

गोरे-चट्टे – गौर वर्णके

नामलेवा – नामस्मरण करनेवाला, वारिस

युनानी – ग्रीस देशके लोग

रस-वस रहना – अच्छा जीवन वसर करना, वसना

वाणिज्य-पथ – व्यापारका मार्ग

अफ़वाह – झूठी ख़वर

निराशाका मुंह देखना – असफल होना

आर्मेनियन – आर्मेनियाका वतनी (आर्मेनिया — एशियायी रूसका एक स्वतंत्र राज्य, काले और कास्पिनियन समुद्रके वीचका प्रदेश)

झाँसा – धोखाधड़ी, चकमा

सिरफुटौवल – झगड़ा, सिर फोड़ना

नरमेघ – एक प्रकारका यज्ञ जिसमें प्राचीन कालमें मनुष्यके मांसकी आहुति दी जाती थी

पृष्ठ १२८

चलचलावका ज़माना – अंतिम समय

पर्वतश्रेणी – पहाड़की चोटी

इरादा – इच्छा

चटियल – जिसमें पेड़ पौवे न हों

यातायात – आमद-रफ़्त, आना-जाना

स्तर – थर, तह

रास्ता नापना – मार्ग तय करना

लगातार चलाईके वाद – निरंतर चलते रहने पर

साँस फूलना – साँस चढ़ना, दम भरना

दूभर – मुश्किल, कठिन

शरावोर – लथपथ, तरवतर, ख़ूव भीगा हुआ

जवाव दे चुकना – थक जाना

रजकण – ज़र्रा, मिट्टीका कण

दुग्ध-श्वेत – दूध-सा सफ़ेद

वेद मजनूं – एक पेड़का नाम

वलैयाँ लेना – मंगल कामना करते हुए प्यार करना

पृष्ठ १२९

पोर-पोर – अंग अंग

जनपद – देश, वस्ती, गाँव

भौतिक – पार्थिव, पृथ्वीसे संबंध रखनेवाली

संपत्ति – धन, माल

सुडौल – सुन्दर आकारवाला

लवादा – चोगा

टखना – एड़ीके ऊपर निकली हुई हड्डीकी गाँठ

फ़िरऔनकी समाधियोंमें – मिश्रके राजवंश (फ़िरऔन) की क़ब्रम

विशाल काय – बहुत बड़ा और लंबा चौड़ा

मर्मर ध्वनि – गुंजन, मर्मर शब्द

सुषमा – सौंदर्य, शोभा

दुभाषिया – दो भाषा-भाषियोंको समझानेवाला मध्यस्थ व्यक्ति

पथप्रदर्शक – रास्ता बतानेवाला, गाइड

कोरस – वृंद-संगीत, साथ मिलकर गाया जानेवाला गीत

पृष्ठ १३०

बहार – वसंत

निवटारा – फ़ैसला

मुठभेड़ – टक्कर, सामना, लड़ाई

सानी – बराबरीका

पेंग बढ़ाना – ज़ोरसे झूलना

प्रलोभन – लालच

झबरेदार – बहुत लम्बे बिखरे बालवाला

कठमुल्ला – बनावटी साधु

पृष्ठ १३१

कैंप-बेड – मुसाफ़िरीमें साथ होने वाला बिस्तर

नज़ारा – दृश्य

अलाव – तापनेके लिये जलाई हुई आग

कमची – पतली लचीली टहनी, पतली पट्टी

प्रसव – बच्चा जननेकी क्रिया

मासिक धर्म – रजोधर्म

दिनचर्या – प्रतिदिनका काम

मनभाते खाजे – मन पसंद खाना

पृष्ठ १३२

सरंजाम – सामग्री, साज़सामान

कुंदा – लकड़ीका मोटा और बिना चिरा हुआ टुकड़ा

हिमाच्छादित – बर्फ़से ढँका हुआ

शृंग – शिखर, चोटी

हँसली – गलेमें पहननेका एक गहना

अर्धचंद्र – आधा चाँद

बिछुआ – पैरकी उँगलियोंमें पहननेका एक आभूषण

झनकना – बजना

टिमटिमाना – मंद प्रकाशसे जलना

भौंचक्के रह जाना – दंग रह जाना, आश्चर्यचकित होना

तिलमिलाना – चौंधियाना

समाँ – वातावरण
नूपुर – घुंघरू
हौलेसे – धीरेसे
इतराना–घमंड या अभिमान करना
पोलका – एक विशेष नाचका नाम
चहेती – प्यारी
झाइंसे – गंभीर ध्वनिसे
लपा-छपी – तलवारोंके चलनेका शब्द

पृष्ठ १३३

धेवती – लड़कीकी लड़की
इठलाना – ठसक दिखाना
वल खाना – लचकना, झुकना
तीखी चितवनसे कतराकर – तेज नज़रसे वचकर
चुहल करना – हँसी या मनोरंजन करना
पौ फटते ही – प्रातःकाल होते ही
उपले थोपना – गोवर जमाना

पृष्ठ १३४

आदमखोर – मनुष्य-भक्षी, आदमीको खा जानेवाला
दिव्य भूमि – अच्छी सुन्दर ज़मीन
मन मारे वैठे हैं – अनमनेसे, उदास वैठे हैं
चटकना – पूरी तरह फैलना
चकोरका विलाप – चकोरका रुदन, रोना
नसीव – भाग्य
आदिम अवस्था –प्रारंभिक, शुरूकी हालत
अलविदा – रुखसत, सदाके लिये जुदाई, विदा

पद्य-विभाग

१. सूर संग्रामको देख भागै नहीं

पृष्ठ १३८

सूर – शूरवीर, वहादुर
संग्राम – लड़ाई
सोई – वही
जूझना – लड़ना
मंडा घमसान –घोर युद्ध शुरू हुआ
खेत – क्षेत्र
काम औ . . . खेतमांही – मनमें (अंतःक्षेत्रमें) वसे हुए काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह और मत्सर इन षड्रिपुओंसे घनघोर युद्ध करना है
सील – चरित्र
साँच – सत्य
संतोष – सव्र

साही – साथी, सहायक

नाम समसेर – रामनामकी तलवार

सील औ . . . . . खूब बाजै – जहाँ शील, सत्य और संतोष आदि सद्गुण सहायक हो गये हैं वहाँ मनके विकारों पर (षड्रिपुओं पर) राम-नामकी तलवार खूब चलती है।

जूझि है सूरमा – बहादुर ही युद्ध करेगा

कायराँ भीड़ – कायरोंकी भीड़

तुरत भाजै – तुरंत भागे, फ़ौरन् भागती है

२. मन न रंगाये, रंगाये जोगी कपरा

कपरा – कपड़ा

आसन मारि – योगासन लगाकर, जमकर

पथरा – पत्थर

नाम छाँड़ि पूजन लागे पथरा – रामनामको छोड़कर पत्थरकी मूर्तिको पूजने लगे

कनवा – कान

फड़ाय – चिराकर

बढ़ौलें – बढ़ा लिया

जटवा – जटा, सिरके लंबे बाल

होइ गैल – हो गये

दाढ़ी बढ़ाय जोगी होइ गैल बकरा – दाढ़ी बढ़ाकर जोगी बकरे के जैसा (बदसूरत) हो गया; मनुष्यसे पशु बन गया

धुनियाँ रमौलें – धूनी रमा ली

काम – वासना, इच्छा

जराय – जलाकर

हिजरा – नपुंसक

काम जराय . . . हिजरा – कामको जलाकर जोगी नपुंसक बन गया। जोगियोंसे आशा की जाती है कि वे काम (इच्छा, वासना) इत्यादिका दमन करके जितेन्द्रिय और निष्काम बनेंगे, पर मूढ़ जोगी कुबुद्धिके कारण हिजड़ा बन बैठा

लबरा – वाचाल, ज्यादा बोलने-वाला

गीता बाँचिकैं होइ गैलें लबरा – गीता पढ़कर चाहिये तो यह था कि वह आत्मज्ञानी बनता पर वाचाल हो गया, तर्क-वितर्क और शास्त्रार्थ करने लगा

जम दरवजवाँ बाँधल जैबे पकरा – (ऐसे ढोंगियोंको) पकड़कर यमके द्वार पर बाँधा जायगा

३. वृक्षनसे मत ले

पृष्ठ १३९

सूर सूर—सूरदास सूर्य हैं
ससी—चन्द्रमा
उडुगण—तारे
खद्योत—जुगनू, रातमें चमकनेवाला पतंगा
जहँ तहँ—जहाँ तहाँ, यत्र तत्र
मत—मति, शिक्षा
वाको—उसको, उस पर
सिंचत—सींचनेवाले पर
नेह—प्रेम
वृक्षनसे मत ले . . . करहिं नेह—मन! तू वृक्षोंसे शिक्षा ले। देख ये (कितने समद्रष्टा हैं कि) काटनेवाले पर क्रोध नहीं करते, न सींचनेवालेसे स्नेह करते है। इनसे सबको समान समझनेकी शिक्षा ले।
छाँह करेत—छाया करते हैं
वाहीको—उस पर
धूप सहत . . . . . फल देत—स्वयं सिर पर धूप झेलते हैं, दूसरोंको छाया करते हैं, जो उन पर पत्थर चलाता है उसीको फल देते हैं। (कितने सहिष्णु है ये! इनसे सहनशीलताका पाठ पढ़।)

पृष्ठ १४०

मनुज—मनुष्य
हरिजनकी मत ले—वृक्ष साक्षात् परोपकारी हरिजन (हरिभक्त) हैं, इनसे परोपकारकी शिक्षा ले

४. निर्बलके बल राम

सुनेरी मैंने—मैंने सुना है
साख भरना—साक्षी देना, दृष्टांत, उदाहरण अथवा गवाही देना
आड़े सँवारे काम—बिगड़े कामको बना दिया
सुनेरी मैंने . . . सँवारे काम—मने सुना है कि जिनके पास इस संसारमें कोई ज़ोर नहीं है उनका ज़ोर परमात्मा है। इस संबंधमें पुराने संतोंकी साक्षी देता हूँ। जब जब उनका काम अटका परमात्माने उसे सँवार दिया, बना दिया।
जब लग—जब तक
बरत्यो—काममें लिया
नेक सरो नहि काम—बिलकुल भी काम नहीं बना, थोड़ी भी सफलता नहीं मिली
ह्व—होकर

आये आधे नाम – इतनी जल्दी कि पूरा नाम भी न लिया जा सका। आधे नाम आना - मु० पुकारनेसे पेशतर हाजिर हो जाना।

ता दिन – उस दिन

निज धाम – अपना घर

बसन – वस्त्र

दाम – रुपया-पैसा, धन

जप बल, तप बल और बाहुबल चौथा है बल दाम – सबसे पहला बल आत्मबल, दूसरा तपोबल, तीसरा बाहुबल और चौथा धनबल

सब बल हारेको – जिसके पास कोई बल नहीं है, जो सब बल हार चुका है (उसका बल हरिनाम है)

५. रे मन मूरख जनम गँवायो

विषय सों राच्यो – विषयोंमें मस्त रहा, डूबा रहा

रे मन मूरख . . . नहिं आयो – हे मूर्ख मन तूने संसारके प्रलोभनोंमें फँसकर अपना जन्म (मानव जीवन) गँवा दिया। तू अभिमानके साथ विषयोंमें डूबा रहा, कृष्णकी शरणमें भी नहीं आया।

सेमर – सेमल, एक बड़ा पेड़ जिसे बड़े-बड़े सुन्दर और सुहावने लाल फूल लगते हैं पर फलमें केवल रुई होती है जो छूते ही उड़ जाती है।

संसार फूल सेमरको – यह संसार सेमरके फूलकी तरह लुभावना किन्तु असार है।

पहले नहीं कमायो – पहलेसे भक्ति-रूपी धनका संचय नहीं किया

सिर धुनि धुनि पछतायो – सिरको पीटकर रोया, पछताया

६. नहीं ऐसो जनम बारम्बार

पृष्ठ १४१

का – क्या

मानुसा अवतार – मानव जीवन, मनुष्य देह

बिरछ – वृक्ष, पेड़

बहुरि – फिर

डार – डाली

का जानूं कछु . . . . . जात न लागै बार – न जाने कौनसे पुण्योंके उदित होनेसे यह मनुष्य देह मिली है। इधर जीवन प्रतिक्षण बढ़ता है, उधर आयु प्रतिपल घटती है। समयको जाते देर नहीं लगती।

भौसागर – भवसागर, संसारसागर

ओखी – टेढ़ी

वेड़ा वाँधना – वहुतसी नावों या जहाजोंका समूह वनाना

भौसागर . . . उतरे पार – यह संसाररूपी समुद्र वड़ा जोरदार है। इसकी धारा वहुत टेढ़ी और विपरीत है। रामनामका वेड़ा वाँध कर ही इसके पार जल्दी उतरा जा सकता है।

चौसर – चौपड़ (एक खेल)

मँडी चोहटे – चौराहे पर विछाकर

जीत भावै हार – जीत चाहे हार

सुरत – ध्यान, प्रेम

ज्ञान – चौसर. . . भावै हार – चौराहे पर ज्ञानकी चौपड़ विछाकर प्रेम (सुरति) के सार और पासोंसे खेल रच। हार-जीतकी कोई चिंता न कर।

जीवणा दिन च्यार – चार दिनका जीना है।

७. दरसन दीज्यो

पृष्ठ १४२

दीज्यो आय – आकर देना

कलेजो – कलेजा, हृदय

जल विन . . . विन सजनी – कमल के विना जिस तरह जल (सरोवर सूना लगता है), चन्द्रमाके विना जिस तरह रात्रि (सूनी लगती है), उसी तरह तुम्हें देखे विना तुम्हारी सजनी (सूनी लगती) है।

आकुल-व्याकुल – अकुलाई हुई, व्यथित, दुःखी

विरह कलेजो खाय–विरह कलेजेको खा रहा है

रैना – रात्रि

वैना – शब्द

मुखसूं – मुँहसे

मिलकर तपन वुझाय – मिलकर जलन (विरहकी अग्नि) को शांत करो।

८. नाम महिमा

पृष्ठ १४३

तोहि – फिर भी

दशमे द्वार चढ़ावे प्राण – दशमे द्वार (ब्रह्मरंध्र) पर प्राणवायुको चढ़ानेकी एक यौगिक क्रिया — समाधि

कायापलट – कायाकल्प – देहको स्वस्थ बनानेकी यौगिक एवं आयुर्वेदिक क्रिया

रसना – जीभ

वर – उत्तम

पंचाग्नि सेवे – हठयोगकी एक यौगिक क्रिया जिसके अनुसार गरमीकी तपती दुपहरीमें अपने चारों ओर आग जला कर योगी धूपमें बैठते हैं।

गगनमंडलमें – आकाशमें, शून्यमें

करवत खाना – काशीमें जाकर एक विशेष आरे (करवत)से अपने जीवनका अंत कर देनेकी प्रथा प्राचीन समयमें थी। ऐसा माना जाता था कि ऐसा करनेसे व्यक्ति सीधा शिवलोकमें जाता है।

हिमाळे गाळे – हिमालय पर जाकर अपने शरीरको मोक्षके लिये गला डालनेकी प्रथा पुराने जमानेमें थी। पांडवोंका हिमालय पर गलने जाना प्रसिद्ध ही है।

तुला बैठ देवे जो दान – तराजूमें अपने बराबर तौलकर दान देनेकी प्रथा

९. गुरु कृपांजन पायो मेरे भाई

पृष्ठ १४४

गुरु कृपांजन – गुरुकी कृपाका अंजन (काजल) जिसके लगानेसे दृष्टि परसे मायाका परदा उठ जाता है और सारा संसार राममय दीखने लगता है

अंतर – अन्दर, मनमें

जनार्दनी भाव – सारे संसारको राममय देखनेका भाव

नीका – अच्छा

सरीखा – समान

१०, विजय-रथ

पृष्ठ १४५

प्रसंग – राम और रावण जब लड़ाईके लिये मैदानमें डट गये तो विभीषणके मनमें शंका हुई। उसने रामचन्द्रजीसे कहा कि न आपके पास पगमें जूती है, न शरीर पर कवच और न बैठनेको रथ है। आप महा-रथी रावणको कैसे जीतेंगे? इस शंकाका समाधान करनेके लिये रामचन्द्रजीने वास्तविक विजय-रथका वर्णन किया।

रथी – रथ पर सवार

विरथ – पैदल, विना रथके

अधीरा – अधीर, व्याकुल

मन भा संदेहा – मनमें सन्देह हुआ

वंदि चरन – चरणोंमें प्रणाम करके

नहिं तनु पद त्राना – शरीर और पैरके लिये रक्षण नहीं है, शरीरकी रक्षाके लिये कवच और पैरकी रक्षाके लिये जूतियाँ नहीं हैं।

केहि विधि – किस प्रकार

जितव – जीतेंगे

वीर वलवाना – वलवान वीर रावणको

कृपानिधाना – कृपाके खज़ाने, राम

स्यंदन – रथ

जेहि जय होइ सो स्यंदन आना – जिस रथकी सहायतासे विजय प्राप्त होती है वह रथ दूसरा ही है।

सौरज धीरज – शूरता और धैर्य

चाका – पहिये

घोरे – घोड़े

दम – दमन (इन्द्रियोंका)

छमा – क्षमा

रजु – रज्जु, रस्सी

पृष्ठ १४६

ईस भजन – ईश्वर-भजन

सुजाना – चतुर

विरति – वैराग्य

चर्म–चरम, अत्यधिक, वहुत ज्यादा

कृपाना – तलवार

परसु – कुल्हाड़ी, फरसा

प्रचंडा – प्रचंड, विकराल, भयंकर

वर विग्यान – उत्तम ज्ञान

कोदंडा – धनुष

अमल – निर्मल

त्रोन – तरकश

सम जम नियम – योगके तीन अंग

सिलीमुख – वाण

कवच अभेद – जिसे न तोड़ा जा सके ऐसा कवच

महा अजय . . . मति धीर – हे धीर वुद्धिवाले मित्र ! सुनो जिसके ऐसा रथ हो, वही वीर संसाररूपी अजय शत्रुको जीत सकता है।

११. केवट-प्रसंग

जासु वियोग – जिसके वियोगमें

जीहहिं कैसे – कैसे जियेंगे

वरवस – ज़वरदस्ती

सुमंत्रु – लक्ष्मण

सुरसरि तीर – गंगा किनारे

केवट – मल्लाह

न आना – नहीं लाया

अहई – है

तुम्हार मरमु मैं जाना — तुम्हारा मर्म मैं जान गया, तुम्हारा इरादा मैंने ताड़ लिया

चरन कमल-रज . . . कहइ अहई — सब इसे चरण-कमलकी रज कहते हैं पर (मुझे तो ऐसा लगता है जैसे) यह मनुष्य बनानेकी जड़ीबूटी है।

भइ नारि सुहाई — सुन्दर स्त्री बन गई (गौतम ऋषिकी पत्नी अहल्या शापवश पत्थरकी शिला बन गई थी। वही रामचंद्रजीकी चरणरज पाकर शापसे मुक्त होकर पुनः एक सुन्दर स्त्रीके रूपमें बदल गई।)

पाहन तें — पत्थरसे

तरनिउँ — नाव

मुनिघरनी — अहल्या

बाट परइ — मौक़ा पाकर

एहि प्रतिपालउँ — इससे ही सारा लालन-पालन करता हूं

कबारू — कारोबार, धंधा, कामकाज

अवसि गा चहहू — अवश्य ही जाना चाहते हैं

पदपदुम पखारन कहहू — पद-पद्मों (चरण कमलों) को धोनेकी आज्ञा दीजिये

पृष्ठ १४७

उतराई — पार उतारनेका मेहनताना, किराया

राउरि — आपकी आन

बरु तीर मारहु लखनु — चाहे लक्ष्मणजी (जो क्रोधी हैं) मुझे तीरसे मार दें

करुनाऐन — करुणा-अयन, करुणा-निधान, राम

चितइ — देखकर

तन — तरफ़, ओर

पृष्ठ १४७

तव नाव न जाई — तेरी नाव न जाय, सुरक्षित रह

केवटहि निहोरा — केवटका मुंह तकते हैं

जेहि जगु किये तिहुँ पगहुँ तें थोरा — जिन्होंने वामनके रूपमें सारे जगको तीन पगसे भी थोड़ेमें नाप लिया

पदनख — पाँवका नख

देवसरि — गंगाजी

मोहमति करषी — मोहकी ओर बुद्धि खिंच गई

रामरजायसु — रामकी आज्ञा

कठवता — लकड़ीका बर्तन

उमगि — उमंगमें आकर, प्रसन्न होकर

सिहाहीं – सराहने लगे, प्रशंसा करने लगे

पुन्यपुंज – पुण्यके ढेर

पितर पारु करि – पितरोंको भवसागरके पार करके, मोक्ष दिलाकर

मुदित – प्रसन्न

सकुचं – संकोच , हुआ (केवटको कुछ न देनेके कारण)

पियहियकी जाननिहारी – पतिके हृदयकी वात जाननेवाली

ठाढ भये – खड़े हुए

मनिमुँदरी – मणिजड़ित अँगूठी

मनु मुदित – प्रसन्न चित्तसे

मैं कहा न पावा – मैंने क्या नहीं पा लिया ? अर्थात् मुझे सव कुछ मिल गया।

मिटे दोष-दुख-दारिद-दावा – (आज मेरे) दोष, दुख और दरिद्रताकी आग शांत हो गई

आजे दीन्हि विधि वनि भलि भूरी – विधाताने आज भलीभाँति मुझे पूरी मजूरी दे दी है

अनुग्रह तोरे – आपकी कृपा है

फिरति वार – लौटते समय

जोइ देवा – आप जो कुछ देंगे

सिर धरि लेवा – सिर पर धारण करके ले लूंगा, सहर्ष ले लंगा

वहुतु कीन्ह – वहुत आग्रह किया

भगति विमल वरु देइ – विमल भक्तिका वर देकर

१२. दोहे

पृष्ठ १४८

उत्तम प्रकृति – अच्छे स्वभाववाला

का करि सकत – क्या कर सकता है

कुसंग – वुरे आदमियोंका साथ

व्यापत – फैलना, व्याप्त होना

भुजंग – नाग, साँप

ओछो – नीच, कमीना

तौ – तो

अति ही – वहुत ही ज्यादा

इतराया – घमण्ड करता है

प्यादा – शतरंजका मोहरा, पैदल चलनेवाला, छोटा आदमी

फ़रजी – शतरंजका मोहरा, वड़ा आदमी

टेढ़ा टेढ़ा जाना – आमने सामने न होना, कतराकर निकल जाना

प्यादे सों फ़रज़ी भयो टेढ़ो टेढ़ो जाय – शतरंजके खेलमें प्यादा पैदलको और फ़रज़ी वज़ीरको कहते हैं। पैदलकी चाल सीधी होती है। वज़ीर सीधा और टेढ़ा दोनों तरहसे चलता है। कभी कभी खेलमें ऐसा

समय आता है जब पैदलको वज़ीर बनानेका गौरव मिल जाता है और वह अपनी चाल छोड़कर टेढ़ी चाल चलने लगता है। कविका कहना यह है कि जब छोटा आदमी बड़ा पद पा लेता है तो इसी प्रकार इतराने लगता है।

जो तू अनखाये रहे तोसों को अनखाय — यदि तू बिना खाये (अनखाये) ही रह ले तो फिर तुझसे कोई भी नाराज न हो। संसारके सारे झगड़े पेटकी भूखके कारण ही खड़े होते हैं।

कोउ — कोई

ज्वारी — जुआरी, जुआँ खेलनेवाला

लबार — झूठा, गप्पी

पत-राखनहार — रक्षा करनेवाला

माखन चाखनहार — माखन खानेवाले श्रीकृष्ण

ह्वै — होकर

दिननको फेर — दिनका फेर, गर्दिश, बुरे दिन

नीके दिन — अच्छे दिन

बनत न लगि है बेर — कामको बनते देर नहीं लगेगी

पृष्ठ १४९

मढ़ो दमामो न बने — ढोल नहीं मढ़ा जा सकता

चाम — चमड़ा

तब लगि — तब तक

पयान — प्रयाण, कूच

दाम — बन

बसि — रह कर

लगत कलंक न काहि — किसको कलंक नहीं लगता

कलारी — कलालकी स्त्री, शराब बेचनेवाली

ताहि — उसको

मद — शराब

पानी राखिये — आबरू बनाये रखिये

ऊबरना — फिरसे अच्छा होना

सून — सूना

चून — चूना

मानुष — आदमी

मनहि लगाईके — मन लगाकर, प्रेम करके

देखि लेहु किन कोय — कोई भी क्यों न देख ले

बस करिबो — अधीन करना

याचकता गहे — माँगनेका पेशा अख्तियार करनेसे, माँगनेसे

छोट ह्वै जात — छोटे हो जाते हैं

हू को भयो – ही का हो गया

बावन अंगुर गात – बावन उँगली का शरीर। भगवानका वह रूप जिसे धारण कर वे बलिसे ढाई क़दम भूमि माँगने गये थे

वे नर मर चुके – वे आदमी अपनी आबरू, प्रतिष्ठा गँवाकर मरे के समान हो गये

मुए – मर गये

उनते पहिले – उनसे पेशतर; उनसे पहिले

निकसत नाहिं – 'ना' निकलती है

१३. श्याम रंगीले साँवरे

पृष्ठ १५०

बरद – बिरुद, यश

मेहर – मेहरबानी

साँइया – ईश्वर

मदगंजन – अभिमानका नाश

अंतर ताप – हृदयकी जलन

साता – शांति

शरणागत त्राता – शरणमें आये हुएकी रक्षा करनेवाले

वृद्धि हान – फ़ायदा-नुक़सान

तुमरे हथ्थ वाज़ी – वाजी तुम्हारे हाथ है

रहो नैन हजूर – हे स्वामी! आप मेरी आँखोंमें रहिये

१४. जाकु रंग न लाग्यो रामको

जाकु रंग न लाग्यो – जिसको (ईश्वर-प्रेमका) रंग न लगा

पामर – नीच, पापी

मूढ़ – मूर्ख

गमार – गँवार, मूर्ख

ठरनेको ठार – स्थित होनेका स्थान, ठहरनेका ठिकाना

पृष्ठ १५१

फोगट – मुफ़्त, व्यर्थ, निस्सार

फ़ना हो जायगा – मिट जायगा

संजोग – संयोग

कायां – शरीर

कुमती – खराब मति, दुर्बुद्धि

कदली प्रसवत लूमको – केलेका वृक्ष लूम (गुच्छे) को जन्म देता है

अधोमुख वहाय – नीचे झुकने लगती है

मोह मदीरापान – मोहकी दारूका सेवन

सुधके सान – होशहवास

अनंत विकार – अनेकों विकार

मुआ – मर गया

में मेरा – में हूँ, यह मेरा है

धारत देह अपार – अनेकों जन्म लेता है

दुर्गुण छांड दे – बुरी आदतोंको छोड़ दे

१५. मगर है शौक़ मिलनेका

पृष्ठ १५१

लौ लगाता जा – प्रेममें मस्त रह, तल्लीन होता जा

खुदनुमाई – अभिमान, घमंड

इश्क़ – प्रेम

हुज्र ए दिलको – कोठरी

दुईकी – द्वैत, दो

मुसल्ला – वह दरी या कपड़ा जिस पर नमाज़ पढ़ी जाती है

दुईकी धूल–अद्वैतवादका पालन कर द्वैतकी धूल उड़ा दे। आत्मा और परमात्मा अलग-अलग हैं इस विचारको छोड़ दे

तसबी – तस्बीह, सौ दानोंकी बनी माला

दस्त – हाथ

फ़रिश्ते – देव-दूत

रोज़ा – व्रत

सिजदा – दंडवत, माथा टेकना

वज़ूका कूज़ा – नमाजसे पहले हाथ पैर धोनेका मिट्टीका मटका

शराबे-शौक़ – प्रेमकी मदिरा

ग़लत – असावधानी, भूल

खुदीको – 'मैं हूं' इस अहंभावको

पृष्ठ १५२

मुल्ला – धर्मगुरु

बम्मन – ब्राह्मण

शाह कलंदर – ऊँचे दरजेका साधु

अनलहक़ – बस 'मैं ही ब्रह्म हू'

हक़ – सचाई

मयखाना – शराबकी दुकान, मधुशाला

१६. एक तिनका

तिनका – घासका टुकड़ा

ऐंठना – अकड़ना, घमंड करना

मुंडेर – छज्जा, मकानके आगेका भाग

झिझक उठना – घबरा जाना, डर जाना

बेचैन – परेशान

मूठ देना –कपड़ेकी मुट्ठी बांध कर आंख पर लगाना

ऐंठ दबे पाँवों भगी – घमंड जाता रहा। दबे पाँव भगना, याने चुपचाप खिसकना

पृष्ठ १५३

किसी ढबसे – किसी प्रकार

ताने देना – कटाक्ष करना, चुभती बात कहना

१७. एक बूंद

बूंद – पानीका क़तरा

कढ़ना – निकलना, बाहर आना

भाग्यमें बदा होना – भाग्यमें लिखा होना

धूलमें मिलना – नष्ट हो जाना
अंगारे – धधकती आग
चू पड़ना – टपक पड़ना
कुछ ऐसी हवा वह गई – कुछ ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ
अनमनी – उदास
बूंद लौं – बूंदकी तरह
देता है कर – कर देता है, वना देता है

१८. निशा-निमंत्रण

पृष्ठ १५४

ढलता है – व्यतीत होता है
प्रत्याशा – आशा, उम्मीद
नीड़ – घोंसला
विकल – व्याकुल, वेचैन

पृष्ठ १५५

किसके हित – किसके लिये
यह प्रश्न. . . पदको – पैरोंको यह विचार भारी वना देता है
भरता उरमें विह्वलता है – हृदयमें व्याकुलता भर देता है

१९. आशे !

आशे – आशा (संवोधन)
दुःख अनन्त – ऐसा दुःख जिसका कभी अन्त न हो
निराशा. . . अंत – निराशाके पत-झड़का अंत हो जाता है और आशारूपी वसंत छा जाता है
पुनः – फिरसे
दमक उठना – चमकने लगना
म्लान – खिन्न, उदास
हिम्मत हार वैठना – हताश हो जाना, निराश होना
कमर कसना – हिम्मत करना
प्रस्थान – कूच, चलना
आधार – सहारा
सरस – रसमय, सुखदायक
जीवन निस्सार – सारहीन जीवन

पृष्ठ १५६

संचार होना – उमड़ना
पार – किनारा
पतवार – नावका सुकान
खेना – नाव चलाना
जलयान – नाव

२०. नया शिवाला

शिवाला – शिवालय, मंदिर
गर – यदि
सनमक़दा – वुतखाना, मंदिर
वुत – मूर्ति

पृष्ठ १५७

जंगोजदल – लड़ना-झगड़ना

वाअज़ – धर्मोपदेशक
देरोहरम (देर और हरम) मंदिर और मस्जिद
वाज़ – उपदेश
तिरे – तेरे
फ़साने – क़िस्से-कहानियाँ
चमन – बाग़
बूटा – पौधा
विसभरी – ज़हरसे भरी
खाके वतन – वतनकी खाक
ज़र्रा – कण
ग़ैरियत – परायापन
विछड़ोंको – अलग हुओंको
नक़्शे दुई – भिन्नताकी निशानी
मुद्दतसे – काफ़ी समयसे
जीकी वस्ती – दिलकी दुनिया
अनूप – वेजोड़, जिसकी उपमा न हो
हरद्वारे दिल – दिलके हरिद्वार (पवित्र स्थान)में
छव – छवि, शोभा
मुरादें – आकांक्षाएँ, इच्छाएँ
मोहनी – लुभावनी, लुभाने या मोहनेवाली
सनम – प्रिया, माशूक़
तराने – गीत
रीत – परिपाटी, क़ायदा
आशिक़ – प्रेमी
निसार करना – न्योछावर करना

२१. सुखमें याद भले कर उसकी

पृष्ठ १५८

अपनी ताक़त विन अजमाये–अपनी शक्तिकी परीक्षा किये विना
है प्रभुका अपना अपमान – प्रभुका और हमारा दोनोंका अपमान है
विना जगाये. . . सच मान – आत्मवल, तपवल और शक्तिशाली वाहुवलको जगाये विना भगवान नहीं मिलेंगे। हे मनुष्य ! तू इसे सच जान ले।
सुमिरन कर नर अमर-शक्ति निज– अपनी अमर शक्तिको याद करके, यह समझकर कि तू भी उसी परमात्माका एक अंश है, तू भी महान है।

२२. तत्त्वसार तो विरले जाने

पृष्ठ १५९

विरला – इक्का-दुक्का, वहुतोंमें से एक-आध
तत्त्वसार –मूल वात, तत्त्वका सार, निचोड़, मर्म
धर्म नाम पर . . . दुनियाँ माने– धर्मके नाम पर क्रूर, कठोर वनकर अपना मतलव वनाना ही दुनिया जानती है।

दीन – ग़रीब

द्विज – ब्राह्मण

निर्भयता – निडरता

पीर – पीड़ा

भू पर – पृथ्वी पर

२३. बंजारा

पृष्ठ १६०

बंजारा – वह व्यक्ति जो बैल पर सामान लादकर देश-विदेशोंमें बेचता फिरता है।

डगर – रास्ता

एक आन – प्रति पल

नई नवेली – नई और जवान

भीगी मस्त हवायें – रससे भरे मस्त पवनके झोंके

पृष्ठ १६१

परिन्दा – पक्षी

बगूला – चक्करकी तरह घूमती वायु

बाँह खोले – हाथ फैलाये, आतुर, लालायित

२४. दर्दकी दवा क्या है?

पृष्ठ १६२

दिले नादाँ – नादान दिल

मुश्ताक़ – इच्छुक, ख्वाहिशमंद

बेज़ार – परेशान, दुःखी

या इलाही – हे परमात्मा

माजरा – घटना

मुद्दा – उद्देश्य, अभिप्राय

काश – अच्छा होता

हंगामा – लड़ाई-झगड़ा

परी चेहरे – सुन्दर

ग़मज़ा – प्रेमिकाके हावभाव, नखरे

इश्वा – अदा, नाज़-नखरे

ओ – और

अदा – ढंग, तर्ज़

पृष्ठ १६३

वफ़ा – वफ़ादारी

निसार – निछावर

दरवेश – फ़क़ीर, साधु

सदा – आवाज़

२५. रे मन आज परीक्षा तेरी

पृष्ठ १६४

बात बिगड़ना – इज्ज़त कम होना

निग्रह – संयम, अपने पर नियंत्रण, क़ाबू

अभाव – कमी, चीज़का न होना

अब तक जो . . . लाभ न यह था – अब तक मेरा संयम (इन्द्रियों पर क़ाबू) मजबूरीके कारण था, क्योंकि वे (बुद्ध) यहाँ नहीं थे तो उनके दर्शनोंका लोभ भी नहीं था।

स्वागत-भेरी – स्वागतकी दुंदुभी, ढोल

दो पग आगे ही वह घन है – दो क़दमं पर ही भगवान वुद्ध हैं

अवलम्बित –आधारित, टिका हुआ

पर क्या . . . जन है – पर क्या मुझे (दो क़दमके आगे जीवन-धन तक पहुँचनेका) मार्ग मिलता है?

अँधेरी – अंधकार

पीठ फेरना – विरक्त हो जाना, उदासीन होना

दरस परस निःश्रेयस पावें–(दरस) दर्शन करके, (परस) छूकर, सांनिध्य प्राप्त करके सब (निःश्रेयस पावें) मोक्षके भागी वनें

उद्धारक – उद्धार करनेवाले

चेरी – दासी

२६. चित्रकूट

पृष्ठ १६५

चित्रकूट – एक प्रसिद्ध रमणीय पर्वत जहाँ वनवासके समय राम और सीताने निवास किया था

सिद्ध-शिलाओंके आधार – जिन शिलाओं पर बैठकर योगियोंने सिद्धि प्राप्त की है उनका तू आधार है

आड़ — आश्रय, ओट

विहार करना – आमोद-प्रमोद करना, विचरना

गुंजार – गूँज, ज़ोरकी आवाज़

पृष्ठ १६६

आतप सृष्टि – धूप

नभकी वृष्टि – आकाशकी वर्षा

शीतल दृष्टि – ठंडी नज़र

ऋतुपति – वसंत

दुकूल – दुपट्टा, कपड़ा, वस्त्र

निर्झरका डाल दुकूल – झरनोंका दुपट्टा पहनकर

कंद-मूल-फल-फूल – पहाड़ पर पैदा होनेवाली वनस्पतियाँ, शाक-भाजी तथा पत्र-पुष्प

स्वागतार्थ – स्वागतके लिये

अनुकूल – उचित, लायक़

दरियोंके द्वार – गुफाओंके दरवाजे

उपल – पत्थर

अंतस्तल – आत्मा

अचल – अटल

धीर – गंभीर

समशीतोष्ण – समान शीत और उष्णतावाला

राग-रंजित – रंगोंसे सजा हुआ

विराग – वैराग्य

वन-धाम – वनका स्थान

कामद होकर आप अकाम – १. काम उत्पन्न करनेवाला होकर भी स्वयं निष्काम है; २. दूसरोंको काम देनेवाला (उपयोगमें आनेवाला) होकर भी स्वयं वदलेमें कुछ नहीं चाहता (कामनारहित) है।

शत वार – सौ वार

२७. संकेत

पृष्ठ १६७

भावार्थ : दु:खोंको भूल जाना ही सुख है। जन्म और मृत्युकी परिधिमें वँधा जीवन क्षणभंगुर है। मानव इस परिवर्तनशील संसारका एक लघु-कण है। पर उसकी कलाकृति महान है, अमर है।

विस्मृति – भूल जाना

इस ओर अथ उस ओर है इति – क्षणभंगुर जीवनके दो छोर (किनारे) हैं। इस तरफ़ (अथ) जन्म है, उस ओर (इति) मृत्यु है।

उषा – प्रात:काल

यह उषाका रंग . . . भूमिका है – जिस प्रकार उषाका रंग इन चंचल वादलोंका आधार है, उसी तरह वादलोंके सदृश उमड़ते हुए उच्छ्वास (दु:खकी लंवी साँसें) मेरे जीवनका आधार हैं।

संसृति – सृष्टि, संसार

पृष्ठ १६८

उभरना – ऊपर आना

२८. दिये तरे अँधेरा

अधभर – अधवीचमें, मध्यमें

दरियाके मत . . . राम है तेरा –तेरा लक्ष्य (राम) मझधारके तूफ़ानोंमें है, तू दरियाके किनारे (आश्रय) मत खोज़

दूजा – दूसरा

रस्तोंके तू छोड़ दे झगड़े – धर्मके विभिन्न मार्गों (रस्तों) के झगड़ोंको तू भूल जा

पाँव तले – पाँवके नीचे

मनके दुविधे आज जो हारा – मनकी दुविधामें पड़कर यदि आज (हिम्मत) हार वैठेगा

दाँव – अवसर

पृष्ठ १६९

दो-राहा – वह स्थान जहाँसे आगे जानेके दो रास्ते हो जाते हैं

सारे – चंगे, मज़बूत

डोर – रस्सी

डगमग हाला – (मन) विचलित हुआ, डगमगाया

थाह – गहराईका अंदाज़

झलकी – झलक, झाँकी

भीषन – वहुत ज़ोरकी

रुख – दिशा

जीवट – हिम्मतवाले, साहसी (संबोधन)

नुकीले – तेज़

छाले – फफोले

लीक – हद, रेखा, मर्यादा

घातमें बैठना – (हमला करनेका) इंतज़ार करना

अपने हाथ दाँव चूकना – जानबूझ कर अवसर खो देना

२९. प्रेम-संगीत

पृष्ठ १७०

दीवाना – प्रेमी, पागल

हस्ती – अस्तित्व

हम दीवानोंकी क्या हस्ती – हम पागलोंका कोई अस्तित्व नहीं है

मस्तीका आलम – उन्मत्त संसार

उल्लास – प्रसन्नता

छककर – पेट भरकर

स्वच्छंद – वेरोकटोक

नत मस्तक होना – शीश नवाना, सिर झुकाना

अभिशाप – वददुआ, शाप, मिथ्या दोषारोपण

वरदान – देवता द्वारा प्राप्त सिद्धि, दुआ

पृष्ठ १७१

अभिशाप . . . छोड़ चले – वद-दुआ होठों तक आ गई थी पर नेत्रोंसे दुआ ही हमने प्रकट की

३०. खुला आसमान

पृष्ठ १७२

खुला आसमान – आकाश साफ़ हुआ

जहान – संसार

ढोर – पशु, जानवर

भासमान – दीप्त, चमकीला, प्रकाशित

तले – नीचे

तगड़े तगड़े – मजबूत, ताक़तवर

चूनरी – साड़ी

सधे – नपेतुले

३१. क्या गाऊँ?

पृष्ठ १७३

माँ – माता (सरस्वती), वाग्देवी जो संगीत और काव्यकी धात्री है

किन्नरियाँ – किन्नर जातिकी स्त्रियाँ जो संगीतमें बड़ी प्रवीण होती हैं

पंचदशी कामिनियाँ – पंद्रह वर्षकी उम्रवाली सुन्दर स्त्रियाँ

वहाँ एक यह लेकर . . . झंकार

नवीन – (साहित्यकी), दीन वीणा पर, (भाषाकी) क्षीण तंत्री पर, (अमौलिक भावोंकी) झनकार पर क्या गाऊँ?

रुद्ध – जिसकी गति रुक गई हो

अनुराग – प्रेम

मृदु-दल सरस पराग – कोमल पत्ते और रस-युक्त पराग (पुष्प रज)

गंध-मोद-मद पीकर – प्रसन्नता रूपी सुगन्धका मद पीकर

मन्द समीर – मंद पवन

शिथिल – ढीला, मंद

अधीर – बेचैन

निर्गंध कुसुम उपहार – जिनमें खुशबू न हो ऐसे फूलोंकी भेंट

सुरभि – खुशबू

३२. चौऊँटेसे नसीहत

पृष्ठ १७४

जमाअत – जमात, मनुष्योंका समूह

ज़िल्लत – अनादर, अपमान

हरगिज़ – कभी नहीं

सलामत – क़ायम

शख़्सी बुज़ुर्गी – व्यक्तिगत बड़प्पन

शख़्सी हकूमत – व्यक्तिगत राज्य

शाख़ – टहनी

याँ – यहाँ

ज़ख़ीरा – ढेर

फ़ुतूह – फ़तह, जीत

पृष्ठ १७५

दानिश – अक्ल, समझ

हिकमत – कौशल, युक्ति

बनी नौ . . . हाजत – अपनी जमातकी ज़रूरत पूरी कर देता है

मईशत – जीविका, दैनिक भोजन

बख़्शना – देना, प्रदान करना

फ़राग़त – मुक्ति, छुटकारा

वक़्फ़ – न्योछावर करना

ग़नीमत – संग्रह किया हुआ धन

बेग़ैरती – बेशर्मी, निर्लज्जता

पास – ख़्याल

३३. काले बादल

रेखा – लकीर

जातिद्वेष – सांप्रदायिक मतभेद

विश्वक्लेश – संसारमें मचा हुआ लड़ाई-झगड़ा

नव स्वतंत्रताके प्रवेशके – नई आज़ादीके आगमनके

पृष्ठ १७६

रणभेरी – युद्धमें बजनेवाली दुंदुभी
झनक रही झिल्ली – झींगुर बोल रहा है
झिल्ली – झींगुर, एक प्रकारका कीड़ा जो बरसातमें झनझन बोलता है
केकी – मोर
केका – मोरकी बोली
दलबल साजे – फ़ौज साथ लेकर
घात – प्रहार, दाँव-पेंच
भीति – डर, भय
प्रीति प्रतीति – प्रेम और विश्वास
मनुजोचित – मनुष्यके योग्य
एका – ऐक्य, एकता

३४. ग्रामीण

पृष्ठ १७७

मर्माहत – दुःखी
व्यर्थ बहस – तर्क करना फिजूल है
दक़ियानूसी – बहुत पुराना, प्राचीन
ठहाका मारकर हँसना – ज़ोरसे हँसना
कट्टरपंथी – अंधविश्वासी
फाँसीका फंदा – नेकटाई (व्यंगमें)
क्षुब्ध – अधीर
नागर – चतुर, नगरमें रहनेवाला

पृष्ठ १७८

उथले पानीके डाबर – छिछले पानीका गड्ढा
गँवई – गाँवका
भूसा – चारा, यहाँ वेशभूषा
पिंजर – पिंजरा, ढाँचा
संयत – संयमपूर्ण, गंभीर
मुखर पश्चिमी तोता – बोलनेवाला पश्चिमी तोता
दुराग्रह – हठ, अनुचित माँग
तर्क – वादविवाद
वाद – मान्यता
थोथे – खोखले, बनावटी
मृगतृष्णा – व्यर्थकी लालसा
त्रिशंकु सदृश लटके हैं – त्रिशंकु सूर्यवंशी राजा थे, जिन्होंने सशरीर स्वर्ग जानेके इरादेसे यज्ञ किया था, पर देवताओंके विरोधके कारण मध्य आकाशमें ही रोक दिये गये। कविका अभिप्राय बिना सहारे अधबीचमें लटके रहनेसे है।

३५. विप्लव-गान

पृष्ठ १७९

उथल-पुथल मच जाये – रद्दोबदल हो जाये
हिलोर – तरंग, लहर, झोंका
प्राणोंके लाले पड़ जायें – प्राण बचाना मुश्किल हो जाय

त्राहि-त्राहि रव – बचाओ बचाओ का करुण शब्द

सत्यानाश – बरबादी

धुआँधार – बहुत ज़्यादा धुआँ

जलद – बादल

भस्मसाद् भूधर हो जायें – पहाड़ जलकर भस्म हो जायें

सदसद् भाव – अच्छे-बुरे भाव

वक्षस्थल – छाती, सीना

पय – दूध

पृष्ठ १८०

अमृतमय पय कालकूट हो जाये – अमृतके समान दूध कालकूट विष बन जाये

शोणित – रक्त, लहू

गतानुगति विचलित हो जाये – रूढ़िवादिता और परंपराके प्रति प्रेम डगमगा जाय

अंधे मूढ़ विचार – मूर्खतासे भरे अंधविश्वास

आँखोंका पानी सूखे – आँसू सूख जायें

अचल – अडिग, जो अपनी जगहसे कभी न हिले

शिला – पत्थरका एक बड़ा टुकड़ा

अंतरिक्ष – आकाश

नाशक – नाश कर देनेवाला

तर्जन – फटकार, डाँट-डपट

मँडराना – चक्कर काटना

पोषक – रक्षा करनेवाला, पालनेवाला

मूक – चुप, खामोश

शांति-दंड – शांतिका दंड, क्षमाशीलता, शांतिसे काम लिये जानेका ढंग

प्रलयंकारी आँख – शिवजीका तृतीय नेत्र, जिसके खुलने पर प्रलय हो जाता है

३६. आरज़ू

जाने लगा जो दम भी — जब जान जाने लगी

पृष्ठ १८१

तोड़मोड़ – टेढ़ापन

निवाह – पालन

बदा है होगा अदा – जो होना है सो होगा

दाँतोंमें उँगली दबाना — हैरान होना

आरज़ू – कविका नाम, इच्छा, विनय

श्री